400 अनन्त श्री महामति प्राणनाथजी प्राकट्य महोत्सव सन् 1618-2018

23-10-2018

श्री निजानन्द सम्प्रदाय की अष्ट-प्रहर सेवापूजा एवं नित्यपाठ, उत्सवों में गेय वाणी और ब्रह्ममुनि वाणी

परना परमधाम देख

प्रकाशक :
श्री १०८ श्री प्राणनाथ जी मंदिर ट्रस्ट
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना-488 001
दूरभाष : 07732 - 252046

Scanned by CamScanner

श्री निजानन्द सम्प्रदाय
की
अष्ट-प्रहर सेवापूजा
एवं
नित्यपाठ, उत्सवों में गेय वाणी
और ब्रह्ममुनि वाणी

प्रकाशक :
श्री १०८ श्री प्राणनाथ जी मंदिर ट्रस्ट
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम, पन्ना-488 001
दूरभाष : 07732 - 252046

तेज कुंवरि स्यामा युगल को, पल पल करूं परनाम।।
पल्लवी-प्रणव परनामी पौत्र प. परमानंद जी कटारिया का
श्री जी साहेब के हुजूर में एवं श्री श्री श्री सुंदरसाथ जी
के श्री चरणों में कोटान कोट प्रणाम !

ई. १४.१.२०१८ श्री बुधजी शाके ३४० वि.सं. २०७४ • सर्वाधिकार सुरक्षित • पंचदश संस्करण : २०००
महामति श्री प्राणनाथजी चतुश्शती प्राकट्य महोत्सव 23-10-2018 • न्यौछावर : ₹45/-

न्यौछावर : ₹45/-

सम्प्रदाय-पद्धति

सतगुरु ब्रह्मानंद हैं, सूत्र है अक्षर रूप।
शिखा सदा तिनसे परे, चैतन्य चिद जो अनूप॥ १॥
सेवन है पुरुषोत्तम, गोत्र चिदानन्द जान।
परम किशोरी इष्ट है, पतिव्रता साधन मान॥ २॥
श्री जुगल किशोर को जाप है, मन्त्र तारतम सोए।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोए॥ ३॥
अठोत्तर सौ पख शाखा सही, शाला है गौलोक।
सद्गुरु चरण को क्षेत्र है, जहाँ जाय सब शोक॥ ४॥
सुख विलास माँहें नित्य वृन्दावन, ऋषि महाविष्णु है जोए।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए॥ ५॥
शास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुध जाग्रत को ज्ञान।
कुल मूल हमारे आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान॥ ६॥
दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।
निजानन्द है सम्प्रदाय, ये उत्तर प्रश्न प्रकास॥ ७॥
श्री देवचन्द्रजी निजानन्द, जिन प्रकट करी संप्रदाय एह।
तिनथें हम यह लखीं है, द्वार पावें अब तेह॥ ८॥

Scanned by CamScanner

श्री तारतम

निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सोतो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत॥ १॥

श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार।
विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार॥ २॥

वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार।
निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार ॥ ३॥

अंग उत्कंठा उपजी, मेरे करना एह विचार।
ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार॥ ४॥

इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार।
ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार॥ ५॥

जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाए विकार।
आयो आनंद अखंड घर को, श्री अक्षरातीत भरतार॥ ६॥

Scanned by CamScanner

प्रेम सेवा वाले प्रकट कीधी

प्राणाधार श्री श्री श्री सुन्दरसाथजी, कोटान् कोट प्रणाम! श्री निजानन्द सम्प्रदाय की अष्ट-प्रहर सेवा-पूजा का एकादशम संस्करण आप तक प्रस्तुत करते हुए श्री १०८ श्री प्राणनाथजी मन्दिर ट्रस्ट, श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम अपार हर्ष का अनुभव कर रहा है। श्री धाम धनी के समय से श्री ५ पद्मावतीपुरी में प्रचलित अष्ट-प्रहर की सेवा-पूजा पद्धति (भाग एक) और नित्य पाठ एवं उत्सवों में गेय वाणी और ब्रह्ममुनि वाणी का प्रकाशन (भाग दो के अंतर्गत) किया गया है।

स्वामी लालदास जी कृत श्री बीतक साहेब में श्री पद्मावतीपुरी में धाम धनी की हैयाती में हुई अष्ट-प्रहर की सेवा-पूजा का वर्णन किया गया है, जिसका अनुसरण कर हम सहज ही भवसागर पार कर सकते हैं। आज ३०० वर्षों के उपरान्त भी सेवा की परम्पराओं का वही उज्जवल स्वरूप पन्ना जी में देदीप्यमान है। वाणीमय है परना परमधाम। **बारी वाले गावत, फिरती चौकी पर** वाणी गायन की चौदह बारी, सात बार भोग, सभी सेवाएं अनवरत् चल रही हैं।

श्री धाम धनी के अपने जन-जागरण अभियान के दौरान ठट्टानगर में महंत चिन्तामणी, उनके शिष्यों और अब्बासी बन्दर में भैरों सेठ की रेहेनी (आचरण) में – "**पीना तमाखू छोड़ दो, और मांस मछली सब। सराब और सब कैफ, पर दारा चोरी न कब।।**" का निर्देश देकर अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया था। इसी श्री सुन्दरसाथ संस्कृति से उन्हें मनवांछित फल अल्प समय में ही प्राप्त हो सका। पूज्य श्री सुन्दरसाथ उक्त रेहेनी का पालन करते हैं। आज के परिवेश में श्री महामति के उपर्युक्त निर्देश इतने प्रासंगिक हैं कि समग्र विश्व श्री महामति प्राणनाथ के उपर्युक्त निर्देशों को अमल में लाने के लिए अरबों-खरबों डालर खर्च कर मानव कल्याण में प्रयत्नशील है। ऐसी परिस्थिति में हमारा भी कर्त्तव्य होता है कि हम अपने स्वजनों, पड़ोसियों पर नजर रखें और उन्हें श्री धाम धनी के उपर्युक्त निर्देशों का पालन करने के लिए प्रेरित करें ताकि उनका तन, मन, वाणी, चिन्तन, दृष्टि, भोजन शुद्ध और प्रार्थना फलदायक हो।

Scanned by CamScanner

और वे इस तरह श्री धाम धनी का आशीर्वाद लेकर लोक-परलोक में लाहा ले सकें। श्री महामति का उपर्युक्त निर्देश (रेहेनी) निजानंदी या प्रणामी होने का प्रथम सोपान है।

प्रातः जागने के साथ ही श्री धाम धनी के ज्योतिर्मय, अतुलनीय, अव्यक्त अस्तित्व को स्मृति में लाइए। अक्षरातीत श्री राज जी महाराज के मूल स्वरूप को यथा "**श्री राज श्री ठकुरानी जी प्रथम भोम में विराजमान भए, तहाँ कंचन रंग को सिंहासन**" (देखिए पृष्ठ १०) में ध्यानमग्न होकर नत मस्तक प्रणाम करें। स्नानदि से निवृत्त होकर सांसारिक व्यस्तताओं के कारण उपलब्ध समयानुसार "पतिव्रता पणे सेविए" की भावना, विश्वास और निष्ठा से सेवा-पूजा और नित्यपाठ प्रतिदिन करने से आत्मबल की अभिवृद्धि के साथ मानसिक शांति, मान-सम्मान, यश सहित मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। नित्य पाठ के पश्चात् महाप्रसाद (श्री ५ पद्मावतीपुरी में उपलब्ध) लेकर ही भक्ष्य पदार्थ ग्रहण कर अपने दैनिक कार्यों का शुभारंभ करें।

इस सेवा-पूजा, नित्य पाठ, उत्सवों में गेय वाणी और ब्रह्ममुनि वाणी के प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी चूक होना संभव है, अतएव, शुद्ध पाठ कर इस आशय की जानकारी देकर अनुग्रहित करें। प्राचीन शब्दों के स्थान पर सेवा-पूजा पद्धति में प्रचलित शब्दों का प्रयोग होने से प्रामाणिकता के लिए कृपया मूल वाणी को देखें।

मानसी सेवा पूजा का महान् महत्त्व है। "**उठके नहाइये जमुनाजी**" स्मरण करते समय मन से आप परमधाम की जमुना जी में झीलिये। आपको अष्ट-प्रहर पिया संग परमधाम की लीलाओं में रमण करवाने के लिए ही ब्रह्ममुनियों ने सेवा-पूजा पद्धति की रचना की है।

इस अद्वितीय गोटे के प्रकाशन में श्री भाई सुरेश कटारिया, जयपुर ने भौतिक परिश्रम किया, तदर्थ श्री धाम धनी श्री राजजी महाराज का आशीर्वाद। **प्रेम प्रणाम!**

विनीत

श्री १०८ श्री प्राणनाथजी मंदिर ट्रस्ट

Scanned by CamScanner

॥ श्री प्राणनाथाय नमः ॥

इस रेहेनी (आचरण) को श्री जी साहेब जी के अंतर्ध्यान होने के बाद ब्रह्मसृष्टियों की सम्मति से परमहंस महाराज श्री जुगलदास जी ने श्री निजानंद प्रणामी संप्रदाय के गृहस्थाश्रम वालों एवं संत महात्माओं के कल्याणार्थ निर्धारित की है :

गृहस्थाश्रम वालों की रेहेनी (दिनचर्या-आचरण)

रेहेनी, आचार, रीति, भाँति, दिनचर्या, निजधाम पहुँचने की, पूर्ण ब्रह्म से मिलने की, गृहस्थाश्रम में त्यागवृत्ति प्राप्त करने की लिखी है। जिस पद को त्याग से महात्मा लोग पहुँचते हैं, उस पद को गृहस्थाश्रम द्वारा पहुँचने की और लोक-परलोक सुधारने की तथा श्री श्याम श्यामा जी एवं सद्गुरु सुन्दरसाथ को प्रसन्न करने की लिखी है।

(१) प्रथम तो एक सौ आठ बेर दोनों समय नित्य-प्रति श्री निजनाम का जाप किया करें अथवा एकबीस बेर जाप करें। कोट संकट-कष्ट में अथवा कोटि सुख में जब लग पिंड में प्राण रहें तब लग, श्री निजनाम जपे बिना न रहें।

(२) नित्य प्रति पाँच से लेकर पाँच सौ तक श्रीमुख वाणी का पाठ अवश्य करें अथवा पढ़े-सुने बिना न रहें।

(३) चरणामृत प्रसाद लिए बिना कोई भी वस्तु अथवा अन्न ग्रहण न करें।

(४) एक शहर में सद्गुरु तथा सुन्दरसाथ होवें तो नित्य प्रति और किसी कारणवश न जा सके तो सात दिन के भीतर अवश्य दर्शन के बिना न रहे।

(५) जिस शहर में आप होवे उसमें जो सुन्दरसाथ, साधु

Scanned by CamScanner

महात्मा अभ्यागत आवे तो एक बेर उनको भोजन कराये बिना न रहे और सत्गुरु सुन्दरसाथ का उच्छिष्ट चरणामृत प्रसाद लेवे और चलते बखत जो कुछ बन सके अवश्य देवें।

(६) सत्य रोजगार (व्यापार) या नौकरी से जो कुछ नीतिपूर्वक कमाया होवे, उसका दसवां अंश लेके सद्गुरु सुन्दरसाथ और श्रीपद्मावतीपुरी के विषें खर्च करे एवं तन से, मन से और वचन से सुन्दरसाथ के दिल को न दुखावे। कदाच सुंदरसाथ अपने को कष्ट देवें तो भी सहन कर लेवे।

(७) मद्यपान और मांस भोजन को महा कुकर्म, अपवित्र और पर-स्त्री व्यभिचार को यमराज की फांसी समझे।

(८) चोरी, जुआ को महा वदकर्म समझे और नरक कुंड जाने। जीव हिंसा को अधम पाप समझे और परमधाम से गिर जाना समझे।

(९) अपने यहाँ अनन्योपासना में मूर्ति पूजा निषिद्ध है, अतः उसको न करे। मूर्ति पूजा को परमधाम से गिर जाना समझे।

(१०) रात-दिन चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते-जागते परमात्मा को न भूले और बिना कार्य-कारण की बातें न करे।

(११) चींटी से लेकर ब्रह्माण्ड-पर्यन्त सब पर दया भाव, समदृष्टि राखें और सबको सुखदाई रहें।

(१२) सत्गुरु सुन्दरसाथ से सदैव विनम्रता और आधीनता राखें, कभी अभिमान न दिखावे, गरीबी से वर्ते।

(१३) सत्गुरु को साक्षात् पूर्णानन्द पूर्णब्रह्म का प्रति स्वरूप या प्रतिनिधि समझें और इनके दिल को साक्षात् परमधाम जाने।

Scanned by CamScanner

इनकी प्रसन्नता को धाम का द्वार समझे। सद्गुरु की नजर फिरने को परमधाम से गिरना और नरक में पड़ना समझें एवं सम्पूर्ण आपत्तियों का मूल जाने।

(१४) सद्गुरु की आज्ञा को पूर्णब्रह्म का हुकम समझे और आज्ञा भंग होने को पूर्ण ब्रह्म की आज्ञा भंग जाने। तिस वास्ते जीवन-पर्यन्त सद्गुरु की आज्ञा का पालन करें। ग्रहस्थाश्रम विषें सब आनन्द शादियों में अथवा अन्य कार्यों में भी प्रथम श्री प्राणनाथ सद्गुरु की पूजा करें।

(१५) प्रत्येक मास की दोनों अष्टमी और दोनों चतुर्दशी उपवास करें, कदाच ऐसा न बन सके तो तीनों स्वरूपों के जन्म और अन्तर्ध्यान के दिन तो उपवास अवश्य करें। अष्टमी और चतुर्दशी के दिन सब काम छोड़कर रात्रि को मंदिर आदि स्थान में श्रद्धा माफक जो कुछ हो सके, फल-फूल, पान आदि लेकर सब साथ एकत्रित होवें। खाली हाथ कभी न आवें।

(१६) जो कभी कदाच जीव हिंसा का अपराध हो जावे तो श्री पद्मावतीपुरी व श्री नवतनपुरी परस (दर्शनादि से पवित्र होना) करें और तीन मेला देवे। दो दोनों पुरियों में और एक अपने शहर के सुन्दरसाथ को और सब साथ का चरणामृत प्रसाद उच्छिष्ट लेवे और पाँच वर्ष की अष्टमी और चतुर्दशी निराहार रहे तब उसको चरणामृत प्रसाद देना और साथ में दाखिल करना। जो कोई हिंसा के पाप पर ऊपर कहे माफक किए बिना चरणामृत देवेगा और प्रणाम करेगा तो उसका चौथा भाग (अंश) उसको करना पड़ेगा और वह सद्गुरु और श्री जी साहेब का अपराधी है।

Scanned by CamScanner

(१७) जो मदिरा, मांस, व्यभिचार का अपराध करे तो श्री पद्मावतीपुरी विषे एक मेला देवे और एक निज स्थान के साथियों को देवे। एक वर्ष–पर्यन्त अष्टमी और चतुर्दशी निराहार रहे तब वह पवित्र होवे। ए पूर्वोक्त काम किए बिना जो कोई उसको चरणामृत प्रसाद देवेगा तो चौथा भाग (अंश) उसको करना पड़ेगा, वह सद्गुरु साहेब का गुन्हेगार है।

(१८) पूर्ण ब्रह्म राजश्यामा जी को छोड़ कर अन्य देव की– महाविष्णु आदि तैंतीस कोटि देवता और इनकी प्रतिमाओं को न पूजे। यदि जो पूजा करेगा तो प्रथम चालीस रोज में दस हजार निजनाम का जाप करे और उतने दिन साथ फलाहार के व्रत करे। जमीन पर सोवे, पीछे एक मेला देवे और सकल साथ का चरणामृत प्रसाद उच्छिष्ट ले तब पवित्र होवे। जो कोई पूर्वोक्त कार्य किये बिना चरणामृत प्रसाद देवेगा, वह सद्गुरु और परमात्मा का गुन्हेगार है।

(१९) जो कोई अष्टमी और चतुर्दशी विषे आलस्यवश अनुपस्थित रहे तो उतने ही सेर भोग चढ़ावे तब प्रसाद पाए। जिस अपराध का जो दण्ड लिखा है, उसी प्रकार करने से पवित्र होगा।

(२०) इस उपरान्त सद्गुरु और सुन्दरसाथ का अखत्यार है कि वह बिना दण्ड व प्रायश्चित के भी जिसका अपराध दण्ड माफ करे तो माफ हो जावेगा। ◆

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं न दुखावे किन।।

अनुक्रमणिका सुधार

पद	पृष्ठ
विलाप करे है : ओहि ओहि करती फिरों	176
आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण	184
चारों मंदिरों की प्रार्थना	185

Scanned by CamScanner

संत महात्माओं की रेहेनी (दिनचर्या)

सीढ़ी निजधाम पहुँचने की और अक्षरातीत धनी से मिलने की और परमहंस होने की एवं सद्गुरु पूर्णानन्द के वश करने की लिखी है :

(१) वह यह है कि, आठ प्रहर चौसठ घड़ी सिवा श्री मुखवाणी और प्रेमवाणी के न बोले और बात दुनियां से न करे। कदाच साथ आवश्यकता और विवशता के बोलना ही पड़े तो फिर उसका प्रायश्चित पश्चाताप करे।

(२) आँखों से सिवा श्री राजश्यामा जी और निजधाम के तथा सद्गुरु के अथवा विदेही परमहंसों के और सिवा एक परमात्मा के और किसी को न देखे। इस पर साथ आवश्यकता देखे तो उसका प्रायश्चित पश्चाताप करे।

(३) नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन नित्य-प्रति आनंद और खुशी के साथ न खावे और न उसकी तरफ कामना लावे और न कभी उसके वास्ते उपाय करे। बल्कि अनायास बिना श्रम आ जावे तो साथ अरुचि अनिच्छा के खावे और रुचि हमेशा रूखे टुकड़े पर रखे और जो कुछ अनायास परमात्मा पहुँचा देवें, उसे कबूल करे और उसी का सूक्ष्म आहार करे।

(४) अपने मकान से चल करके कहीं न जावे; कदाच कारण कार्य के लिए जाना पड़े तो कार्य सिद्ध भए पीछे तत्काल स्थान में आ जावें।

(५) सिवा परमहंस प्रेमी के अतिरिक्त और किसी नर नारी

के साथ खड़ा न होवे और न बात करे। तिस पर भी आवश्यकता के साथ जाना पड़े तो उसके बाद उसका प्रायश्चित करें।

(६) सदा आकाश वृत्ति और भ्रमर वृत्ति राखे, परन्तु न तो आकाश वृत्ति से बंधे और न भ्रमर वृत्ति से बंधे, किन्तु धनी की मरजी से बंधे। जो कुछ उसकी इच्छा हो उस पर सन्तोष करे।

(७) सत्गुरु के स्वरूप को साक्षात् श्रीप्राणनाथ जाने। भिन्न भेद आत्मा से उड़ा देवे। तन मन धन निछावर करके मनसा वाचा कर्म से माने और सद्गुरु की सेवाओं से साक्षात् मुक्ति जाने। अहर्निश तन मन धन और अपने को हमेशा सेवा में राखे। उनकी अप्रसन्नता को विनाश का मूल जाने। तिनसे अनेक प्रयत्न करके सद्गुरु को प्रसन्न करे।

(८) रात-दिन लिखने में, पढ़ने में, सीखने में, नाम सुमरन की रट लगावे।

(९) आपुस में मूल घर की पेहेचान राखे और आप साम-सामा (सामनेवा अभिमुख) श्री प्राणनाथ जी को देखे कि श्री प्राणनाथजी हमारे कारण कैसो स्वरूप धरके आये हैं। ये सुन्दर और नश्वर रूप धरके बुलाते हैं। अतः परस्पर प्रेम के साथ जाग्रत होना चाहिए। तन से, वचन से अपने वशभर सुन्दरसाथ का दिल न दुखाना चाहिए।

(१०) जो आपस में मेल, प्रेम व्यवहार रखता है उस पर सद्गुरु का प्यार है, जो कोई जान बूझ कर आपुस में दुख देवेगा वह अवश्य सद्गुरु का और परमात्मा का अपराधी है और नरक में जावेगा।

इति श्री परमहंस जुगलदासजी कृत संतों की दिनचर्या

Scanned by CamScanner

जो प्रदक्षिणा निजधाम की, सातों सरूप श्री राज।
सो सारे परना मिने, वास्ते सैंयन के सुख काज॥

श्री ५ पद्मावतीपुरी की संक्षिप्त महिमा

अनन्त श्री महामति प्राणनाथजी श्री गुम्मटजी में अन्तर्ध्यानस्थ अवस्था में विराजमान हैं :

- **श्री धनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।** ये पाँचों शक्तियाँ श्री गुम्मटजी में विराजमान हैं। श्री पंजे साहिब की प्रतिष्ठा श्री धाम धनी ने श्री गुम्मट जी में की है।
- श्री बाईजू राज जी, श्री लालदास महाराज, श्री केशवदास महाराज सहित सहस्त्रों ब्रह्ममुनि यहीं ब्रह्मलीन हुये।
- श्री महामति प्राणनाथ ने स्वयं सर्वप्रथम धर्म ध्वज श्री ५ पद्मावतीपुरी में विक्रम सम्वत् १७४० में स्थापित किया।
- श्री बंगलाजी मंदिर में श्री महामति प्राणनाथ के अन्तर्ध्यान के ठीक पश्चात् उनकी ही आसन्नी पर श्री मुखवाणी को पधरवाकर अष्ट प्रहर की सेवा-पूजा प्रारंभ की गई।
- श्री महामति के साथ श्री जयंती काका श्री सद्गुरु देवचन्द्रजी महाराज की गादी अपने साथ लाये थे, उसी गादी का श्री सद्गुरु महाराज का एकमात्र मंदिर प्रणामी आलम में केवल श्री पन्नाजी में है।
- श्री बाईजू राज जी का एकमात्र मंदिर प्रणामी आलम में केवल श्री पन्ना जी में है।
- श्री कुलजम सरूप के १४ ग्रन्थों में से (१) कीरंतन की अधिकांश वाणी (२) खुलासा (३) खिलवत (४) परिक्रमा (५) सागर (६) सिनगार (७) सिन्धी (८) मारफत सागर (९) कयामतनामा छोटा और कयामतनामा बड़ा श्री ५ पद्मावतीपुरी में ही श्री महामति प्राणनाथ जी के श्रीमुख से प्रकट हुए। उस समय चित्रकूट पन्ना राज्य में था।
- श्री केशवदास महाराज ने यहीं श्री कुलजम सरूप साहेब का संकलन किया, जिसके दर्शन श्री गुम्मट जी में उपलब्ध हैं।

Scanned by CamScanner

- श्री महामति के जोश से श्री लालदास महाराज ने श्री बीतक साहेब (जीवन दर्शन) की रचना यहीं की। इसके साथ ही वृतांत मुक्तावली, बख्सी हंसराज की बीतक सहित ब्रह्ममुनि और अमूल्य परनामी साहित्य की रचना यहीं हुई।
- श्री गुम्मट जी का निर्माण धामधनी की देख-रेख में हुआ। श्री गुम्मट जी के सामने कंगूरी दीवाल में फारसी में अंकित है— "बृज, रास, जागनी और नौतनपुरी लीला ये सब परना में हैं" अतएव, यह स्थान सर्वोपरि है।
- श्री धाम धनी ने जागनी अर्थात् धर्म प्रचार-प्रसार का केन्द्र श्री ५ पद्मावतीपुरी को बनाया। श्री महाराजा छत्रसाल जी ने श्री कुलजम स्वरूप साहेब द्वारा यहीं से जागनी का प्रसार किया। उन्होंने श्री केशरबाई को श्री ५ नवतनपुरी, श्री गोवर्धन भट्ट को श्री ५ महामंगलपुरी, भैय्या सीताराम को पंजाब, श्री सोमजी भाई को खंभात गुजरात, श्री मुकुन्द दास महाराज को राजस्थान व अवध क्षेत्र और अनेक गणमान्य ब्रह्ममुनियों को नेपाल, बिहार, उत्तर भारत की ओर जागनी-कार्यों हेतु भेजा। इसीलिये आज भी इन स्थानों के महंतों को मान्यता लेने के लिए श्री ५ पद्मावतीपुरी से चादर भेंट की जाती है।

श्री ५ पद्मावतीपुरी परमधाम का मुख्य द्वार है, जो भी श्री सुन्दरसाथ अपना नश्वर शरीर त्याग कर संसार सागर से परमधाम गमन करती है, वे सभी श्री महामति श्री प्राणनाथजी के हृदय धाम अर्थात् श्री गुम्मट जी में एकत्रित होकर ही निजधाम में प्रविष्ट होंगे, यथा श्री मुखवाणी कयामतनामा की चौपाई है :

जो कदी रूह आगे चली, जिमी बैठी इन जिमी माहें।
पांचों पोहोंचे पांच में, रूह अपनी असल छोड़त नाहें॥

इसीलिए पन्नाजी में स्थित समाधि-स्थल में फूल (अवशेष) सिराने की परम्परा है। **प्रणाम!**

विनीत :

कुल भूषण शर्मा

Scanned by CamScanner

मुक्तिपीठ श्री ५ पद्मावती पुरी धाम - पन्ना

हे मुक्तिपीठ, तेरे गौरव गरिमा के गीत,
गूँजे अखिल भूतल पे ऐसी मति कर दे।
पावनतम रेणु परस, अघनाशन तव पाके दरस,
जाग उठे जन-जन मन ऐसी रति भर दे॥

अनुक्रमणिका

सम्प्रदाय-पद्धति ii
श्री तारतम iii
प्रकाशकीय iv
रेहेनी गृहस्थाश्रम वालों की एवं संत महात्माओं की vi
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम की संक्षिप्त महिमा xii

अष्ट प्रहर सेवा पूजा पद्धति
भाग - एक

क्र. पद पृष्ठ
१. प्रभाती (कोई एक-दो गावें)
१. विजियाभिनन्द वेद बताया.......... 1
२. पिया विनती कैसे करूं.......... 2
३. जोवन गरभ ना कीजिए.......... 3
४. उठि प्रभात निरखिए.......... 4
५. प्रात भयो अब जागिए 4
६. प्रात उठी महाराज ने.......... 5
२. उत्थापन (आह्वान) : आवोजी वाला म्हारे घेर.......... 5
३. दन्त धावनी : रैनकी उनीदी श्यामा पिऊ पासे आइयां...6
४. मंगल आरती : सुख को निधान जय जय.......... 7
आनन्द मंगल: आनन्द मंगल श्री धाम धनी जू की जय..7
५. परिक्रमा :-
१. शुक्रवार : प्रथम भोम शोभा अति भारी.......... 7
२. शनिवार : मूल स्वरूप किशोर किशोरी.......... 8
३. रविवार : युगल स्वरूप रूप छवि छाजे.......... 8
४. सोमवार : पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद रूप.......... 8

Scanned by CamScanner

५. मंगलवार : धाम धनी श्री कृष्ण हमारे............ 9
६. बुधवार : जै जै परम सुभग आनन्द गुण गाइए.... 9
७. बृहस्पतिवार : धाम श्याम श्यामाजी संग प्यारी.. 10
६. प्रात: काल का स्वरूप – श्री राज श्री ठकुरानी जी.. 10
७. भोग (कोई एक गावें) :-
१. बाईं आँख मेरी बेरी बेर फरके..................... 11
२. प्यारी प्रेम लुभानी.................................. 11
३. श्री जू छत्रसाल के आए.............................. 12
४. जेंवन आए श्री राज, महाराज भवन में........... 13
५. नगन जड़ित चौकी पर दोऊ........................ 14
६. कृपा निध सुन्दरवर स्यामा (देखिए पृष्ठ 68 पर)
७. ॥ आरोगावनी ॥ : केशरबाई के मोहोल पधारे.... 14
८. आचवन : आचवन कीजे कृपा निधान............... 14
९. झीलना : मारा वालाजी चलो जमुना जल झीलिए... 15
१०. चन्दन चढ़ावनी : चलो सखी श्री सुन्दरवर जी ने.... 16
११. मंगलाचरण : ब्रह्मसृष्टि लीजियो........................ 17
१२. धाम बरनन : अब आओ रे इस्क भानूं हाम.......... 19
१३. भोग प्रात:काल :- १. तीजी भोम की जो पड़साल.. 26
२. दाहिनी तरफ दूजा जो मंदिर........................ 28
१४. स्वरूप बड़ा : श्री जी साहेब जी को स्वरूप.......... 29
१५. बड़ी अरजी : सुन्दरसाथ जी ! याद कीजिए.......... 36
१६. छोटी अरजी : निस दिन ग्रहिए प्रेम सों............... 40
१७. मैं जो आई ब्याहन दुलहे को : आई आगम बानी...... 42
१८. चौदश और अमावस्या को श्री गुम्मट जी में और बदी चौथ और सुदी अष्टमी को श्री बाई जू राज मंदिर में झीलना :-

अणी हांरे झीलन रंग सोहांमणां रे.................... 43

१९. सिनगार आरती :- १. सांभल सैयर मारी बात...... 45

२. आरती करूं रे श्री जीवन मेहेराज 46

२०. बाल भोग : आवोजी मनमोहन प्यारे................. 47

२१. आरोगावनी : आरोग्या रस रूप जुगल धनी......... 47

२२. दूसरे पहर का राजभोग : सैयां केतिक बन में जावें 48

२३. बीड़ी (आचवन) : पिया बीड़ी लई जिन हाथ सों 50

२४. मध्यान्ह / रात्रि की शयन आरती :

आरती करूं सुन्दर बालाजी नी केरी................. 50

२५. पौढ़ावनी दिन की : सिनगार करें देहेलान में......... 51

२६. दोपहर के बाद सखियों का वन में खेलने जाना :

सैयां बैठी जुदे जुदे टोलें.............................. 51

२७. चौथे पहर का उठापन : सब सैयां पहोर पीछल...... 51

२८. संध्या रामतें :- १. एक चित्रामन दिवालें वन....... 52

२. एक अंग अभिलाषी............. 53

२९. संध्या वंदना : वन्दौ सतगुरु चरण को................ 55

३०. झीलना संध्या समय का : श्री जमुना जी के घाट में 56

३१. गौरी :-

१. खेलें श्री युगल किसोर वन में...................... 56

२. कृष्ण नहीं अवतारी साधो.......................... 57

३. क्यों ठाढ़ी नन्द पौरी ग्वालिन...................... 58

४. आवत धेनु चराये वन से.......................... 59

५. जाऊँ कहाँ महाराज शरण तजि.................... 59

६. मुरली कौन बजावे द्वारे मेरे....................... 60

७. श्री प्राणनाथ मन भाये.............................. 60

Scanned by CamScanner

८. श्री छत्रसाल जी ने वाना बांधे...................... 60
९. काहे न मंगल गावे जशोदा मैया.................. 61
१० नाम माला उर धारो................................ 61
११. वंशी धुन प्राण हरे................................. 62
१२. पेहेले आप पेहेचानो रे साधो (वाणी).......... 62
३२. संध्या स्मरण : संझा सुमिरन आरती.................. 63
३३. आरती वंदना :
१. आरती कीजे श्री जी साहेब जी तुम्हारी.......... 63
२. आरती एही है पुराण पुरुष पर..................... 63
३. आनंद आरती संझा कीजे.......................... 64
४. आरती यह सतगुरु पर कीजे........................ 65
५. आरती युगल चिदानंद केरी........................ 65
६. आनंद आरती संझा कीजे – पहली आरती....... 66
७. आरती अंग चतुर्दश केरी........................... 66
८. आरती कीजे जय जय अन्त न जाको............. 66
३४. सद्गुरु आरती : जय जय सद्गुरु आरती तेरी....... 67
३५. भोग : कृपा निध सुंदरवर स्यामा (वाणी कीरंतन) 68
(अन्य भोग के लिए पृष्ठ ११ से १४ देखिए)
३६. पूर्ण ब्रह्म स्तुति : पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे.............. 69
३७. आरती संध्या : कंचन थाल चहुँ मुख दिवला....... 69
(परिक्रमा : दिनवार देखिए पृष्ठ ७–१०)
३८. श्री विजियाभिन्द बुधजी की प्रार्थना–स्वरूप चितवनी
१. भई नई रे नवों खंडों आरती......................... 70
२. सरूप सुंदर सनकूल सकोमल...................... 72
३९. निरत : १. (कृष्ण पक्ष) निरत होत चौथी भोम में.. 72
२. (शुक्ल पक्ष) वाला तमे निरत करो...... 76

Scanned by CamScanner

४०. रात्रि शयन आरती : आरती करूं मारा वालाजी ने (पृ.५०)
आरती : नगन जड़ित मुक्ता मन सोहें... 77
४१. परिक्रमा रात्रि : पिया प्यारी के चरित्र बखानो........ 77
४२. संध्या बड़ा परिक्रमा :
१. लीला कहूँ अपने पिया केरी........................ 79
२. रसिया रसिक पिया प्राण हमारे..................... 80
(परिक्रमा : दिनवार, देखिए पृष्ठ ७-१०)
४३. मध्य रात्रि का स्वरूप :
कृष्ण पक्ष – श्री राज श्री ठकुरानी जी................. 81
शुक्ल पक्ष – श्री राज श्री ठकुरानी जी............... 84
४४. भोग : फरतण फेर वाजोटिया (वाणी)............... 87
४५. संध्या अवसर : हुआ संझा को अवसर (कृष्ण पक्ष) 89
हुआ संझा को अवसर (शुक्ल पक्ष) 91
४६. पौढ़ावनी :–
१. रंग परवाली पिया जी को मंदिर (कृष्ण पक्ष).. 92
२. भोम पांचवी आये (कृष्ण पक्ष).................. 93
पौढ़ावनी :
३. मदन मोहन श्याम................................. 94
४. पधारो मेरे बालाजी रंग भरी रैन.................... 94
५. राज के गुण गाऊं.................................. 94
६. सोय रहे श्याम सखियन संग मोहोलन............ 95
७. पियाजी मैं पलंग बिछाऊं राज तुम पौढ़ो.......... 96
८. पौढ़ों श्री राज अवार भई है........................ 96
४७. आनन्द मंगल : सदा आनन्द मंगल में रहिये......... 97
४८. अक्षर को खेल लख्यों जब से........................ 97
४९. कातनी का दृष्टांत..................................... 97

Scanned by CamScanner

भाग - दो

नित्य पाठ एवं उत्सवों में गेय वाणी और ब्रह्ममुनि वाणी

क्र.	पद	पृष्ठ
१.	श्री प्रगट वानी: अब लीला हम जाहेर करें..........	99
२.	श्री कृष्ण भक्ति..........	109
३.	श्री मेहेर सागर : और सागर जो मेहेर का..........	110
४.	श्री मूल मिलावा : इन बिध साथ जी जागिए.......	114
५.	पंच रोसनी प्रकरण :	
	१. चतुर चौकस चेतन अति चोंपसों..........	118
	२. नूर को रूप स्वरूप अनूप है..........	118
	३. हुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले..........	119
	४. नूर नगन चेतन भूखन रचे..........	119
	५. मिली मासूक के मोहोल में माननी..........	120
६.	दया को प्रकरण : अब तो मेरे पिया की	120
७.	विरह प्रकरण..........	123
८.	प्रगटन समारोह : जोगमायानो देह धरीने..........	126
९.	श्री कृष्ण जी के जन्म की बधाई :	
	आज बधाई बृज घर घर..........	127
१०.	बधाई : आवीं श्रीकृष्ण वधामणी रंग राती रे........	128
११.	पारणु : सोनाना मोर झूले नंद किशोर..........	129
१२.	श्री जियावर की बधाई : प्रगटे धनी श्री धाम केसो घर	129
१३.	श्री देवचन्द्र जी की बधाई :-	
	१. आज आनन्द मारे अति घणो रे..........	130
	२. मत्तू मेहता देख हो देवचन्द्र..........	131
	३. सखी तुम गाओ मंगल चार..........	131
१४.	बधाई-राग धन्यासरी : नन्द जू मेरे मन आनन्द भयो	132
१५.	बधाई : हेरी रे हेरी भैया हो हेरी..........	133

[अन्तर्ध्यान वाणी : ओहि ओहि करती फिरों..176]

Scanned by CamScanner

१६. राधाजी के जन्म की बधाई : प्रकट भई शोभा त्रभुवन की.. 133

१७. जन्म बधाई : सकल भुवन की सुन्दरता............. 134

१८. कीर्तन बधाई : आज रावर में जै जै कार............ 134

१९. श्री जी के जन्म के कीर्तन : देखो अद्भुत अविगत की गत..134

२०. गरभा : १. पुरुसोत्तम प्रगटया रे पस्चिम देशमां.... 135

२. सकल कला मुख ता थेइया........... 136

३. बस गई राधा प्यारी मेरे मन........... 137

४. मन मोह्यो ते मुरली वाले हो......... 137

५. वृंदावन वासी रे परणें आवियां........ 138

६. तुम देखो सखी निहार................. 138

७. चलो चलिए सखियो आज........... 140

२१. दानलीला : ठाढ़ी रहे ना अहीर की................. 140

२२. रेखता : हमारे प्राण के प्यारे, पुरी परना बसाया है.. 141

२३. वसंत : १. मन के मोहन ललना.................. 142

२. आज वसंत मनाओ सजनी........... 142

३. सांची कहो मन मोहन मोसें........... 143

२४. फाग : १. धमार (परमा प्रथम).................... 143

२. धमार – गोकुल सकल ग्वालनी...... 145

३. धमार – कुंवर लड़ेती रंग भरी......... 146

४. धमार – धन धन बृज की बृज बधू... 147

५. धमार – तुम लंगर कन्हैया हो 145

६. नारदी : मोहन बांसुरी बजाई 148

७. नारदी : बन बीच बिहारी जिन रार करो 148

९. नारदी : अहे नन्द लाल सखी 148

(एक से लेकर पच्चीस तक)

२५. हिंडोरा : १. हिंडोरा फूलंन को फूलन की डोरी..... 151

२. फूलन को हिंडोरा बनो 152

Scanned by CamScanner

२६. किरंतन : खिन एक लेहू लटक भंजाए 152
२७. किरंतन : राग परज - वारी रे वारी मेरे प्यारे 152
२८. गरभा : गागर उतारो रे वनवारी 153
२९. किरंतन : आतम पिया प्यारे सों बांधो 153
३०. दान : चलो वसिए सखी मेरी निज परना 154
३१. दान : वृन्दावन मोहन दधि लूटी 154
३२. पंचक : कलंगी के परन देख, हीरा तरंग देख (मस्तान) 154
३३. आत्मिक भोग : अक्षरातीत प्राणपति प्यारे 156
३४. **अन्तर्ध्यान वाणी :**
१. सैंया हम धाम चले - जो आओ सो आइयो... 157
२. अब हम धाम चलत हैं (रागश्री).............. 158
३. अब हम चले धाम को (रागश्री).............. 160
४. मेरे मीठे बोले साथ जी.......................... 162
३५. कारी कामरी रे, मोकों प्यारी लागी तूं (रागश्री).... 163
३६. **शब्द अन्तर्ध्यान के (श्री जी साहेब जी) :**
१. मारो राज रसिक चितवन नहियाँ................ 164
२. धनी रंग लागा सोई लागा........................ 165
३. जिन पिया है प्याला प्रेम का..................... 165
४. यह तिथ तीज भए पिऊ न्यारे री................ 165
५. यह तिथ तीज भये पिऊ न्यारे री................ 165
३७. श्री बाई जू राज धामगमन पर : क्यों दियो रे बिछोहा 166
३८. आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण............... 169
३९. अब कहूं रे इस्क की बात............................ 176
४०. १. प्रार्थना श्री गुम्मट जी मंदिर........................ 177
२. प्रार्थना श्री बंगला जी मंदिर........................ 177
३. प्रार्थना श्री सद्गुरु मंदिर............................ 178
४. प्रार्थना श्री महारानी जू मंदिर...................... 178

Scanned by CamScanner

॥ श्री प्राणनाथाय नमः ॥

अष्ट प्रहर पूजा पद्धति

सिजदा

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन॥
इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन।
पल न बालूं निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन॥
वन्दौं सतगुरु चरण को, करूं प्रेम परनाम।
अशुभ हरन मंगल करन, श्री देवचन्द्र जी नाम॥
श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहेराज सुनाम।
तेज कुंवरि श्यामा युगल, पल-पल करूं प्रणाम॥

प्रभाती

विजियाभिनन्द वेद बताया, कलंक सबों दूर कराया, नेह कलंक गाया॥ १॥
तुही बृज रास कृष्ण ब्रह्म जो कहाया, नाम श्री प्राणनाथ राज हमों पाया॥ २॥

न्यौछावर : ₹ 45/-

ब्रह्म सृष्ट कारन जू, खेल यों बनाया,
हरदम लाड़ पालने हमेस संग आया॥ ३॥
सबों को जगाये घेर, परना में लाया,
बांकी जे रहीं तिने हुकम दे पठाया॥ ४॥
इलम पाए चाह करें, चरनन तूं ऊछाया,
चौदह किताब देख तुही लखाया ॥ ५॥
रास व प्रकाश व्रह खटरुति में गाया।
कलस व सनंध कह किरंतन समझाया॥ ६॥
खुलासा है खिलवत, परिकरमा पोहोंचाया,
सागर सिनगार सिंधी, रूबरू बताया॥ ७॥
मारफत कह्या क्यामत, कुलजम रस पाया।
आदि अंत तुहीं तुहीं मेरे जिय आया॥ ८॥
श्री महामति मेहेबूब मेहेर, सबों करें छाया।
कृष्णदास अरस दिल पिऊ को बैठाया॥ १०॥

प्रभाती

पिया विनती कैसे करूं, मति मंद हमारी।
आयस पाऊं तो कहूं, श्री राज तुम्हारी॥ १॥
पिया जो तुम भावे सो करो, देखो बूझ विचारी।
मेरा तो कछू बल नहीं, अवला हो नारी॥ २॥
जो मांग्या सो तुम दिया, दारुण दुख भारी।
अरज करुं तो न बने, बचनन हम हारी॥ ३॥
तुम्हीं लिख्या फुरमान में, कर कौल करारी।
समझ पाछली प्रीत को, सखी काज संभारी॥ ४॥

Scanned by CamScanner

तुमहीं कह्यो मुख आपने, सखियां मोहे प्यारी।
प्यार बड़ों है उनसे, सबथें अधिकारी॥ ५॥
एक बड़ो बल है हमें, तुम हो सुखकारी।
कारज कारन कृपा निधि, सत सुख दातारी॥ ६॥
जान भरोसो तुमरो, दीन्हों उर डारी।
के तारों के वारौ, देखो नेह निहारी॥ ७॥
सुकन पालो पिया आपने, तुम हो हितकारी।
मकुन्द सखी सुख ले मिलो, हंसि जुगल बिहारी॥ ८॥

प्रभाती

जोवन गरभ ना कीजिए, जग जीवन थोरा॥ टेक॥
जैसे जल के बुलबुला, नित उठत घनेरा।
विनसत बार न लाग हीं, जैसे ओस का ओरा॥ १॥
या संसार सराय है, तामें लियो है वसेरा।
भोर भये उठ रिग चले, सूनो कर डेरा॥ २॥
काल कमान लिये फिरे, जग करत अहेरा।
सुर नर मुनि कोई न बचे, ताथें चेत सवेरा॥ ३॥
माल मुलक सुख संपदा, हाथी और घोड़ा।
हुकम हुकूमत, हाकिमी, कछू रहे न तेरा॥ ४॥
ज्यों मधु माखी मधु सीचें, क्रमि क्रमि धन जोरा।
आए बधिक जब ले चले, दृग डार दे फोरा॥ ५॥
जान माल सब पिऊ का, यामें कछू नहीं मेरा।
कहत मकुन्द मति मंद सों, यामें कौन निहोरा॥ ६॥

Scanned by CamScanner

प्रभाती

उठि प्रभात निरखिए, मुख श्री प्राणनाथ प्यारे ॥ टेक॥
सुन्दर विशाल नैन, बोलत अति मधुर बैंन।
चितवत मन मोह लेत, मोहनी सी डारे॥ १॥
कोमल अति अंग विशाल, हाथ पांव कटि रसाल।
अंबुज मुख निरखि दृगन, तन मन धन वारे॥ २॥
मुसकत छवि लसत दसन, सोहत अंग तड़ित वसन।
कलंगी सिर गोस पेंच, वरनत कवि हारे॥ ३॥
वृज और रमाये रास, जागनी को करि प्रकाश।
वय किशोर निरखि युगल, 'ज्ञानदास' धारे॥ ४॥

प्रभाती

प्रात भयो अब जागिये, मारा नाथ बिहारी॥ टेक॥
भोर भयो रजनी गई, देखो नैन निहारी।
झीलन जमुना जल कीजिए, संग प्रीतम प्यारी॥ १॥
अरज करूं कर जोर के, मारा नाथ तिहारी।
भामनी भवन पधारिया, पेहेरी नवरंग सारी॥ २॥
जामा अंग जड़ाव को, सिर पाग समारी।
भूषन अंगों अंग साजिया, लटकन पर वारी॥ ३॥
हरित कमर पटुका बन्यो, शोभे जरद किनारी।
कहत 'गुलाब' इन लाल की, छबि पर बलिहारी॥ ४॥

Scanned by CamScanner

प्रभाती

प्रात उठी महाराज ने, जसोदा जी जगावें।
कान्ह कान्ह मुख टेरती, अंक भरी ने उठावें॥ १॥
उठो लाल सुख सेज थी, उठ दातुन कीजे।
माखन मिश्री प्रीत सों, उठ भोजन कीजे॥ २॥
प्रेमनी माती ग्वालिनी, उठ भेली आवे।
दरशन दीजे लालजी, जेमां बहु सुख पावै॥ ३॥
उठी शेज थी श्यामरो, सहुने दर्शन दीधा।
कंचन झारी जल भरी, उठ दातुन कींधा॥ ४॥
भोजन कीधां श्यामरो, आचव्या गिरधारी।
'मेहेर' सखी दरशन करी, तहाँ जाय बलिहारी॥ ५॥

उठत पीउ पलंग से, बखत अरुण उदे।
सब हजूरी हाजिर रहें, सो सेवा करें ए॥
—श्री लालदास जी कृत बीतक

उत्थापन आह्वान

आवोजी वाला म्हारे घेर, आवोजी वाला। टेक॥
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या॥ १॥
मूने हती नींदरड़ी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोऊं तां पिउजी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते॥ २॥
कलकलीने कहूं छूं तमने, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इन्द्रावती लागे चरणें॥ ३॥

प्रभाती दन्त धावनी

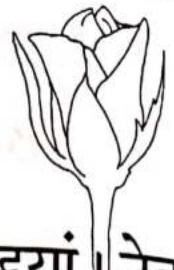

रैनिकी उनीदी श्यामा पिऊ पासे आइयां,
प्रीतम पासे आइयां। टेक॥
नैन अरुण सोहें रति रंग भीने,
पिऊ प्यारी मन्द मन्द मुस्काइयां॥ १॥

अतलस गेंदुवा सेत निहाली, जाड़ो लगे पिया साल ओड़ाइयां, लटपटी पाग पेंच छूटे बंध सोहे, रंग सेज्या दोऊ लाल सोहाइयां॥ २॥

अंग सो अंग जोड़े दोऊ मन भाइयां, अरस परस कर कंठ लपटाइयां, महारंग रस भीने रसिक युगल पिया, निरखि निरखि सखियाँ सुख पाइयां॥ ३॥

चंदन की चौकी डारों बैठो प्यारे अंगना, लवंग की दातौन जल झारी भरि ल्याइयां, श्री इंद्रावती पतिरूप युगल धनी, निज नवरंग निरखि बलि जाइयां॥ ४॥

आरती के पूर्व अक्षत पुष्प चढ़ाने

आरती के बखत में, चादर बिछावत हीरामन।
चावल बधावें श्री बाई जी, सब आरती वाली सैंयन॥
श्री बाई जी करें तिलक, चौड़त है चावल।
राघव रूमाल धरत हैं, करे सेवा अपने बल॥

—श्री बीतक

Scanned by CamScanner

मङ्गल आरती

सुख को निधान, जय जय सुख को निधान,
मंगल आरती सुख को निधान।
उठि बैठे सुख सेज्या श्रीराज,संग अर्द्धांग अली लिए लाज ॥१
रैन जगे रग मग दोऊ नैना, बोलत बोल मधुर मुख बैना।
निरखि निरखि हरखे ब्रह्म सृष्टि,
जुगल पिया जी सों जोड़े दोऊ दृष्टि॥ २ ॥
उठि बैठे दोऊ सेज्या सुखदाई,
आरती साजि श्री इन्द्रावती ल्याई।
आरती वारती सखियाँ सर्वांग, लेत वारणे निज 'नवरङ्ग' ॥ ३ ॥

आनन्द मंगल श्री धाम धनी जू की जय, श्री बाई जू राज जू की जय, श्री महाराजा छत्रसाल जू की जय, श्री सुन्दरसाथ जियावर साहिब जू के चरणार्विन्द में हित चित दीजियो। चरणों बेर-बेर लागिए।

उपरोक्त लिखी आनन्द मंगल प्रत्येक आरती एवं सरूप गायन के पश्चात् अवश्य सामूहिक रूप से बोलें।

शुक्रवार की परिक्रमा

प्रथम भोम शोभा अति भारी, बैठे सिंहासन श्री जुगल बिहारी।
सिंहासन कंचन मणि सोहे, निरखि हरखि सखियां मन मोहे ॥ १
सखियां सर्वे शोभा अति सुन्दर, चौसठ थंभ तकियों के अन्दर।
वस्तर भूषण तेज अति जोर, ता मध्य बैठे श्री युगल किशोर ॥ २
युगल किशोर शोभा किन विध गाइये,
श्री महामति युगल पर वारी वारी जाइए ॥ ३ ॥

Scanned by CamScanner

शनिवार की परिक्रमा

मूल स्वरूप किशोर किशोरी, निरखि सखी सच्चिदानन्द जोरी॥ १॥ भोम तले की निरखि छबि न्यारी, सोहे सिंहासन प्यारो प्यारी॥ २॥ श्वेत सेन्दुर केसर आसमानी, श्याम नीलो पीलो बस्तर जामी॥ ३॥ देखत खेल सन्मुख सखी सारी, निरखि सिनगार शोभा अति भारी॥ ४॥ ब्रह्मानन्द लीला निज न्यारी, निरखि श्रीमहामति 'नवरंग' वारी॥ ५॥

रविवार की परिक्रमा

युगल स्वरूप रूप छवि छाजे, सिंहासन के ऊपर विराजे॥ १
नाचत देत फिर आवत फेरी, हँसि हँसि लालन मुख तन हेरी॥ २
गावत गीत बजावत बाजे, जमुना त्रट पंखी धुन गाजे॥ ३
फूले फूल फूल लइ आवें, गुहि गुहि हार पिया को पहिरावें॥ ४
देत परिक्रमा कर्म सब छूटे, यह सुख 'पंचम' निशदिन लूटे॥ ५

सोमवार की परिक्रमा

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द रूप, संग श्यामाजी सोहे अनूप॥ १॥ चारों चरण सुन्दर सुख दाई, भूषण की शोभा मुख वरनी न जाई॥ २॥ झांझरी घूंघरी कांबी कड़ला अलेखे, अनवट बिछुवा श्रीश्यामाजी विशेखें॥ ३॥ नीलो है चरणियाँ केशरी इजार, श्वेत दामन झांई करे झलकार॥ ४॥ चोली श्याम जड़ाव साड़ी सेन्दुरिया रंग राजे, हैयड़े पर हार शोभा अधिक विराजे॥ ५॥ जरी जामा श्वेत जड़ाव अङ्ग सोहे, नीलो पीलो

Scanned by CamScanner

पटुका देखत मन मोहे ॥ ६ ॥ जामे पर चादर रंग आसमानी,
छेड़े किनार बेली जाय न वखानी ॥ ७ जरी पाग सेन्दुरिया जग
मग जोत,राखड़ी कलंगी कही जाय न उद्योत ॥ ८ ॥ शब्दातीत
पिया शोभा है अपार,श्री महामति अंगना जाय बलिहार ॥ ९ ॥

मंगलवार की परिक्रमा

धाम धनी श्री कृष्ण हमारे, परम निधान परम रूप प्यारे ॥ १
महाराज मंगल रूप राजे,श्याम श्यामाजी दोऊ अनूप विराजे ॥२
पूरण अक्षर पद से न्यारे, सोई जियावर धनीजी हमारे ॥ ३
प्रगटे पिया निज अद्भुत सोई, उपमा पार पावे नहिं कोई ॥ ४
परमानन्द जोड़ी सुखकारी, अंगना पिया पर वारी वारी वारी ॥ ५

बुधवार की परिक्रमा

जै जै परम सुभग आनन्द गुण गाइये,
नवल किशोर निरख सुख पाइये॥ १ ॥
धाम श्याम जिया मंगलकारी,
सङ्ग श्यामा जी दुलहिन पिया प्यारी॥ २ ॥
कुँज निकुंज मध्य क्रीड़त कोहै,
ललित मनोहर सुन्दर सोहै॥ ३ ॥
करत केलि यमुना त्रट नेरे,
परम विचित्र जियावर मेरे॥ ४ ॥
निज है स्वरूप रूप पिया राजे,
श्री महामति मदन कोटि छवि लाजे॥ ५ ॥

Scanned by CamScanner

बृहस्पतिवार की परिक्रमा

धाम श्याम श्यामाजी संग प्यारी,ब्रह्मानन्द लीला निज न्यारी ॥१
सात घाट जमुना जल राजे, झीलत युगल किशोर विराजे ॥ २
सघन कुंज मध्य चात्रिक बोले, क्रीड़त लाल लाड़िली डोले ॥ ३
ताल पाल मध्य मोहोल सुहाए, खेलन प्यारो प्यारी आए ॥ ४
लीला नित्य बिहार स्वरूप पर,भई श्री महामति कुरवान निरखि छवि ॥

प्रात:काल का स्वरूप

श्रीराज श्री ठकुरानीजी प्रथम भोम में बिराजमान भए, तहां कंचन रंग को सिंहासन, तिनके छ: पाए छ: डांडे। एक एक डांडे में दस-दस रंग जवेरों के झलकत हैं। दो छत्री दो स्वरूपों के ऊपर, दो फूल लाल माणिक के, कमल कैसी, नीलवी की पांखड़ी। छत्री के चारों तरफों जवेरों की झालर। छ: डाडों पर छ: कलश। दो कलश दोऊ छत्रियों के ऊपर, ये आठों कलश हेम के उतरती कांगरी। पसमी बिछौना, एक गादी, दोय चाकले,पांच तकिये। श्री राज श्री ठकुराणीजी दोऊ चाकले पर विराजमान भये, कई चाकले चित्रकारी, तापर बैठे श्री युगल बिहारी। दोऊ स्वरूप चित्त में लीजे। फेर-फेर आतम को दीजे। आत्मा से न्यारे न कीजे अध छिन। फेर-फेर कीजे दरशन। पहिले अंगुरी नख चरन। मस्तकलों कीजे वर्णन। सब अंग बस्तर भूषण, शोभा जाने आत्मा के लगन, सुन्दर श्री ठकुराणीजी को शृंगार, सेंदुरिया रङ्ग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाहि को चरणियां। श्री राजजी को सिनगार, सेंदुरिया रङ्ग

जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौरी। नीलो न पीलो बीच के रङ्ग को पटुका, केशरिया रङ्ग जड़ाव की इजार, श्वेत रङ्ग जड़ाव को जामा, श्री युगल स्वरूप को मूलबागो, अद्वैत की लाठी हाथ में लेके, सब साथ को प्रणाम – सुन्दरसाथ को प्रणाम।

भोग

बांई आंख मेरी बेर बेर फरके, जिय हरषे मारो भारी।
अनइच्छित कलियुग निकंदन, आए श्री नित्य विहारी॥ १॥
कलस पांवड़ो ले आरती करों, चरण पखालों ले झारी।
तन मन जीव निछावर कीन्हों, पूरी है इच्छा हमारी॥ २॥
बहु पकवान मिठाई मेवा, भांति अलेखें अथाने।
बनी है रसोई पिया खटरस रुचिके, थाल संजोय सखी ल्याई॥ ३॥
भोग लग्यो श्री धाम धनी जी को, हाथ अबीर धुवाऊं।
बैठारूं सुंदर सेज्या पर, कर कर बीड़ी आरोगाऊं॥ ४॥
राखो मैं रसिक रमाय आप गृह, अनतें जान न देऊं।
छत्रसाल जी के पियाजी सुंदर वर, अनेक भांत सुख लेऊं॥५॥

भोग

प्यारी प्रेम लुभानी, प्यारी प्रेम लुभानी, पियाजी परम सुख दीजिए।
सुन्दर सेज्या समारूं, हेम जड़ित नंग नूर भरी॥ १॥
तापर पिया जी बैठारूं, श्री श्यामाजी संग सुहाइये।
आज्ञा जो मैं पाऊँ, तो भोजन विविध बनाइये॥ २॥
रुचि थाल सम्हारूं, मूंग जो भात फुलकियां।
घृत पाक मिठाई, खुर्मा जलेबी लाडुवा॥ ३॥

Scanned by CamScanner

दूध दधिया ले आईं, शाक अनेक कटोरियां।
लाईं सकल सामा जें, आन धरे पिया पावहीं॥ ४॥
पावें पिया प्यारी, जेवैं सच्चिदानंद, गारी सबे सखी गांवही।
श्री जमुना जल अचवन, पान सुगन्ध विशेखियां॥ ५॥
लाड़ बाई की सेज्या, आज राज इतहीं रहो।
चांपों चरण पिया के, करसों विजन डोलाइए॥ ६॥
गूथों हार फूलन के, सो पिया को पहिराइए।
हँस बोले हैं प्रीतम, नैन सों सैन मिलाइए॥ ७॥
उनको सुख दीजें, और सवै सुख लीजिये।
सुख सेज्या बखानो, अक्षर ब्रह्म जाने नहीं॥ ८॥
ब्रह्मा विष्णु महेश, नारद शारद इतहीं रहें।
माया उरझानी, सुर नर मुनि जेते भये॥ ९॥
काहू प्रेम न जान्यो, बसत गोपियन के हिये।
सतगुरु इत आये, श्री तारतम लिये हाथ में॥ १०॥
खोलि पार लखाये, श्री ब्रह्म सृष्टि के कारणे।
जागे सोई पावे, मकुन्द वंश सुख पाइये॥ ११॥

भोग

श्री जू छत्रसाल के आये, श्री बाई जी संग सोहाये।
सखी जान साकुण्डल प्यारी, जाके आये श्री नित्य बिहारी॥ १॥
अपने घर ले पधराये, बहु भांतन कलश धराये।
सिर सरस पावड़े डारे, जब भीतर भवन पधारे॥ २॥
जल जुगल चरन रस धोये, तहां मोतिन चौक संजोये।
ले जुगल तखत बैठाये, बस्तर भूषण पेहेराये॥ ३॥

Scanned by CamScanner

कर प्रणाम निछावर प्यारी, ले आरती अगर उतारी।
षटरस बहु भांत बनाये, नाना विध के भोग लगाये॥ ४॥
रस मूंग भात घृत आने, पय साकर दही अथाने।
बरे माड़े बरी मुगौरी, कढ़ी पापर विविध कचौरी॥ ५॥
पकवान रसाज बनाई, बहु भांतन मधुर मिठाई।
कै विध विध के साक समारे, जल लेत बीच में प्यारे॥ ६॥
पिया जेवत अति रुचि मानी, पीछे पापड़ बहुत बखानी।
आरोग पलंग पिऊ आए। साकुण्डल हाथ धुवाए॥ ७॥
कर बीड़ी करन खबाये, पग बार बार सिर नाये।
अंग जान सनाथन कीन्हों, निज राज आपनो दीन्हों॥ ८॥

भोग

जेंवन आए श्री राज, महाराज भवन में॥ टेक॥
दीन दयाल अचल सुख दायक, ब्रह्म सृष्टि सिरताज।
नाम श्री महामति आए पद्मावती, सखियां जगावन काज॥ १॥
ले सिर पाग पांवड़ो कींहों, छकि रहे सकल समाज।
कनक सिंहासन आसन ऊपर, वसन भूषन सब साज॥ २॥
तन मन धन ले न्योछावर कीन्हों, लौकिक लोपानो लाज।
दूध दधि और माखन मिश्री, वन फल अनेक इलाज॥ ३॥
बहु पकवान मिठाई मेवा, साक पाक घृत साज।
जेवत जुगल जोड़ी सुख पावत, साहेब गरीब निवाज॥ ४॥
अचवन करि मुख पान सुभाषित, सतगुरु सत्य जहाज।
मोहनदास आश पिया पूरन, धन धन इत उत आज॥ ५॥

Scanned by CamScanner

भोग

नगन जड़ित चौकी पर दोऊ, श्री जुगल स्वरूप विराजे।
धरो है थाल आगे हित चितसों, खट रस व्यंजन साजे॥ १॥
जेंवत जुगल जोड़ी सुख पावत, अचवाऊँ जलझारी।
लेत पान पावत हित चित सों, हिरदे सों हितकारी ॥ २॥
कोटि जतन ब्रह्मा करि थाके, सो जूठन नहिं पाये।
सो जूठन धनी सहज कृपा सों, पंचम निशदिन पाये॥ ३॥

(भोग : कृपा निध सुंदरवर स्यामा – देखिए पृष्ठ 68 पर)

॥ आरोगावनी ॥

केशरबाई के मोहोल पधारे, चरण पखारों ले झारी।
नूरकी चौकी डारी मन्दिर में, तापर श्यामावर आये॥ १॥
लाड़बाईजी थाल ले आई, पकवान बहुत बनाई।
जेंवत जुगल जोड़ी सुख पावत, श्रीइन्द्रावती चँवर डोलाई॥ २
बाई साकुण्डल हाथ धुवाये, सखियन पान खवाये॥
उठिके जियावर आये तखत पर, श्रीश्यामाजी संग सुहाये॥ ३
कृपा सिंधु दया करी मुझ पर, प्राणनाथ पति पाये।
परमहंस परनाम करत हैं, सब साथ को सीस नमाये॥ ४॥

आचवन

आचवन कीजे कृपा निधान, सुन्दर आचवन कीजे परम निधान। एक सखी जमुना जल ल्याई, दूजी लाई खिरिचा पान॥ १॥ काथो चूना पान सुपारी लवंग इलायची, बीड़ी वाली चतुर सुजान। आप पाय सखियन को दीजे, श्री छत्रशाल कुरबान॥ सुन्दर आचवन कीजे कृपा निधान।

Scanned by CamScanner

झीलना

मारा वालाजी चलो जमुना जल झीलिए॥ टेक॥
पाट घाट की देहुरी में जहां रामत कीजे राज।
रतन जड़ित के मोहोल में, कीजे रंग विलास॥ १॥
आप अकेले हूजिए, संग स्यामाजी साथ।
हम रूहें बारे हजार मिलके, झीलें तुम्हारे पास॥ २॥
कुंज भवन की रेत में, पिया चलो दौड़िये जाए।
जो जाको छुई लेत है, सो ताके हाथ विकाए॥ ३॥
पीताम्बर कटि काछनी काछे, सीस मुकुट लटकाये।
हेम कसब की ओढ़नी ओढ़ें, झांझरी घुंघरी घमकाये॥ ४॥
फूल बाग और नूरबाग में, चलो पिया बैठिये जाय।
लेहरें आवे सुगंध की, वास रही महकाय॥ ५॥
बड़ावन और लाल चबूतरा, जहाँ बैठा साथ भराय।
पशु पक्षी मुजरे को आवें, नए नए खेल दिखाय॥ ६॥
रसिक राज स्यामाजी के आगे, सखियां निरत कराए।
जापर चितवत हेत सों, देखत नयन सिराए॥ ७॥
हंसिके राज खुशी भए, पहिराए बनमाल।
सखी साकुंडल अरज करत हैं, बलि बलि राजकुमार॥ ८॥

तुम दुख पाया मोहे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक॥

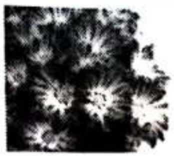

चन्दन चढ़ावनी

चलो सखी श्री सुन्दरवर जी ने निरखिये,
श्री स्यामाजी ने जोई जोई मन हरखिये।
श्री श्यामाजी नो अंग हो सुन्दरसाथ,
निरखि हरखि उमंग न मात॥ १॥
सुन्दरसाथ बैठो घेरा घेरी, परिक्रमा तो दीजे फेरि फेरि।
दीपक रंग रे सिंहासन,छत्री तो डाड़े झालर शोभा अतिघन॥
तापर कंचन कलश जो होई, झलहल जोति करी रहे सोई।
ये रे सिंहासन जोति न मावें,
सखियां तो सन्मुख वाणी गावें॥ ३॥
श्री मंडल नवरंग बाई जी ने हाथ,
बेनबाई बेन बजावे तिन साथ।
झरमरबाई झरमरिया जो बजावें,
तानबाई ताननियां जो मिलावें॥ ४॥
सेनबाई स्वर पुरावे तिन संग, मन में तो धरें अति उछरंग।
ये उछरंग कह्यो न जावें, सखियां तो प्रेम सहित वाणी गावें॥५
श्री चन्दन पुष्प बहु विधि राजे,
सुगन्ध सर्वे मारा बालाजीने छाजे।

श्री पियाजी ने पूजन इन विध कीजे,
फेर-फेर मूल स्वरूप चित में लीजे॥ ६॥
जो कोई वासना इन घर, मूल स्वरूप थें न काढ़े नजर।
नहीं कोई सुख इन समान, अंगना तो कोटि बेर कुरवान॥ ७॥

मङ्गलाचरण

ब्रह्मसृष्टि लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन।
सखी मेरी जो है मूल वतन, ब्रह्मसृष्टि लीजियो ॥ टेक ॥ १ ॥
सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें
रहित ॥ २ ॥ मगज वेद कतेब के, बंधे हुते जो वचन।
आद करके अबलों, सखी कबहूं ना खोले किन ॥ ३ ॥
सुपन बुध बैकुंठ लों, या निरंजन निराकार। सो
क्यों सुन्य को उलंघ के, सखी मेरी क्यों कर लेवे पार ॥ ४ ॥
सुपन बुध अटकल सों, वेद कतेब खोजे जिन।
मगज न पाया माहें का, बांधे माएने बारे तिन ॥ ५ ॥
साधू बोले इन जुबां, गावें सब्दातीत बेहद।
पर कहा करे बुध मोह की, आगे न चले सबद ॥ ६ ॥
पांच तत्व मोह अहंकार, चौदे लोक त्रैगुन।
ए सुन्य द्वैत जो ले खड़ी, निराकार निरंजन ॥ ७ ॥
प्रकृति महाप्रले होवहीं, सब तत्व गुन निरगुन।
द्वैत उड़े कछू ना रहें, निराकार निरंजन सुंन ॥ ८ ॥
बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत।
सो जागृत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत ॥ ९ ॥
पेगंमर या तीर्थंकर, कई हुए अवतार।
किन ब्रोध न मेट्यो विस्व को, किए नहीं निरविकार ॥ १० ॥

Scanned by CamScanner

ऐते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुधजी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन॥ ११॥
अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाय के, देसी सुख नेहेचल॥ १२॥
सो मगज माएने हुकमें, खोले हम सैयन।
सो कलाम जो हक के, सुख होसी उमत सबन॥ १३॥
रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्ट ब्रह्म॥ १४॥
ब्रह्मसृष्ट जाहेर करूं, करसी लीला रोसन।
अखंड धनी इत आए के, किया जाहेर मूल वतन॥ १५॥
तीन ब्रह्मांड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्ट के कारन।
आप आए तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन॥ १६॥
अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक॥ १७॥
ख्वाब की अकल छोड़के, कहूं अरस के कलाम।
हक बका जाहेर करूं, अखण्ड सुख जे ठाम॥ १८॥
दुनी द्वैत जुबां छोड़ के, कहूं जुबां अकल और।
कलाम कहूं अर्स अजीम के, महामत बैठे इन ठौर॥ १९॥
ला मकान सुन्य निरगुन, छोड़ फना निरंजन।
छर अछर को छोड़ के, ए ताको मंगलाचरन॥ २०॥

(परिक्रमा प्रकरण २)

धाम-बरनन (और ढाल चली)

अब आओ रे इस्क भानूं हाम, देखूं वतन अपना निज धाम।
करूं चरन तले विश्राम, विलसों पियाजी सों प्रेम काम ॥ १ ॥
अब बानी अद्वैत मैं गाऊं, निज सरूप की नींद उड़ाऊं।
सब सैयों को भेली जगाऊं, पीछे अक्षर को भी उठाऊं॥ २ ॥
जब प्रले प्रकृति होई, न रहे अद्वैत बिना कोई।
एक अद्वैत मंडल इत, धनी अंगना के अंग नित॥ ३ ॥
अब याही रट लगाऊं, ए प्रेम सबों को पिलाऊं।
अब ऐसी छाक छकाऊं, अंग असलू इस्क बढ़ाऊं॥ ४ ॥
धनी धाम देखन की खांत, सो तो चुभ रही मेरे चित।
किन विध बन मोहोल मन्दिर, देखों धनीजी की लीला अंदर ॥
विलास सरूप किन भांत, बिन देखे क्यों उपजे स्वांत।
जल जिमी पसु पंखी थिर चर, सब ठौर और अक्षर॥ ६ ॥
सब सोभा देखों निज नजर, अपना वतन निज घर।
धनी केहे केहे चित चढ़ाई, पर नैनों अजूं न देखाई॥ ७ ॥
तुम दई जो पिया मोहे निध,सो तो संगियों को कही सब विध।
और हिरदे जो मोहे चढ़ाई, सो भी देऊं इनों को द्रढ़ाई॥ ८ ॥
अब सुनियों साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं।
जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए॥ ९ ॥
द्वार आगे चबूतरे तीन, दोए दोए तरफ एक भिंन।
दोनों पर नंगों के फूल, चित्त निरखे होत सनकूल॥ १० ॥

Scanned by CamScanner

बेलां कई रंगों कई नकस, देखों एक दूजी पे सरस।
ता बीच चरनी केती कई रंग, बेला कटाव जड़ित कई नंग॥
दोऊ तरफ किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जरी।
दाहिने हाथ भिन चबूतरा, ता बीच गली लगता तीसरा॥ १२
ऊपर दरखत छाया बराबर, सब रही चबूतरे भर।
चारों तरफों तीन तीन चरनी,किनारे की सोभा जाए न बरनी॥
उज्जल भोम को कहा कहूं तेज, जानो बीज चमके रेजा रेज
ए जोत आसमान लों करत,जोत आसमान सामी लरत॥ १४
सो परे बन पर झलकार, जोत बन की न देवे हार।
इन मंदिरों को जो उजास, सो तो मावत नहीं आकास॥ १५॥
जोत तेज प्रकास जो नूर, सब ठौरों सीतल सत सूर।
जोत रोसन भर्‍यो आसमान,किरना सके न कोई काहूं भान॥
सोभा क्यों कहूं या मुख बन, सो तो होए नहीं बरनन।
इत सब तत्वों की खुसबोए, सो इन जुबां बरनन क्यों होए॥
इत जल वाए के चलत जो पूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग॥ १८॥
चांद सूरज धनी के हजूर, सो मैं क्या कहूं ताको नूर।
इत जमुना जी के सातों घाट, मध्य का जल जो बीच पाट॥
तापर देहुरी एक, जल पर पाट कठेड़ा विसेक।
चारों थंभों के जो नंग, झलके माहें जल के तरंग॥ २०॥
आड़े ऊंचे याके तले, चार चार थंभ तीन तीन घड़नाले।
याकी जोत आकास न मावे, किरना फेर फेर जिमी पर आवे॥

तिनथें तीन घाट तरफ बाएं, ताकी जुदी तीनों बनराए।
बन बड़ा इनथें भी बाएं, पिया सैयां खेलन कबूं कबूं जाएं ॥
लम्बी डारें ऊंचा बन, कै भांत हिंडोले झूलन।
तीन घाट कहे सो देखाऊं, सुनो तीनों बनों के नाऊं॥ २३ ॥
केल लिबोई और अनार, और तीन बन दाहिनी किनार।
बट नारंगी जांबू बनराए, पाट के घाट अमृत केहेलाए ॥ २४ ॥
जल पर डारें लगियां आए, दूजियां भोम तरफ सोभाए।
जमुना जी के दोऊ किनारें, बन जल पर लगी दोऊ हारें॥ २५
आधों आध हुइयां डारें, बन रंग सोभित दोऊ पारें।
आगे बन के जो मंदिर, ताको बरनन करूं क्यों कर ॥ २६ ॥
बेलां बन चढ़ियां इन सूल, हुइयां दिवालें पात फूल।
गिरद चारों तरफों फूले फूल रंग, जुदी हारें सोभा जिन संग ॥
इत लता चढ़िया अति घन, ऊपर फूलों के फूले हैं बन।
जानों जवेर रंग अनेक, कुंदन में जड़े विवेक॥ २८ ॥
बीच जमुना जी के और मंदिर, अति बन सोभित बन के अन्दर।
कई सेज्या बनी फूल बन में, कई रंग हुए सघन में ॥ २९ ॥
इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनंद इन वतन।
मिने राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए ॥ ३०
पेड़ जुदे जुदे लम्बी डारी, छाया घाटी सोभे नीची सारी।
निकसी एक थें दूजी गली, सो तो तीसरी में जाए मिली ॥
कई आवत बीच आड़ियां, कई सीधियां कई टेढ़ियां।
बन गलियों में बराबर, न कहूं अधिक न छेदर॥ ३२ ॥

Scanned by CamScanner

ऊपर ढांपियां सारी सनंध, सोभा बनी जो दोरी बंध।
तले भोम नजर आवे जेती, उज्जल कहा कहूं जोत सुपेती॥
जिमी ऊपर तले जो रेती, जानों तितके बिछाए मोती।
कहूं अति बारीक कहूं छोटे, कहूं बड़े बड़े रे मोटे॥ ३४॥
कित जानों हीरा कनी, हर ठौर हर भांत घनी।
कित दोखूनी तीन चौखूनी, कित फिरती कहूं गोल बनी॥ ३५
ए विध कहूं मैं केती, सो होए न याकी गिनती।
बन फूल फूले बहु रंग, झलूब रहे बोए सुगंध॥ ३६॥
एक खूबी और खुसबोए, याकी किन जुबां कहूं मैं दोए।
एक सुगंध दूजा नूर, रह्या सब ठौरों भर पूर॥ ३७॥
तलाब जमुना जी के मध, बन के मंदिर या विध।
ए खेलन के सब ठौर, तलाब विध है और॥ ३८॥
तलाब बनें लिया घेर, ऊपर देहुरियां चौफेर।
कई पावड़ियां जो किनारे, बड़ा चौक तले जाली बारे॥ ३९
बन लेवत सोभा पालें, कई हिंडोले लम्बी डालें।
घाट पाट देहुरी कई रंग, जल सोभा लेत तरंग॥ ४०॥
गेहेरा अति सुन्दर जल, बीच में बन्यो है मोहोल।
जल ऊपर मोहोल जो छाजे, बीच बीच में बन विराजे॥ ४१॥
जल मोहोल तले जो खलके, मंदिर कोट प्रकास मनी झलके।
बन को झुंड पाल पर एक, तले सोभा अति विसेक॥ ४२
झुंड तले सोभा कही न जाए, धनी इत बिराजत आए।
धनी बैठत साथ मिलाए,सब सिनगार साज कराए॥ ४३॥

इन ठौर सोभा जो अलेखे, चित सोई जाने जो देखे।
मध्य बन धाम के गृदवाए, सोभा एक दूजी पे सिवाए॥ ४४

बट पीपल निकट बनराए, सो देखे न दृष्ट अघाए।
ज्यों ज्यों देखिए त्यों त्यों सोभाए, पेहेले थें पीछे अधिकाए॥

फिरते बन धाम विराजे, ऊपर आए रह्या लग छाजे।
चारों तरफों फूले फूल बन, कई रंग सोभा अति घन॥ ४६॥

बरन्यो न जाए या मुख, चित में लिए होत है सुख।
बन में खेलें टोले टोले, मोर बांदर करत कलोले॥ ४७॥

मिल मिल करे टहुंकार, मुख मीठी बानी पुकार।
बांदर ठेकों पर ठेक देत, टेढ़ी उलटी गुलाटें लेत॥ ४८॥

तीतर लवा कोकिला चकोर, सब्द वाले सामी टकोर।
सुआ मैना करें चोपदारी, चातुरी इन आगे सब हारी॥४९॥

सखियों के नाम ले ले बुलावें,श्री धनी जी के आगे मुजरा करावें।
पंखी पिउ पिउ तुहीं तुहीं करें,कई विध धनी को हिरदें धरें॥

तिमरा भमरा स्वर साधें, गुंजे गान पियासों चित बांधें।
मृग कस्तूरिया घेरों घेर, करें सुगंध बन चौफेर॥ ५१॥

हाथी बाघ चीते स्याहगोस, खेले मिलें आतम नहीं रोस।
हंस गरुड़ पंखी कई जात, नाम लेऊं केते कै भांत॥ ५२॥

कई मुरग सुतर कुलंग, खेल करें लड़ाई अभंग।
सीनाकस गुलाटें खावें, कबूतर अपनी गत देखावें॥ ५३॥

हरन साम्हर पस्वाड़े पाड़े, खेलें सब कोई अपने अखाड़े।
मुजरे को दोऊ समें आवें,खेल सब कोई अपना देखावें॥ ५४

Scanned by CamScanner

पसु पंखी अनेक हैं नाम, सोभे केसों पर चित्राम।
अति सुन्दर जोत अपार, याके खेल बोल मनुहार॥ ५५॥
जमुनाजी के जो पार, बन पसु पंखी याही प्रकार।
मोहोल सामें सोभे मोहोल, सो मैं क्यों कहूं या मुख कौल॥
दरवाजे सामी दरवाजे, नूर सामी नूर बिराजे।
नूर किरना उठें साम सामी, जोत रही सबों ठौर जामी॥
लीला दोऊ दोनों ठौर, भांत दोऊ पर नाहीं और।
फिरते अछर के जो बन, लीला एकै देखियत भिन॥ ५८॥
कई मिलावे सोहने, धनी सैयों के खेलौने।
पसु पंखी जुत्थ मिलत, आगे बड़े दरवाजे खेलत॥ ५९॥
दोऊ कमाड़ रंग दरपन, माहें झलकत सामी बन।
नंग बेनी पर देत देखाई, ए सोभा कहीं न जाई॥ ६०॥
कई कटाव नकस जवेर, सोभित नंग चौक चौफेर।
फिरते द्वारने जो मनी, ताकी जोत प्रकास अति घनी॥ ६१॥
याके तीन तरफ जो दीवाल, कई जवेर भोम रंग लाल।
गोख खिड़की जाली जवेर, कई जड़ाव दिवाल चौक चौफेर॥
गिरद झरोखे के थंम फिरते, जुदी कई जिनसों जोत धरते।
नव भोम रंग बरनन, तापर खुली चांदनी उठत किरन॥ ६३॥
मंदिर याकी कांगरी करे जोत, जानो तहां की बीज उद्दोत।
दरवाजे में ठौर रसोई, जित बड़ा मिलावा नित होई॥ ६४॥
स्याम मंदिर रसोई होत जित, जोड़े सेत मंदिर है तित।
बन थें फिरें संझा जब, इन मंदिरों अरोगें तब॥ ६५॥

Scanned by CamScanner

चरनी आगे मिलावा होत, जुत्थ लाड़बाई धरे जोत।
साक बांदर जो ल्यावत, आगे सखियां सब समारत ॥ ६६ ॥
कई चौक चबूतरे अन्दर, कई विध गलियों मंदिर।
कई जड़ाव दिवाल द्वार जोत धरे, ए जुबां बरनन कैसे करे॥
कई नकस पुतली चित्रामन, कई बेल पसू पंखी बन।
कंचन कड़े जंजीरां जडियां, कई झलकें थंभ सीढ़ियां ॥ ६८
माहें वस्तां संदूक जोगवाई, सो तो अगनित देत देखाई।
ताके खिल्ली किनारे भमरियां,ऊपर वस्तां अनेक बिध धरियां॥
ए मैं क्यों कर करूं बरनन, तुम लीजो कर चितवन।
नव भोम सबों के मंदिर, देखो वस्तां अपनी चित धर ॥ ७०
सेज्या सबन के सिनगार, हिरदे लीजो कर निरधार।
सब जोगवाई है पूरन, कमी नाहीं काहू में किन ॥ ७१ ॥
हांस विलास सनेह प्रेम प्रीत, सुख पिया जी को सब्दातीत।
डब्बे तबके सीसे सीकियां, कई देत दिखाई लटकतियां॥
चौकियां माचियां सिंघासन, कई हिडोले जंजीर कंचन।
कई बासन धात अनेक, कई बाजंत्र विविध विसेक॥ ७३
कई झीले चाकले दुलीचे बिछौनें, कई बिध तलाई सिरानें।
कई रंग ओछाड़ गाल मसूरे, कई सिरख सोड़ मन पूरे॥ ७४
सेज्या सिनगार के जो भवन, दोए दोए नव खंड सबन।
दूजी भोम किनारे बांए हाथ, कबूं कबूं सिनगार करें इत साथ॥
इत खड़ोकली जल हिलोले, धनी साथ झीलें झकोलें।
इत सिनगार करके खेलें, ठौर जुदे जुदे जुत्थ मिलें॥ ७६ ॥

Scanned by CamScanner

साम सामें मंदिरों कै द्वार, नव भोम फिरती किनार।
ता बीच थंभों की दोए हार, कई रंग नंग तेज अपार॥ ७७॥
जेती मैं कही जोगवाई, सो देख देख आतम न अघाई।
या बाहेर या अंदर, सब एक रस मोहोल मंदिर॥ ७८॥
केहेती हों करके हेत, सारे दिन की एह बिरत।
तुम लीजो द्रढ़ कर चित, अपना जीवन है नित॥ ७९॥
(परिक्रमा प्र. ३)

भोग प्रात:काल
तीजी भोम की जो पड़साल
॥ श्री धाम की आठ पोहोर की बीतक॥

तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विसाल।
धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात॥ १॥
पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार॥ २॥
श्री स्यामाजी मंदिर और, रंग आसमानी है वा ठौर। चार चार
सखियां सिनगार करावें,स्यामाजी श्री धनीजी के पासे आवें॥
सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित में लिए होत है सुख।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी॥ ४॥
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूषन पेहेरावें।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनीजी के मन भावे॥ ५॥

Scanned by CamScanner

सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल।
सैयां आवत बोलें बानी, संग एक दूजी पे स्यानी॥ ६॥
सैयां आवत करें झनकार, पाए भूषन भोम ठमकार।
झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां॥ ७॥
कंठ कंठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां।
सुन्दरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां॥ ८॥
कई फंलग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां।
कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां मचकतियां॥
कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहरां ज्यों लेवतियां।
कई आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां॥ १०॥
कई सीधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे॥ ११॥
इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं॥ १२॥
इत चार घड़ी लों श्री राज बैठें, मेवा मिठाई आरोग के उठें।

पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
प्रेम देखाऊं तुमको साथजी, जित अपना मूल वतन।
प्रेम धनी को अंग है, कहूं पाइए ना या बिन॥
प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्म सृष्टि ल्याई इत।
ए प्रेम इनों जाहेर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित॥

दाहिनी तरफ दूजा जो मन्दिर

दाहिनी तरफ दूजा जो मंदिर, आए बैठे ताके अंदर।
नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मंदिरों दिवालों के तांई ॥ १ ॥
पैठते दाहिने हाथ जो जांही, सेज्या है या मंदिर मांहीं।
कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राज स्यामाजी के दोऊ आसन ॥
झरोखे को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें।
संग सखियां केतिक विराजें, या समे श्री मंडल बाजे ॥ ३ ॥
नवरंग बाई जो बजावें, मुख बानी रसीली गावें।
इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावें गुन लाल ॥ ४ ॥
सखी एक निकसें एक पैठें, एक आवें उठें एक बैठें।
इन समे भगवान जी इत, दरसन को आवें नित ॥ ५ ॥
झरोखे सामी नजर करें, परनाम करके पीछे फिरें।
इत और न दूजा कोए, सरूप एक है लीला दोए ॥ ६ ॥
भगवान जी खेलत बाल चरित्र,आप अपनी इच्छा सों प्रकृत।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवें, खिन में देखके पलमें उड़ावें ॥
और ए तो लीला किसोर, सैयां सुख लेवें अति जोर।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं ॥ ८ ॥
इत खेलत जुत्थ सैयन, सदा आनंद इन वतन।
मिने राज स्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

श्री जी साहेब जी को स्वरूप

श्री जी साहेब जी को स्वरूप अपने चित्त के विखें लीजिए। सुन्दर या स्वरूप सों आपन हमेशा रमे खेले। श्री मुख की चर्चा वचन वानी याद कीजिए। श्री जी साहेब जी प्रातःकाल के समे सुन्दर सुख सेज्या से पौढ़े से उठे। उठि तखत पर विराजमान भये। श्री बाईजी साहिब जू श्री जी साहेब के चरणों लाग के, जोड़े गादी पर विराजमान भईं, श्री महाराजा जी, श्री लालदास जी साथ सब स्वरूपदे, पुरूष दे, श्री जी साहेब जी के चरणों लाग लाग आप अपनी सेवा में तत्पर आए आए खड़े रहे। श्री जी साहेब जी साथ सबको बचनों द्वारा होय अमृत सींचत हैं। मेहेरवानगी कर वचन फुरमावत हैं। श्री जी साहेब जी को मुखारविन्द अत्यन्त गौर गेहेरी लालक लिए, केश चोये में भिगोये, जरी को गोटा रोशन सुन्दर बादले को चीरा, केशरिया रंग गोस पेंच, मुर्गपेंच, जड़ाव की कनढप्पी, ऊपर फूलों की कलङ्गी, तुर्रा, चन्द्रकारी, हीरों की दुगदुगी, यह हमेशा छवि छाजत है। तिलक रंङ्ग कंचन, मध्य दो रेखा बिन्द का लाल, केश तिलक निलवट पर, दो रेखा चली लग कान। केश ना कोई घट बढ़, शोभा चाहिए जैसी सुभान। श्री जी साहेब जी की दोऊ भोहें श्यामता लिए, नेत्र तारे तेज वान, फिरते

Scanned by CamScanner

अनियारे चातुरी मान भरे चंचल, अंदर स्याह सुपेती लिये, मध्य रेखा लाल। श्री जी साहेब जी के दोऊ कर्ण कोमल में, चारु मोती दानासरी, अष्ट धात के बाला, चार चार करड़े मोतियों की लटकनी, भरे गलस्थल दोऊ गालों की झांई, गौर निर्मल नासिका, अत्यन्त शोभायमान, मुखारबिन्द की शोभा, मुख में बीड़ी लाल तम्बोल की, दन्त जानों दाड़िम की कलियां, या मुखार बिन्द की शोभा पर, जीव को कुर्वान कर डारिए। श्री जी साहेब जी के दोऊ लाल अधरों की शोभा, सुन्दर लांक, गौर हरवटी, कण्ठ में कण्ठी तुलसी की विराजमान। छाती कुशादी पेट पांसे, तेज की अम्बार भरी कमर, खुले अङ्ग देखिये। श्री जी साहेब जी को सुपेत नीमा, चोली अङ्ग को लग रही, घेरदार दावन, चीन की शोभा। दोऊ बगलों गुलाब की, चोवा की खुशवोय, दरसाल की कवाय, दुशाला थुर्मा, सुपेत रङ्ग कवाय पें जुड़ बैठो। श्री जी साहेब जी के दोऊ खव्बे मच्छे, कोनी कलाई कांड़े। दोऊ हथेलियां, बहुत नरम कोमल, उज्जवल पतली मिहीन रेखा, दशों अंगुरियां दोऊ हस्त कमल की, तापर नख रोशन, सुंदर हीरों से विराजमान। दशों अंगुरियां में दश बीटी, एक बीटी हीरा की, हीरा, लसिनियां, गोमादिक, मोती, पन्ना, परबाल, पुखराज, नीलवी। दोऊ अंगूठों में दो अंगुस्थाने। रत्न चौक की दोहरी पहोंची। सातो नगों की सात सात दुगदुगी, ताकी एक पहोंची। सात नगों की एक दुगदुगी, ताकी

Scanned by CamScanner

दूसरी पहोंची। एक एक जड़ाव के कड़े। जामें के बांह की मोहोरी पर फिरते मोती, कुरली, छोटी न मोटी, जाड़ी ना पतली, सबै बनी एक रस। कुहनियों के ऊपर बाजूबन्ध जड़ाव के, कण्ठ में कण्ठी सुवर्ण की, मध्य चौपहलू मादलिया। दूसरी कण्ठी मोतिन की मध्य चौपहलू माणिक, तले मोती लटकत हैं। तीसरी कण्ठी पानड़ी की, ताकी तीनों दुगदुगी, एक दुगदुगी हीरा की, एक माणिक की, एक नीलवी की। बड़े मोतिन की माला, चन्द्रहार उतरती तरह जिनके जनेऊ की पेहरी है। यह श्री जी साहेब जी के उर ऊपर हार विराजमान। पटका कमर में कस्या है, पटका के पल्लों पर जवेरों के बूटा, इजार रङ्ग केशरी नाड़ो नवरंङ्ग श्याम श्वेत, लाखी, लिबोई, जांबू जरदोरिया, कसुमवर केशरी कशुम्बी, जालीदार, आगे दोऊ नरम झाबे झलकत हैं। पीड़ी अत्यन्त गौर पायचा झीणी कुरली झणवार, इजार की मोहरी पर फिरते मोती। चारों जोड़े चरन कमल के भूषण, चरण कमल बहुत नरम कोमल, उज्जवल लालक लिये, रङ्ग रस भरे कदम। पाणी लांक लाल एड़िया, गृदवाए फिरती कांगरी चरण तली दोऊ चरण कमल की बहुत नरम कोमल उज्जवल पतली मिहीन रेखा। दशों अंगुरियां, दोऊ चरण कमल की। तापर नख रोशन सुन्दर हीरों से विराजमान, ये मेहेर करें चरण जिन पर, देत हृदय पूर्ण स्वरूप, जुगल स्वरूप चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप। श्री जी साहेब जी नख

Scanned by CamScanner

सिखलो सिनगार साजि के, तखत पर विराजमान भये। ये बीच कुरान हदीसों के चेहरा लिखा है। सिर पर बालों की चोटी, गेहुंआ रङ्ग, स्याह आंखें यही झलकत हैं। साहेदी खुदा की खुदाए देवें, करें बयान हुकम सिर लेवें। लायक पूजने के यही खुदाय पाक वरहक है। खुशवोय को रूमाल श्री जी साहेब जी के दोऊ हस्त कमल में राखिये। इन चरणों बेर बेर लागिये। सो यह चरण कैसे हैं कि सदा सुखदाई हैं। श्री बाई जी साहेब जू अपने मन्दिर में से, नख शिख लो सिनगार साजि के, मेवा मिठाई को थाल भराय के, आरती को सरजाम लिवाए के, आप सुखपाल में बिराजमान होय आईं। श्री जी साहिब जू के चरणों लाग के जोड़े-गादी पर बिराजमान भईं। श्री महाराजा जी, श्री लालदास जी, साथ सब चरणों लाग लाग भराए के बैठे। श्री बाई जी साहेब जू ने श्री जी साहेब जी के, दोऊ चरण कमल धुवाय के, और दोऊ हस्त कमल धुवाय के चुल्लू कराये। मुख हाथ रूमाल सो पुछाय के मेवा मिठाई आरोगावने लगीं। भांति भांति के पकवान, भांति भांति की तरकारियां, अनेक भांति के बहु व्यंजन, मूंगभात, घृत दूधभात, खांड़, दधि, सिखरण सहित श्री जी साहेब जी अति रुचि सों आरोगत जात हैं। श्री बाईजू साहेब जू अति प्रीति सों परोसत जाती हैं। श्री जी साहेब जी आरोगत हैं। अधबीच में मंद मंद मुस्कनी छवि सों, बातें करते करते ऐसे घड़ी

Scanned by CamScanner

दो-एक में, श्री जी साहेब जी आरोग रहे। श्री बाई जी साहेब जू ने, श्री जी साहेब को जल अचवाय, चुल्लू कराय के, दोऊ हस्त कमल को धुवाय के, मुख हाथ रूमाल सों पुछाय के, केशर, कपूर, कस्तूरी, लवंग, इलायची, जावित्री संयुक्त पानों की बीड़ी आरोगाये के, तिलक दे चांउर चौड़े। ऊपर फूलों की वर्षा करी। बस्तर भूषण पहेराय के श्री बाई जी साहेब जू ने आरती करी। श्री महाराजा जी ने मोरछल करी। श्री लाल दास जी ने चँवर करी, श्री जी साहेब जी ने पानों के बीरा बक्से। श्री बाई जी साहेब जू ने श्री जी साहेब जू के चरणों लाग के प्रसाद लियो, श्री महाराजा जी ने प्रसाद लियो। श्री लाल दास जी ने प्रसाद लियो और सब साथ को प्रसाद पहोंचो। श्री जी साहेब जी सर्व साथ को, "श्री राज जी श्री ठकुराणीं जी को मूल स्वरूप तथा श्री निज धाम को वर्णन" समस्त साथ के हृदय में भरावत हैं। श्री निजधाम नव भोम दशमी आकाशी। श्री जमुना जी के सातों घाट। पाट को घाट, जांबू को घाट, नारङ्गी को घाट, बट पीपल की चौकी, बट को घाट, बट को पुल, कुंजबन की रेती। जमुना जी के किनारे एक मोहोल, एक चबूतरा, जमुना जी दोऊ तरफ ढपी, बीच में खुली। सोलह देहुरी को घाट, तेरह देहुरी को घाट, झुण्ड को घाट, नव देहुरी को घाट, आठ थम्भ, पाल की मोहोलात, टापू की मोहोलात, चौबीस हांस की मोहोलात, जवेरों की नेहरें।

Scanned by CamScanner

मानिक पहाड़ की मोहोलात। मानिक पहाड़ के हिंडोले। वन की नहरें। चार हार हवेली, रांग की मोहोलात, नूरसागर, नीरसागर, क्षीरसागर, दधिसागर, घृतसागर, मधुसागर, रससागर, सर्वरस सागर। पश्चिम की चौगान, दूब दुलीचा, अन्नवन, फूलबाग, नूरबाग, लाल चबूतरा, खड़ोकली, ताड़वन, ताड़वन के हिंडोले। बड़ोवन, मधुवन, महावन, पुखराज की तरहटी में बागबगीचे और मोहोलाइत। पुखराज को चबूतरा, पुखराज की हजार हांस की चांदनी। चांदनी पर मोहोलाइत। पुखराज के प्रथम थम्भ की मोहोलाइत। पुखराज के दूसरे थम्भ की मोहोलाइत। पुखराज के तीसरे थम्भ की मोहालाइत। पुखराज के चौथे थम्भ की मोहोलाइत। पुखराज के पांचवें पेड़ की मोहोलाइत। पुखराज की पश्चिम तरफ की घाटी। पुखराज की उत्तर तरफ की घाटी, पुखराजी पहाड़ में बंगलों की मोहोलाइत। आकाशी मोहोल, आकाशी की चांदनी, चांदनी पै एक सौ आठ गुरजन की मोहोलात। पुखराजी ताल। पुखराजी ताल के धाम की तरफ की मोहलात, पुखराजी ताल के उत्तर तरफ की मोहोलात, पुखराजी ताल के दोऊ गुरजन के बीच की देहलान। अध बीच को कुण्ड। खास मोहोल, जहाँ से सोला चादरें गिरती हैं। ढपो चबूतरा, मूल कुण्ड, जहां से श्री जमुना जी प्रगटी। ढपी जमुना जी। जमुना जी दोऊ तरफ पटी।

Scanned by CamScanner

आगे अधबीच में श्री जमुना जी खुलीं। जहां से जमुना मरोर खाई। वहां से एक मोहोल और एक चबूतरा, केल के पुल ताईं। केल को पुल, केल को घाट, लिवोई को घाट, अनार को घाट, पाटको घाट। यहां आय अमृत वन दरसाय के श्री निज धाम दरवाजे के सन्मुख चांदनी चौक में खड़े होय के। अन्दर मूलमिलावे की खिलवत की शोभा और मोहोल मन्दिर गली गली कूचा कूचा समूह सब साथ के हृदय में भरावत हैं। आठों पहोर की लीला। हलवन, चलवन। पहोर पहोर, घड़ी घड़ी साइत साइत की लीला, याद कीजिए। प्रात:काल से संझा लों और संझा से प्रात:काल लों। साथ सबको हमेशा नूर वरसावत हैं। सो सुख दाई स्वरूप को याद करके। सब साथ मिलके अर्ज विनती कीजिए कि हे मेहेरवान तुम्हीं फुरमान लाये, कुंजी भी तुम्हीं ल्याये। तुम्हीं साहेब इमाम खुदा काजी होय बैठे हो। साथ पर मेहेर करो। मेहेरवान या जंगल दरियाव अन्धेरी में छोड़ के, साथ सों अन्तराय करिके बैठे हो। सो ये मोमिन गरीब, यतीम, फकीर तुम्हारे चरण कमल जानत हैं। ताथें सब साथ की सुरता खेंच के अपने कदम दिखाओ। सब साथ मिलके गोदी ओड़ के यही अर्ज विनती करत हैं, हे श्री जी साहेब जू सब साथ को बीच खिलवत के उठाय खड़े कीजिए। इनको नूर से पूर कीजिए। समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम!

Scanned by CamScanner

बड़ी अरजी

सुन्दरसाथ जी! याद कीजिए, श्री जुगल स्वरूप सिंहासन के ऊपर विराजमान हैं। आपन सब सखियां श्री राजजी के चरणों तले भराय के बैठी हैं। ऊपर नूर को चन्द्रवा झलकत है। फिरते-फिरते चौसठ थंभ नूर के झलकत हैं। तहाँ श्री राजजी के चरणों तले खड़े होय के अरज विनती कीजिए कि साहेब जी मेरे तुम्हीं जो करी सों भई और करत हो सो होत है और करोगे सो होएगी। तुम्हारी हमको इश्क पातसाही की खबर ना हुती। ना सुख की और ना दुख की, ना मिलाप की, ना जुदागीकी। तुम्हारी हमको काहू बात की कछू खबर ना हुती। जब तुम मेहेर का दरिया दिल में लिया, तब हम सबों के दिल में उपजा। जब तुम बर्जे, तब हम फेर फेर माग्या। ज्यों तुम ज्यादा ज्यादा कह चले, त्यों हम ज्यादा ज्यादा बढ़ चलीं। जो "पहले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर। ता पीछे हादी रूहन में, यों कर हुआ जहूर॥ हकें हमारे दिल पर, ए जो किया हुकम। तब हम दिल में उपज्या, मांग्या खेल खसम॥ हके आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान। आंगू ही से कहि गये, जो कछू होना निदान॥ कह्या उतरते हक ने, अलस्तो बेरब्ब

कुम। फेर कह्या अरवाहों ने, बले न भूलें हम॥" अये रूहों! तुम बीच नासूत के जाती हो। मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ, तुम हमको कबहुं न भूलियो। ये रब्द तीसरी भोम से करके, तले की भोम मूल मिलावा माहिं आन विराजे, तहाँ एक चरण चौकी पर लटकत है। दूसरो चरण सिंहासन के ऊपर। आपन सब सखियां श्री राज जी के चरणों तले भराये के बैठी हैं। ज्यों दाड़िम की कलियाँ। तब श्री राजजी ने प्रथम इच्छा श्री भगवान जी पर डारी। ज्यों जाग्रत में ब्रह्माण्ड देखते थे, त्यों स्वप्न में देखने लगे। फेर सखियों पर सुपन सुरूप हुकम को आवरण डारयो। बारे हजार सखी बृज में एकट्ठी आई। तहां ग्यारह वर्ष और बावन दिन लों इश्क प्रेम में खेले। 'रास लीला खेल के, आये बरारब श्याम।' तहाँ त्रेसठ वर्ष लों आयतें सूरतें कुरान हदीसों में लिखकर आरबों के हाथ देकर हैयातुल नबी ने कूच किया, याने बीच परदे के हुये। "साल नव से नब्बे मास नव, हुये रसूल को जब। रूहअल्ला मिसल गाजियो, मोमिन उतरे तब।" रूहअल्ला चौथे आसमान से उतरे, रूहअल्ला ने तीन दीदार देखे। प्रथम दीदार में बीच राह के पैगंमर साहेब ने नूर को पटुका कमर में बंधायो। दूसरे दीदार में अखण्ड ब्रज देखे। श्रीकृष्ण पिया संग मिले, तीसरे दीदार में बीच

Scanned by CamScanner

बेजा मुनारे के, नूर के कुब्बे में से कलीज किल्ली दूसरी सूरत को दई। "महमंद मिले ईसे मिने, तब अहमद हुआ श्याम। अहमद मिले मेहदी मिने, ये तीनों मिल हुये इमाम॥" ऐसे सखत बखत में वसियतनामें चलाय के हमारी मदत कराई। अल्ला कलाम से साहेदी दई। कुरान पुरान से साहेदी दई, हदीसों से वेद कतेब से साहेदी दई। चार आसमान की पहेचान कराई। पांच भांत पैदाइस की पेहेचान कराई। छः भांत निमाज की पेहेचान कराई। सातों बड़े निशान कयामत के खोल दिये। आठ भांत भिस्त की पहेचान कराई। नाजी फिरका, नारी फिरका, असराफील, जबराईल, आमखलक की पेहेचान कराई। खुदाय ताला ने कजा करी। महंमद साहेब ने सिफाइत करी। रूहें अरस की गली गली फिरवलीं। असराफील ने खुश आवाज सों कुरान को गाया, फिरस्ते काम हाल छोड़ के फिरे। अरस की किल्ली जाहेर भई। मोमिन मोमिन सिजदा को आवें, तो सेजदा करें। काफर मुनाफक सिजदे को आवें, तो पीठ उन्हों की सींग सी कड़ी हो रहे। चमड़ी टूटे, पर सिजदा उन्हों से ना होवे। ताथें दोजक की आंच आई। खबरदार होय कलमा कहो। सातमें दरवाजे की आंच आई। कलमा कहो। दिल में देखो। जिन दिल पर नकस नहीं। ऐसे काफरों को जलायो।

ऐसे ही जलायो चाहिये। दोऊ तरफों की गीता किताबें खोल दई, तीनों सृष्टि जीव, ईश्वरी, ब्रह्म की पहिचान कराई। ज्यों बिल्ली अपने बच्चों को लेती है। वाय मुस्क को छोड़ देती है। तैसे ही तुम हमारे लाड़ के पूरन करनहारे मेहेरवान, हमारे लाड़ पूरन कीजिये। जिन तुम्हारे चरणामृत प्रसाद को आसरो लियो होय। शब्दवाणी कानों से सुनी होय, या जुवान से कही होय तिनको इन जेहेर जिमी से छुड़ाय के, अपने कदमों तले बैठाय कर साक्षात दीदार दीजे। इनको नूर से पूर कीजे। सब-साथ मिलके गोदी ओढ़ के, यही अरज विनती करत हैं। श्री जी साहेब जी को प्रणाम। श्रीबाई जी साहेब जी को प्रणाम। श्री महाराजा जी को प्रणाम। श्री लालदास जी को प्रणाम, समस्त सुन्दरसाथ जी को प्रणाम। मेहेरवान महाराजा जू, मोमिनों के वास्ते सब साथ मिलके अरज बिनती कीजे। मेहेरवान महाराजा जू, मोमिनों के बलाय सब दफे कीजे, इनको नूर से पूर कीजे। यों साथ सबको बीच खिलबत के उठाए खड़े कीजे। समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम।

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखर॥
खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार॥

Scanned by CamScanner

छोटी अरजी

निस दिन ग्रहिए प्रेम सों, श्री जुगल सरूप के चरन।
निरमल होना याही सों, और धाम बरनन॥ १॥
इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाए कोई नाहें।
भजन बिना सब नरक है, पचि पचि मरिए माहें॥ २॥
एक आतम धनी पेहेचानिए, निरमल एही उपाए।
श्री महामति कहें समझ धनी के, ग्रहिए सो प्रेमे पाए॥ ३॥
श्री महामति कहे मेहबूबजी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, दुलहा लीजे कंठ लगाए॥ ४॥
गुन अवगुन जेते किए, किए पीछले जौन।
साहेब सों सांचा रहे, साथी सांचा तौन॥ ५॥
अवगुन काढ़े गुण ग्रहे, हारे सों होए जीत।
साहेब सों सनमुख सदा, ब्रह्मसृष्टि ए रीत॥ ६॥
ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान।
बाले थें बुढ़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान॥ ७॥
नजर से न काढ़ी मुझे, अब्बल सें आज दिन।
क्यों कहूं मेहेर मेहबूब की, जो करत ऊपर मोमिन॥ ८॥
कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन॥ ९॥
श्री महामति कहे पीछा न देखिए, न किसी की परवाह।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दीजे अरवाह॥ १०॥
श्री महामति कहें अरवाहें अरस से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरन लेएके, चलिए अपने घर॥ ११॥

Scanned by CamScanner

हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानो त्यों करो खसम॥ १२॥
तुम तुमारे गुण ना छोड़े, मैं तो करी बहुत दुष्टाई।
मैं तो कर्म किये अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई॥ १३॥
जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर॥ १४॥
पियाजी तुम हो तैसी कीजियो, मैं अरज करूं मेरे पिऊ जी।
हम जैसी तुम जिन करो, मेरा तलफ तलफ जाए जीव जी॥
जीवड़ा तो जीवे नहीं, क्यों मिटे दिल की प्यास।
तुम बिना मैं किनसों कहूं, तुम हो मेरी आस॥ १६॥
आस बिरानी तो करूं, जो कोई दूसरा होए।
सब विध पियाजी सामरथ, दिन रैन जात रोए रोए॥ १७॥
जन्म अन्धी जो मैं हुती, सो तुम देखते किये।
जब तुम आप दिखाओगे, तब देखूंगी नैना भरे॥ १८॥
ये पुकार पिया जी सुनके, तुम ढील करो अब जिन।
क्षण क्षण खबर जो लीजियो, मैं अरज करूं दुलहिन॥ १९॥
एती अरज मैं तो करूं, जो आड़ी भई अन्तराए।
सो आड़ी अन्तराय टालके, दुलहा लीजे कंठ लगाए॥ २०॥
कंठ लगाइए कंठ सों, कीजे हांस विलास।
वारने जाए श्री इन्द्रावती, पियाजी राखो कदमों पास॥ २१॥
तुम दुलहा मैं दुलहिनी, और न जानूं बात।
इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साक्षात॥ २२॥
सदा सुख दाता धाम धनी, मैं कहा कहूं इन बात।
श्री महामति युगल स्वरूप पर, अंगना बलि बलि जात॥ २३॥

Scanned by CamScanner

मैं जो आई ब्याहन दुलहे को

आई आगम बानी इत मिली, विस्व मुख करत बखान। कौल सबनके पूरन भए, आए सो पोहोंचे निसान॥ १॥ चेतो सबे सत वादियो, सुनियो सतगुरु मुख बान। धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान॥ २॥

आगमी सब खड़े हुए, दिन बोहोत रहे थे गोप।
आए धनी मेले मिने, प्रगटी है सत जोत॥ ३॥
पेहेले मंडल में मांगी मुझे, सो आए ब्याही इत।
कौल किया लिख्या शास्त्रों में,सो आए पोहोंची सरत॥ ४॥
मैं जो आई ब्याहन दुलहे को, दुलहा आए मुझ कारन।
बांधे पालवसों पालव, पाट बैठे दुलहा दुलहिन॥ ५॥
सत पर सत दोऊ परवत, तोरन बांधे हैं बंध।
बिन थलिऐ विवाह हुआ,हाथों हाथ जोड़े मूल सनमंध॥ ६॥
मंडल अखंड में मांड़वा, चौरी थंभ रोपे हैं चार।
सो थंभ थापे थिर कर, कहूं सो तिन को प्रकार॥ ७॥
एक व्रज दूजो रास को, दूजे दोए इन वैराट।
चारो थंभों चौरी रची, रच्यो सो नेहेचल ठाट॥ ८॥
एक बेर एक मांड़वे, मोर बांधियो सीस।
ब्याही बारे हजार को, और हजार चौबीस॥ ९॥
तीन फेरे दुलहे पीछे फिरी, चौथे फेरे आगल भई।
अब ए लीला सब गावसी, सब मिल करि हैं सही॥ १०॥

Scanned by CamScanner

चौदश और अमावस्या को श्री गुम्मट जी में और वदी चौथ और सुदी अष्टमी को श्री बाई जू राज मंदिर में झीलना।

राग गोड़ी – झीलणां

अणी हारे झीलण रंग सोहांमणां रे,
आपण झीलसूं वालाजीने साथ।
रामत रमी सहू आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास॥ १॥
श्री राज कहें स्यामाजी सुणो, तमारा मनमां जेह।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह॥ २॥
अंग उमंग उपाईने, भेला नाहिए ते भली भांत।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत॥ ३॥
वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए।
फले रस चढ्या कै भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए॥ ४॥
जल उछाले उछरंगमां, लेहेरडियों ते लेहेरें तरंग।
पसुपंखीना सबद सुहांमणां, कांई उलट पसर्‌यो अंग॥ ५॥
साथ मलीने भेलो थयो, कांई आव्यो आनंद मांहे।
अमें सखियो त्रट ऊपर, वालाजीनी ग्रही बांहे॥ ६॥
वागा वधारी कांठे मूकियां, कांई वस्तर पेहेर्‌यां झीलण।
सखी एक बीजीने आनंदमां, जल मांहें लागी ठेलण॥ ७॥
त्रट जोईने जलमां सांचर्‌या, साथ वालो स्यामाजी संग।
परियाणीने थया सहू जुजवा, जल मांहें कीजे आनंद॥ ८॥
एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ।
क्रीडा कीजे जलमां, विलसिए वालाजीने साथ॥ ९॥

जल उछाले उछरंगसुं, सहू वालाजीने छांटे।
वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सरवे नासंतियों कांठे॥
वली सांमी थाए सखियो, जल छांटतियो छोले।
वालोजी उछाले जल जोरसुं, त्यारे नासंतियों टोले॥ ११
वली आवतियों उमंगसुं, वालो वीट्यो ते चारे गम।
सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखे आवी गयो छे तम॥ १२॥
एणे समे हवे जे थयुं, बाई इंद्रावतीनूं काम।
विध विध विलसी वरसुं, भाजी हैड़ानी हाम॥ १३॥
एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पीउजी।
घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी॥ १४॥
स्यामाजीने नवरावियां, पेरे पेरे ते घणी प्रीत।
साथ सहू एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत॥ १५॥
सुंदरबाई इंद्रावती कांई रत्नावती संग।
लालबाई पेहेलां निसरया, सिणगार कीधा सरवा अंग॥
वस्तर भूषण स्यामाजीने, पेहेराव्या भली भांत।
अधबीच आवीने वालैए, कांई वेण गूंथी करी खांत॥ १७॥
सिणगार सरवे सजी करी, स्यामाजी घणुं सोहे।
दरपण लेईने हाथमां, मन वालानुं मोहे॥ १८॥
आसबाई कमलावती, कांई फूलबाई मल्या।
चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेला॥ १९॥

चार सखी मली श्रीराजने, कराव्या सिणगार।
वस्तर भूषण विधोगते, कांई सोभ्या ते प्राण आधार॥ २० ॥
एक बीजीने करावियां, सिणगार सरवे एम।
चितडु देईने में जोईयूं, कांई साथनों अतंत प्रेम॥ २१ ॥
परसेवा वस्तर साथना, नाहवा समे उतारया जेह।
श्रीराज बेठा ते ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह॥ २२ ॥
जमुनाजीने कांठड़े कांई द्रुमवेलीनी छांहे।
साथ सहू मलीने भेले थयो, आव्यो ते आनन्द मांहे॥ २३ ॥
बेठा मली आरोगवा, सोभित जुजवी पांत।
सो सखीसुं इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत॥ २४॥
झीलण रंग सोहामणो॥

श्रृङ्गार आरती

सांभल सैयर मारी बात, श्री प्राणनाथ पिउ विलसिये।
आपण कीजे मंगल चार, आरती उमंग भर कीजिये॥ १ ॥
राजित जुगल किशोर, सिंहासन कंचन मणि।
अति सुन्दर कंचन थाल, दीपक जोत राजित घणी॥ २ ॥
श्री इन्द्रावती उछरङ्ग, दीपक करें अखण्ड धणी।
बारे हजार सखि सङ्ग, शोभा शी कहूँ तेह तणी॥ ३ ॥
बाजत ताल मृदंग, गान करे सखी सहू मली।
भूषण करे झलकार, सुरता पहोंची मन रली॥ ४॥
एवी आरती अखण्ड स्वरूप, निरखि हरखि गुण गाइये।
श्री महामति युगल स्वरूप, निरखि निरखि सुख पाइये॥५ ॥

Scanned by CamScanner

श्रृङ्गार आरती

आरती करूं रे श्री जीवन मेहेराज, पूरण सुख काज।
अखण्ड धनी राज, जियावर नी आरती॥ १॥
धन धन कोख धनबाईनी, जे थी प्रगट्या लोक मां गवाय।
अक्षरातीत निज धाम धनी, जेणी सब्दातीत सोभाय॥ २॥
जिया वरनी आरती
कंचन थाल रतन दीवड़ो, केसर चोबा चन्दन माहे सार।
आरती करे रे बाई अमलावती, जेणे हैड़े हर्ष अपार॥ ३॥
नवल वरनी आरती
नख सिख सिनगार अंग सोहे, सोभा वरनी न जाय।
जेणे नयने अंग निरखिये, त्यां थकी अधक्षण अलगो न थाय॥
नवल वरनी आरती
नवलो सरूप ने नवलो रंगीलो वालो, नवलो सुख दातार।
जेणे बुद्धे आ जड़ चेतन थयो, ब्रह्माण्ड कीधो ब्रह्मकार॥५
नवल वरनी आरती।
बारे हजार सखि संग सोभे, करे परस्पर हांस।
चौबीस हजार सेवा मध्ये, होय विविध विनोद विलास॥
नवल वरनी आरती।
सब्दातीत सोभा सी कहूं, मारे सब्दे न पहोंचाए।
अक्षरातीत सोभा सी कहूं, मारे वचने न कहवाए।
छत्रीस हजारनी चरण रेणु पर, अंगना बलि बलि जाए॥ ७॥
नवल वरनी आरती।
आरती करूं रे श्री जीवन मेहेराज, पूरण सुख काज।
अखण्ड धनी श्रीराज, जियावरनी आरती॥

Scanned by CamScanner

बाल भोग

आवोजी मनमोहन प्यारे, सुख सबों अंग दीजे।
कीजे कृपा पिया जानिके अपनी, भोजन आज यहां कीजे ॥१
हंसि कर मन्दिर मांहि पधारे, उष्णोदक नवराये।
नवल किशोर किशोरी सुन्दर, आसन ऊपर सुहाये॥ २ ॥
चोवा चन्दन अतर अरगजा, केशर कुंम कुंम ल्याये।
चर्चे रूप जुगल रस भीने, बनिता चहुं ओर गाये॥ ३ ॥
सकल पाक बहु व्यंजन अथाने, मेवा मधुर मिठाई।
षट रस स्वाद रसोई रुचि के, थाल संजोय सखि ल्याई ॥ ४
रसिक राज सुन्दर वर श्यामा, आरोगे रुचि कीजे।
श्री जमुना जल कनक कचोले, प्रीतम प्यारे पीजे॥ ५ ॥
करके भोजन उठे हैं अचय के, सेज ऊपर धनी आए।
कपूर कस्तूरी सुवासित बीड़ी, आरोगे मन भाए॥ ६ ॥
नाना रंग प्रेम रस बिलसत, सुन्दर सब सुख दीजे।
नागर नवल नागरी श्री महामति, नेह नवरंग रस भीजे॥ ७ ॥

पान बीड़ा आरोगावनी

आरोग्या रस रूप जुगल धनी, बीड़ी तो सुन्दर लीधी रे।
कर सिनगार सिंहासन ऊपर, सिनगार आरती कीधी रे॥ १ ॥
चहुं ओर वृज वनिताऐं गावें, मोहन ना मन मोहे रे॥ २ ॥
आज हमारे घेर आनंद उच्छव, दीप दीवाली सोहे रे॥ ३ ॥
आज रंगनी रेल वही, मारो बालो जी मन्दिर बसिया रे।
श्री इन्द्रावती पतिरूप युगल धनी, नवरंग ना पिऊ रसिया रे॥ ४

दूसरे पहर का राजभोग

सैयां केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरें॥ १॥

ए सब इच्छा सों मंगावे, पर सखियों को सेवा भावे।
सैयां सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें॥ २॥

निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर,सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर।
मिलावा होत दिवालों के आगे,सैयां पान बीड़ी वालने लागे॥

मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन॥ ४॥

बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर।
श्री राज बैठे बातां करें, श्री स्यामा जी चित्त धरें॥ ५॥

सैयां परसपर करें हांस, लेवें धनी जी को विविध विलास।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही॥ ६॥

श्री धनी जी की आग्या पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं।
श्री धनी जी ने आग्या करी, सैयां चौकी आन आगे धरी॥ ७॥

सैयां दोय चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई।
श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछोरी कमर पर॥ ८॥

श्री राज चाकले आए, श्री स्यामाजी संग सुहाए।
श्री राज पखाले हाथ, श्री स्यामाजी भी साथ॥ ९॥

सैयां दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें।
मेवा अन्न ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आई॥ १०॥

Scanned by CamScanner

एक ले चली साक कटोरी, तापै छीन ले चली दूसरी।
तिनथें झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी ॥ ११ ॥
जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहूं किनपे।
इतथें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां ॥ १२
यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें।
सब मंदिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार॥ १३ ॥
सैयां दौड़त है साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी।
कै स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन॥ १४॥
कै विध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी।
इन समें की जो आवाज, सोभा धाम में रही विराज ॥ १५ ॥
दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सो तो लिए मन के भाई।
सब खेलें हांसी करें, आए धनी जी के आगे धरें॥ १६ ॥
या समें दौड़त भूषन बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें।
झारी लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रूमाल पोंछाई॥ १७॥
श्री स्यामाजी चल्लू करी, दोय बीड़ी दो मुख में धरी।
श्री राज उठ बैठे सिंघासन,संग स्यामाजी उठे ततखिन ॥ १८
युगल दोऊ आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए।
सैयां तले आरोगने गैयां,आरोग आये पान बीड़ी लैयां ॥ १९
सेज्या आये श्री जुगल किसोर, तब दिन हुआ दो पोहोर।

बीड़ी (आचवन)

पिया बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत है मुंदरी॥ १॥
बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हँसत।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो पिया बीच में बात करत॥२॥
एक लालक तम्बोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी न इन मिसाल॥ ३॥
लाल उज्जवल दोऊ रंग लिये, बीड़ी लई मुख अंगुरी नरम।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम॥ ४॥
नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार।
सो सुख देत आसिकों, जिनको नहीं सुमार॥ ५॥

मध्याह्न/रात्रि की शयन आरती

आरती करुँ सुन्दर बालाजी नी केरी,
मारे हैड़े के हरष न मावे॥ १॥
मारा बाला आगल ताल मृदंग झांझ जंत्र बाजे,
सखियां निरत करें अरु गावें॥ २॥
मारा बाला जी ने सुन्दर वदन सोहामनो।
कांई शोभा नो नहीं पार॥ ३॥
सब सखियां कहें मारा बालाजी ने ऊपर।
तन मन जीव करूं बलिहार॥ ४॥
सुन्दर स्वरूप जुगल दोऊ ऊपर,
श्री महामति जांय बलिहार॥ ५॥

Scanned by CamScanner

दिन की पौढ़ावनी

सिनगार करें देहेलान में, आरोगे और मन्दिर।
इतहीं दीदार नूर को, दिन पौढ़े पलंग अंदर॥

दोपहर के बाद सखियों का बन में खेलने जाना।

वन में वाक् विनोद

सैयां बैठी जुदे जुदे टोलें, करें रेहेस बातें दिल खोलें॥
तित कै विध रस उपजावें, कै विलास मंगल मिल गावें।
कै हंस हंस ताली देवें, यों कै बिध आनंद लेवें॥ १॥
कै बैठत छज्जों जाए, बैठें अंगसों अंग मिलाए॥
मुख बानी सों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें॥ २॥
रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो न जाय या मुख।
सरूप सोभा जो सुंदरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता॥ ३॥
कै बैठत मिलावें आए, बैठें अंगसों अंग लगाए।
सुख एक दूजीको उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें॥ ४
हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजी को देवें॥ ५॥
कै बैठत जाय हिंडोलें, अनेक करत कलोलें।
कै बैठत जाए पलंगें, बातां करत मिनों मिने रंगे॥ ६॥
यों अनेक विधें सुख नित, पियाजीको सदा उपजत॥ ७॥

चौथे पहर का उठापन

सब सैयां पोहोर पीछल, टोलें तीसरी भोम आवें चल।
मंदिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब।
तब आए सबे सुखपाल, स्यामाजी बैठे संग लाल॥ १॥

दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कै रंग।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिये जैसा जिन॥ २॥
या जमुनाजी या तालावें, आए खेलें जो मन भावें।
श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे॥ ३॥
जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नये नये रंग रेलें।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब॥ ४॥
सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें।
श्री राज स्यामाजी उठ कर, उतारे हैं बस्तर॥ ५॥
पेहेने बस्तर जो झीलन, राज स्यामा जी सैयां सबन।
इत एक घड़ी लों झीलें, जल क्रीडा कै रंग खेलें॥ ६॥
बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार कियो विवेक॥ ७॥

सन्ध्या समय के लिए रामतें

एक चित्रामन दिवालें बन, चढ़िए तिन पर धाए।
एक चुटकी लेके भागी ताली देके, कहे दौड़ मिलियो आए॥
एक गली घर में दे परिकरमें, उमंग अंग न माए।
एक का कपड़ा धाए के पकड़या, खैंच चली चित चाहे॥ २
छज्जे चढ़ एक दूजी देवें ठेक, यों कई ठेकतियां जाए।
एक दोऊ पांउं ठेकें खेल विसेकें, जानों लगत न छज्जें पाए॥
सखियां चढ़ धाए छज्जे न माए, खेल रच्यो इन दाए।
एक दिवालों घोड़े तित चढ़ दौड़ें, नए नए खेल उपाए॥ ४

Scanned by CamScanner

एक दूजी को ठेलें तीसरी हड़सेले, यो पड़ियां तीनों गिर।
कई और आए गिरें उपरा ऊपरें, उठ न सकें क्यों ए कर॥ ५ ॥
एक दौड़ियां जाए दई हांसिएं गिराए, हुओ ढेर उपरा ऊपर।
एक खेलते हारी जाए पड़ी न्यारी, खेल होत इन पर॥ ६ ॥
होवे इन बिध हांसी अंग उलासी, सूल आवत पेट भर।
एक सूल भर पेटे इन विध लेटें, ए देखो खेल खबर॥ ७ ॥
एक लेटतियां जाए सूल उभराए, उठावें कर पकर।
आई तिन हांसी मावे न स्वांसी, गिरी पकरे कर॥ ८ ॥
देखो इनको सूल मुख सनकूल, दरद न माए अंदर।
सखियां बेसुमार हुओ अंबार, ए देखो नीके नजर॥ ९ ॥
स्याम स्यामाजी आए,देख्यो खेल बनाए,सब उठियां हंसकर।
खेले महामती देखलावें इंद्रावती, खोले पट अंतर॥ १० ॥

रामत

एक अंग अभिलाखी देवे साखी, कहें वचन विसाल।
एक कर कंठ बांहें मिल लपटाए, खेलतियां करें ख्याल॥ १
एक आवें लटकतियां बोलें मीठी बतियां,चलें चमकती चाल।
एक आवें मलपतियां रंग रस रतियां, रहें आठों जाम खुसाल॥
एक आवें नाचतियां भमरी फिरतियां, दे भूखन पांउ पड़ताल।
एक गावती आवें तान मिलावें, कोई स्वर पूरें तिन नाल॥ ३
एक माहें धाम निरखें चित्राम, देखतियां थंभ दिवाल।
एक निरखें नंग नूर भूखन जहूर, माहें देखें अपनी मिसाल॥ ४

Scanned by CamScanner

एक मिल कर दौड़ें बांध के होड़ें, लंबी जहां पड़साल।
एक पिउ को देखें सुख विसेखें, कहें आनंद कमाल॥ ५॥
एक बैन रसालें गावें गुन लालें, सोभित मद मछराल।
एक बाजे बजावें मिलकर गावें, सुन्दर कंठ रसाल॥ ६॥
एक पूरे स्वर सारे हुंनर, छेक बालें तिन ताल।
एक पिउसों हंस हंस बातें करें रंग रस,करें होए निहाल॥ ७॥
एक देखें धनी रूप अदभुत सरूप, कहा कहूं नूर जमाल।
एक पीउसों बातें करें अख्यातें, रंग रस भरियां रसाल॥ ८॥
एक रस रीत उपजावें प्रीत, देखावें अपनो हाल।
एक अंग अलबेली आवें अकेली, हाथ में फूल गुलाल॥ ९॥
एक अटपटी हालें तिरछी चाले, हाथमें छड़ियां लाल।
एक नेत्र अनियाले प्रेम रसालें, रंग लिए नूरजमाल॥ १०॥
कहें महामती इन रंग रती, उठी सो हंस दे ताल।

श्री राज पोढे सुनत हें, नींद न आवे नेनन।।

इन बानी के सुनते, खुलत भिस्त के द्वार। आप

देखे ओरों दिखावहीं, पोहोंचे नूर द्वार पार।।
श्री धाम नव भोम हे, इन बानी के बीच में।
सो ठोर हे अखंड, पाइए इन बानी सें।।
हक हादी रूहें रहत हें, सो इन बानी में।
नित बिहार करत हें, सो इन बानी सें।।
इन बानी की बरकतें, सब दफे होत बलाए।
सदा सेतान कांपत, मिने पेठ न सके ताए।।

सन्ध्या वन्दना

वन्दौ सतगुरु चरण को, करूं प्रेम प्रणाम।
असुभ हरन मंगल करन, श्री देवचन्द्र जी नाम॥ १॥
श्री देवचन्द्र जी को दरस दियो, जो है पूरन रूप।
तारतम को तत्व कह्यो, हिरदे बैठि सरूप॥ २॥
धाम धनी सुअखंड हो, पावन पूरन नाम।
पर के परे परम पद, सो कहिये परनाम॥ ३॥
गुरू कंचन गुरू पारस, गुरू चंदन परमान।
तुम सतगुरु दीपक भये, कियो जो आप समान॥ ४॥
तुम स्वरूप तुममें स्वरूप, तुम स्वरूप के संग।
भेद तुम्हारो को लखे, ब्रह्मानंद रस रंग॥ ५॥
तुम केवट भानु वा देश के, देहु चक्षु आप समान।
दृष्टि तुम्हारी क्यों रहें, संशय तिमर अज्ञान॥ ६॥
जो पद नारायण भजे, ब्रह्मा, विष्णु, महेस।
महा विष्णु वांछित सदा, मोहे पहुंचाओ वा देस॥ ७॥
काल करम भव दुःख से, तुम्हीं छुड़ावन हार।
परमहंस पद देत हो, क्षर अक्षर के पार॥ ८॥
क्षर अक्षर के पार हैं, अक्षरातीत आधार।
बिन सम्बन्ध न पाइये, कोटिन करे आचार॥ ९॥
वेद थके ब्रह्मा थके, थकि गये सेष महेस।
गीता की जहाँ गम नहीं, वह सतगुरु को देस॥ १०॥

Scanned by CamScanner

चांद सूरज की गम नहीं, नहीं पावक को काम।
पहुँचे सो आवे नहीं, सोई मकुन्द निजधाम॥ ११॥
श्री प्राणनाथ निज मूलपति, श्री मेहेराज सुनाम।
तेज कुंवरि स्यामा युगल को, पल पल करूं परनाम॥ १२॥

झीलना सन्ध्या समय का

श्री जमुना जी के घाट में, अमृत वन पाट में।
करत क्रीड़ा जल जोयना, संग सोहे स्यामा॥
सच्चिदानंद चित चाहेना संग सोहे स्यामा॥ १॥
राजित किसोर किसोरी, सोभित जुगल जोड़ी। राज रसिक
पिया प्रेमना, संग सोहे स्यामा॥ सच्चिदानंद... २॥
सकल सिनगार किये, अजब तिलक दिए।
रंग रंगीले दोऊ रंगना, संग सोहे स्यामा॥ सच्चिदानंद... ३॥
प्रीत सो प्रीतम प्यारी, निरखत नवरंग वारी। श्री जी अखण्ड
सुख निज धामना संग सोहे स्यामा॥ सच्चिदानंद... ४॥

गौरी

खेलें श्री युगल किसोर वन में,खेलें श्री युगल किसोर॥ टेक
बारे हजार चालीस जुत्थ लेके, करत क्रीड़ा अति जोर॥ १
प्रथम पाट अमृत पधारे, बारह थम्भ चांदनी सोहे।
चार कोनें थम्भ रंग नीलवी, देख देख मन मोहे॥ २॥
पांच रंग दोऊ धाम तरफ के, केल तरफ पुखराज।
अक्षर तरफ माणिक थम्भ झलके, वट तरफ हीरा विराज॥
और कहूं विध सात घाट की, केल लिबोई अनार।
अमृत वन जांबू नारंगी, बट बड़ो है विस्तार॥ ४॥

Scanned by CamScanner

पुल महोल दोऊ परम मनोहर, वट केल अरस परस।
पाँच भोम और छठी चांदनी, घड़नाले नेहेरें दस॥ ५॥
केतिक सखी खेले राज स्यामाजी संग, केतिक खेले वन।
ललित लवंग लता द्रुम वेली, प्रफुल्लित कुसुम सुगंध॥
चमेली चंपा जुही मोगरा, केतकी कुसुमबी कई ओर।
काहू बनाई गुलाब की छड़िया, काहू गेंद चौसर॥ ७॥
पान फूल मेवा सब लेके, राज स्यामा जी ढिग आए।
बांकी दिन रह्यो घड़ी दो एक,तामें झीलना किये बनाए॥ ८
झीलना कर श्रृंगार साजत हैं, अरस परस उछरंग।
इन समै को विलास क्यों वरनों, नित नित नवले रंग॥ ९॥
ब्रह्मानंद लीला निज न्यारी, क्यों वरणों स्वपन देह संग।
श्री जी लाल लाड़ली ऊपर, वारी मैं अंगना अंग॥ १०॥

गौरी

कृष्ण नहीं अवतारी साधो, कृष्ण नहीं अवतारी॥ टेक॥
पूर्णब्रह्म सनातन दोय भुज, कहत है निगम पुकारी॥ १॥
वेद पुराण शास्त्र सब भाषें, साधु सकल संसारी।
पाँच तत्व गुण तीन लोक तें, हैं मथुरा निज न्यारी॥ २॥
लोक चतुर्दश हैं प्रलय वश, आदि अंत ओंकारी।
तब कहां कृष्ण कहाँ निज मथुरा, देखो मनहिं बिचारी॥ ३
गोपी कृष्ण अनादि एक हैं, जल तरंग ज्यों वारी।
कारण मूल रच्यो एक कारज, आय भई ब्रजनारी॥ ४॥

Scanned by CamScanner

तिन गोपिन की पद रज इच्छित, ब्रह्मा, विष्णु, त्रिपुरारी।
करि करि कोटि तपस्या बहु विध, त्रगुण थके पचिहारी ॥५

दश अवतार राजा होय वरते, विष्णु माया अनुसारी।
राम आदि अवतार होत हैं, सो बैकुण्ठ बिहारी ॥ ६ ॥

जाय द्वारका में राज कियो है, व्याही सोलह सहस्त्र कुमारी।
सो सम्पूर्ण वैकुण्ठ के ठाकुर, शंख चक्र गदा धारी ॥ ७ ॥

वेद ऋचा तलफत बृज छोड़ी, विरह दाह में जारी।
कृष्ण द्वारका काहे न बुलाई, गोकुल गोप कुमारी ॥ ८ ॥

लीला त्रिविध भई नाना विध, बाल तरुण वृद्ध वारी।
कहत मुकुन्द सद्गुरु समरथ बिन, कोई ना सके निरवारी॥

गौरी

क्यों ठाढ़ी नन्द पौरी ग्वालिन, क्यों ठाढ़ी नन्द पौरी ॥ टेक॥

बार बार इत उत फिरि आवत, विजिया खाइ भई बौरी।
नन्द नन्दन जी से कौन काम है,हमसे क्यों न कह्योरी ॥ १ ॥

सुन्दर श्याम सलोने सो ढोंटा, उन दधि लेन कह्योरी।
हमसे कह्यो तुम नेक खड़ी रहो, आपन बैठि रह्योरी ॥ २ ॥

नव लख धेनु हैं नन्द बाबा के, तेरो दधि लेन कह्योरी।
जोवन मदमाती फिरत ग्वालिनी, तें मेरो लाल ठग्योरी ॥ ३ ॥

इतनी सुनके निकस आए मोहन, दधि को मोल कहोरी।
परमानन्द रस रूप लुभानी, तेरो दधि भलो हे विकोरी ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

गौरी

आवत धेनु चराये वन से, आवत धेनु चराये॥ टेक॥
लीन्हें लाल ललित कर लकुटी, गौवन को गोहरावें॥ १॥
उड़ि उड़ि गौधुर परत वदन पर, सुन्दर परम सुहाये।
सुन्दर मुख पर रज लपटानी, कनक धूर छवि छाये॥ २॥
मोर मुकुट सिर कानन कुण्डल, केशर खौर खेंचाये।
बैजंती उरमाल विराजे, चंदन अगर चढ़ाये॥ ३॥
पीताम्बर फहरात वदन पर, सुन्दर परम सुहाये।
कटि पर लाल काछनी काछें, नटवर भेष बनाये॥ ४॥
नाचत गावत मुरली बजावत, आनन्द उमंग बढ़ाये।
हलधर सहित ग्वाल सब संग लिये, हंसत खेलत घर आये॥
कनक आरती साजि यशोमति, मोतिन थाल भराये। दास
'मकुन्द जी' को राज मिलो है, ज्यों निर्धनिया धन पाये॥ ६॥

गौरी

जाऊँ कहाँ महाराज शरण तजि, जाऊं कहाँ महाराज।
अनते ठौर कितहु नहीं हमको, चरण छोड़ि बृज राज॥ १॥
जो जो आए प्रभु शरण तुम्हारी, तिनके किये सब काज।
शरण मरण सुन्यो नहिं कबहुं, बड़े हो गरीब निबाज॥ २॥
पावन पतित निगम यश गावत, श्रवणन सुनत आवाज।
जो अघ पतित मिटे नहीं मेरो, तो विरदहि आवत लाज॥ ३
विनती करत मुकुन्द दीन द्विज, बस पतितन सिरताज।
दीन जानि प्रभु पार उतारो, लेहु चढ़ाय जहाज॥ ४॥

Scanned by CamScanner

गौरी

मुरली कौन बजावे द्वारे मेरे, वन्शी कौन वजावे॥ टेक॥
वांकी वांकी तान कहत मुरली में, राधे के गुण गावे॥ १॥
हाथ लकुटिया कांध कमरिया, नंदजू की धेनु चरावे।
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में दान चुकावे॥ २॥
पैठि पाताल काली नाग नाथ्यो, फन पर निरत करावें।
छत्रसाल नागर बलिहारी, चरण कमल बलि जावे॥ ३॥

गौरी

श्रीप्राणनाथ मन भाये, आली मोहि प्राणनाथ मन भाये।
विन्ध्याचल पर्वत के ऊपर, सुन्दर धाम सुहाये॥ १॥
गुम्मट बंगला वन्यो है धनीजी को, हीरन तखत जड़ाये।
रतन जड़ित पद्मावती सोहे, देव सकल ललचाये॥ २॥
विष की नदियां अमृत कीन्हों, सुख सवन पहुंचाये।
भजन कीरंतन होत रात दिन, सुनत मोक्ष फल पाये॥ ३॥
श्री ठकुराणी जी साथ सकल मिलि, जागनी रास खेलाये।
श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन, अमर सखी चँवर ढुलाये॥ ४॥

गौरी

छत्रसाल जी ने वाना बांधे, निज नाम शरण को आये।
चौदह लोक में आन चलाये, ऐसा द्वन्द मचाये॥ १॥
पण्डित वेद पुराण पढ़ैया, तिनहु के डिंभक भाने।
कोई दिन चली है काजी की बाजी, फेर हुकम तले आए॥

देवी और देवता छोड़े, छोड़ी है कुल की आशा।
कीन्हों एक संग साधुन को, जिनको श्री धाम में वासा ॥ ३ ॥
एते दिन माया भरमाया, ठीक लगन नहिं पाया।
सखी साकुण्डल के पिया प्रगटे,श्री धाम धनी लौ लाया ॥

गौरी

काहे न मंगल गावे जशोदा मैया, काहे न मंगल गावे ॥ टेक ॥
पूर्ण ब्रह्म अखण्ड अविनासी, सो तेरे धेनु चरावे ॥ १ ॥
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक, नारद ध्यान लगावें।
शेष सहस्त्र मुख रटत निरन्तर, सो वाको पार न पावे ॥ २ ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड के कर्ता, जप तप ध्यान लगाये।
ना जानो यह कौन पुण्य से, जसोमति गोद खेलाये ॥ ३ ॥
संध्या समय सामली मूरत, गौवन के संग आये।
मात जसोमति करत आरती, दरस सेवा सखि पाये ॥ ४ ॥

गौरी

नाम माला उर धारो, साधो भाई नाम माला उर धारो।
संझा समय शुद्ध चित्त करके, प्रभु को नाम चितारो ॥ १ ॥
चार पदारथ पाये अमोलक, सो वृथा नहीं हारो।
मानुष तन दुर्लभ है साधो, सो क्यों भूल गुजारो ॥ २ ॥
कृष्ण कृष्ण मुख रटत रात दिन, स्वांसहि स्वास पुकारो।
जिस देही प्रभु पूरन मिलिहें, सोई जनम तुम्हारो ॥ ३ ॥
कृष्णदास मुख कृष्ण वखानत, क्षर अक्षर से न्यारो।
पूरन ब्रह्म सनातन दोय भुज, मोहन मित्र हमारो ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

गौरी

वंशी धुन प्राण हरे, सुनत मुरली धुन प्राण हरे॥ टेक॥
गोप वधू श्रवनन सुनि धाई, टोना सहज परे॥ १॥
बिसरी सुधि शरीर सजन पति, पिता पुत्र बिसरे।
लोक लाज कुल कान विसर गईं, रही श्याम रट रे॥ २॥
बस्तर त्याग नगिन उठि धाईं, उलटे सिनगार करे।
चलि चलि गईं जहां श्याम मनोहर, मुरली अधर धरे॥ ३॥
लियो है लगाय श्याम उर अपने, विविध विलास करे।
दास 'मकुन्द' पिया मिलि प्यारी, बहुरि न आई घरे॥ ४॥

गौरी वाणी

पेहेले आप पेहेचानो रे साधो, पेहेले आप पेहेचानो॥ टेक॥
बिना आप चीन्हें पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो॥ १॥
पीछे ढूंढ़ो घर आपनों, कौन ठौर ठेहेरानो।
जब लग घर पावत नहीं अपनों,सो भटकत फिरत भरमानो॥
पांच तत्व मिल मोहोल रच्यो है, सो अंत्रीख क्यों अटकानो।
याके आस पास अटकाव नहीं, तुम जाग के संसे भानो॥ ३॥
नींद उड़ाए जब चीन्होगे आपको,तब जानोगे मोहोल यों रचानो।
तब आपै घर पाओगे अपनो, देखोगे अलख लखानो॥ ४॥
बोले चाले पर कोई न पेहेचाने, परखत नहीं परखानो।
महामत कहें माहें पार खोजोगे, तब जाए आप ओलखानो॥

Scanned by CamScanner

संध्या-स्मरण

संझा सुमिरन आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा वाचा कर्मणा, श्री जुगल चरण की आस॥ १॥
स्वांस स्वांस निज नाम जपो, वृथा स्वांस मत खोय।
न जानो इन स्वांस को, आवन होय न होय॥ २॥
तन दीपक मन ज्योति करूं, प्रेम घृत लौ लाय।
शोभा लखि श्री राज की, आरती करूं चित्त लाय॥ ३॥

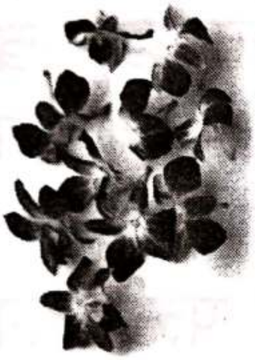

आरती बंदना

आरती

आरती कीजे श्री जी साहेब जी तुम्हारी, अक्षरातीत तुमहीं गिरधारी॥ १॥ तत्व गुणन को थाल बनाये, माणिक दीवा महा विष्णु धराये॥ २॥ गोत्र पिया के मंगल गाये, निराकार की ज्योति भराये॥ ३॥ हीरा नगन पर परना बसाये, ब्रह्म सृष्टि आनन्द सुख पाये॥ ४॥ मकुन्द श्री महामति पिया लखि पाये, वंश पिया पर वारी वारी जाये॥ ५॥

आरती

आरती एही है पुराण पुरुष पर, कर तुम निज अंग रूप प्रेम धर॥ १॥ पहली आरती करूं पुरुषोत्तम, जाको वेद गावत

Scanned by CamScanner

कर उत्तम ॥ २ ॥ दूसरी आरती अद्वैत सुहाई, जाको निगम अगम करि गाई ॥ ३ ॥ तीसरी आरती सच्चिदानंदा, जहाँ नहीं मोह माया दुख द्वन्दा ॥ ४ ॥ चौथी आरती अखण्ड अपारा, गुण निर्गुण क्षर अक्षर पारा ॥ ५ ॥ पाँचवीं आरती है निज सोई, जहाँ लीला नित्य विहार जो होई ॥ ६ ॥ आरती साजि श्री इन्द्रावती लाई, निज नवरंग परम पद पाई ॥ ७ ॥

आरती

आनंद आरती संझा कीजे, नवल किशोर निरखि सुख लीजे ॥ १ ॥ ब्रज भूषण निज नवल विहारी, ब्रजवाला आरती करें सारी ॥ २ ॥ बाल लीला बहु चरित्र सुहाये, शुक सनकादिक नारद गाये ॥ ३ ॥ ऋषि पत्नी नाग पत्नी बाला, स्तुति करें पारब्रह्म ग्वाला ॥ ४ ॥ वस्त्र हरण लीला तुम कीन्हीं, कुमारिका पति राख जो लीन्हीं ॥ ५ ॥ ब्रज राख्यो कर धरि गोवर्धन, सुरपति मान हरयो तुम जीवन ॥ ६ ॥ वत्स हरण लीला करि ऐसे, ब्रह्मा भेद लख्यो कहो कैसे ॥ ७ ॥ सखिन सहित द्वादस वन खेले, ब्रज वाला संग करी तुम केले ॥ ८ ॥ ब्रज के लोग परम बड़भागी, तिन संग लीला करी अनुरागी ॥ ९ ॥ लीला तुम्हारी साहेब सबसे न्यारी, कहिये कितेक जीवन हितकारी ॥ १० ॥ आरती साजि श्री इन्द्रावती लाई, निज नवरंग उमंग सों गाई ॥ ११ ॥

आरती

आरती यह सतगुरु पर कीजे, सतगुरु स्वरूप आप लखि लीजे॥ १ ॥ सोई सतगुरु ब्रज के वासी, ब्रजबाला संग सदा सुख रासी॥ २ ॥ सोई सतगुरु रास विलासी, खेलत रास अखण्ड अविनासी॥ ३ ॥ सतगुरु सोई श्री देवचन्द्र जी सुहाये, तेज तारतम आप ले आये॥ ४ ॥ सोई सतगुरु जीवन प्यारे, आदि अन्त लो किये उजियारे॥ ५ ॥ सतगुरु स्वरूप श्री इन्द्रावती राजे, निज नवरंग संग आप विराजे॥ ६ ॥

आरती

आरती युगल चिदानन्द केरी, तन मन आप वारने लेरी॥ १ ॥ जब नहिं त्रगुण मोह दुख द्वन्दा, तबहिं अखण्ड सत चिद आनंदा॥ २ ॥ प्रेम प्रवाह जानत नहिं कोई, जग उपजे के कारण दोई॥ ३ ॥ पहली आरती ब्रज में आवन, पूरन प्रेम पगे मन भावन॥ ४॥ दूसरी आरती रास विलासा, अक्षर बुद्धि कीन्हों निज वासा॥ ५॥ तीसरी आरती निज आवेसा, आये धनी जी ने कियो उपदेशा॥ ६ ॥ चौथी आरती बुद्धजी श्यामा, ल्याये ज्ञान परम निज धामा॥ ७॥ पांचमी आरती प्रीतम प्यारे, श्री प्राणनाथ परना पगु धारे॥ ८॥ सखियां जगाय रास रच्यो मण्डल, साथ सकल मिलि रमत साकुण्डल॥ ९ ॥ जीवन मोक्ष आठ विध दीन्हीं, सैयां रतन आरती कीन्ही॥ १०॥

Scanned by CamScanner

आरती

आनंद आरती संझा कीजे, नवल किशोर निरखि सुख लीजे॥ १॥ पहली आरती वृज में वासा, सब सखियन मिलि देख तमासा॥ २॥ दूसरी आरती रास में आये, अक्षर मनोरथ पूरन कराये॥ ३॥ तीसरी आरती श्याम सुहाई, सुर असुरन धनी सबन मिलाई॥ ४॥ चौथी आरती बुद्ध जी मन भाई, तारमत ज्योति करी रोसनाई॥ ५॥ पांचवीं आरती विजयाभिनन्दन, जागनी लीला कलियुग निकन्दन॥ ६॥ आरती यह श्री महामति गाई, 'आसादास' सुनत सुख पाई॥७॥

आरती

आरती अङ्ग चतुर्दश केरी, पांच स्वरूप मिल एक भई भेली। रास ही चरण प्रकास पिंडुरियां, षटऋतु घूटन कलस जंघन की॥ सनंध कमर कर कीरंतन सोहे, नाभि खुलासा उदर खिलवत की। हृदय तवाफ कंठ सागर छवि, मुख सिनगार नासिका सिंधी॥ श्रवण मारफत नयन सो क्यामतनामा, चौदह अंग मिल एक धनी की। श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन, प्रेम सखी वलि वलि चरणन की।

आरती

आरती कीजे जय जय अन्त न जाको,
अक्षरातीत नाम निज ताको॥ १॥
पूरण ब्रह्म सनातन सोई, जाकी इच्छा सों सब होई॥ २॥
ब्रह्म अनादि आदि नहीं जाकी, स्मृति वेद देत सब साखी॥ ३॥

Scanned by CamScanner

अविगत अमर अभय अविनासी, त्रगुन रहित बहु लोक निवासी ॥
ब्रह्मा विष्णु निरंजन देवा, शिव सनकादिक लखै नहीं भेवा ॥ ५
नारद शारद सुकमुनि शेषा, षट दरसन बहु भेष अलेखा ॥ ६
साध सिद्ध सब ऋषि मुनि गावें, अपरम्पार पार नहीं पावें ॥ ७
शब्द रहित जो अकथ कहानी, परमहंस विरले पहिचानी ॥ ८
परमहंस जो प्रभु पेहेचाने, मन वच कर्म चित्त और न आने ॥ ९
परम पुनीत परमपुर रह हीं, परमहंस जो यह सुख लह ही ॥ १०
सच्चिदानंद अखण्ड बिहारी, दास 'मकुन्द' सरन ब्रह्मचारी ॥

सद्गुरु आरती

जय जय सद्गुरु आरती तेरी,निर्मल दृष्टि करी जिन मेरी ॥ १
तारमत ज्ञान हाथ कर लीन्हों, क्षीर नीर को निर्णय कीन्हों ॥ २
पिंड ब्रह्माण्ड लखाये दोई,पूरण ब्रह्म बिन और नहिं कोई ॥ ३
मोह तत्व उपज्यो है सोई, जो उपज्यो सो तो रह्यो न कोई ॥ ४
बैठे सिंहासन श्री युगल बिहारी,युगल बिहारी पिया नवल
बिहारी, छवि निरखत श्री महामति बलिहारी ॥ जय जय...५

दै प्रदिख्यिणा अति घणी, करूं डंडवत प्रणाम ।
सहू साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम ॥
मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार ।
ओवारणे जाए इंद्रावती, मारा आतमना आधार ॥

भोग - राग काफी (वाणी कीरंतन)

कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम॥ १॥
प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईस्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार॥ २॥
नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार।
वैस्नव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार॥ ३॥
भोजन सरवे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक।
मेवा मिठाई अनेक अथाने, बिध बिध के बहु साक॥ ४॥
अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार।
प्रेम मगन होए गावें पियाजी के, धवल मंगल चार॥ ५॥
कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार।
कई रिखी मुनी वेद पढ़त हैं, बरतत जै जै कार॥ ६॥
जबकी माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब॥ ७॥
चारो तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार।
बाजे दुंदुभी भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बेसुमार॥ ८॥
जोत उदोत कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर॥ ९॥
प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्म सृष्टी, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन॥ १०॥

(अन्य भोग के लिए पृष्ठ ११ से १४ देखिए)

Scanned by CamScanner

महाराजा छत्रसाल जी द्वारा की गई पूर्ण ब्रह्म स्तुति

पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनंद अखंड अपारे।
सिव सनकादि आदि के इंछित, सेष न पावत पारे॥ १ ॥
अगम जानि के निगम कहाये, खोजि खोजि पचिहारे।
जानि के मूलधनी अंगना अपनी, सो घर आये हमारे॥ २ ॥
श्री ठकुराणी जी सखियन सुधा, लीन्हें संग पधारे।
त्रिगुण फाँस के फन्द परे ते, सो फन्दा निरवारे॥ ३ ॥
वारी वारी जाऊँ मैं अपने पिया पर, शोभा मुखहु ना आवे।
सिंहासन आसन बैठारे, छत्रसाल गुण गावें॥ ४ ॥

आरती संध्या "कंचन थाल" आरती उतारने की

कंचन थाल चहुँ मुख दिवला, दीपक ज्योति परकासी।
करत आरती श्री जियावर रानी, आनंद अंग उलासी॥ १ ॥
युगल स्वरूप सुन्दर सुखदायक, श्याम धाम धनी सोहे।
मंगल रसिक वदन की शोभा, निरखंता मन मोहे॥ २ ॥
सखियाँ निरत करें और गावें, उमंग अंग अपार।
ताल मृदंग झांझ जन्त्र बाजें,सखियां बोलत जय जय कार॥
बधावें मुक्ताफल सखियां, श्री जियावर स्याम सुहागी।
तन मन जीव निछावर कीन्हों, श्री महामति चरनों लागी ॥४

परिक्रमा दिनवार- देखिए पृष्ठ ७ से १०

Scanned by CamScanner

कोटान कोट दण्डवत करूं, कोटान कोट करूं प्रणाम।
कोटान कोट विनती करूं, मेरे धनी सुन्दरवर श्यामाजी श्याम।

॥ आरती राग-वसन्त ॥

श्री विजियाभिनन्द बुध जी की प्रार्थना (स्वरूप)

भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद बुधजी की आरती।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती ॥ १ ॥
दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनन्द विस्तारती।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ २ ॥
सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पियाकी विराजती।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई ने नवों खंडों आरती ॥ ३ ॥
झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती।
कलिजुग सैन्या सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ४
सप्तधात सुन्य मण्डल थाल, निरंजन जोत भई उजाल।
झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥ ५ ॥
पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनीके करम जाल।
चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥ ६ ॥
सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार।
विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥

आये धरमराए और इन्द्र वरुन, नारद मुन गंधर्व चौदे भवन।
सुर असुरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥८॥

आये सनकादिक चारो थंभ, लिये खड़े संग विष्णु ब्रह्मांड।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवो खंडों आरती ॥

जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१०

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या बिध।
इत आए बुध जी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥११

आए चारों संप्रदा के साधू जन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन,भई नई रे नवों खंडों आरती ॥

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी वेदांती,भई नई रे नवों खंडों आरती ॥१३

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी,बहत्तर फिरके आए अथरव वेदी।
आए सकल कैदी और बेकैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥

बुधजी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमिर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ायो असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती ॥

Scanned by CamScanner

स्वरूप चितवनी

सरूप सुंदर सनकूल सकोमल, रूह देख नैना खोल नूर जमाल। फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे, किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल॥ १ ॥ जामा जड़ाव जुड्या अंग जुगतें, चार हारों करी अंमर झलकार। जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों, मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार॥ २ ॥ लाल अधुर हंसत मुख हरवटी, नासिका तिलक निलवट भौंहें केस। श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना, ए देख दरसन आवे जोस आवेस॥ ३ ॥ बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक, पोहोंची कांड़ों कड़ी हस्त कमल मुंदरी। नखका नूर चीर चढ़्या आसमान में, ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी॥ ४॥ रोसनी पटुके करी अवकास में, चरन भूखन जामें इजार झांई। कहें महामती मोमिन रूह दिलको, मासूक खैंचें तोहे अरस माहीं॥ ५॥

निरत कृष्ण पक्ष का

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल। चौक मध्य अति सुंदर, क्यों कहूं मंदिर द्वार॥ १॥ तीनों तरफों मंदिर, आगूं दो दो थंभों की हार। बड़ा मोहोल अति सोभित, सुंदर अति सुखकार॥ २॥ थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मंदिर। बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अंदर॥ ३॥

Scanned by CamScanner

द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार॥ ४॥
पीठ पीछे जो मंदिर, कई रंग सेत दिवाल।
दाहिनी तरफ लाखी मंदिर, क्यों कहूं नकस मिसाल॥ ५॥
बांई तरफ दीवाल जो, मंदिर लिबोई रंग।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग॥ ६॥
हरी दिवाल जो मंदिर, सो सामी है नेक दूर।
चारों तरफों अर्स जवेर, करें जंग नूर सों नूर॥ ७॥
एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर॥ ८॥
राज स्यामाजी बीच में, बैठक सिंघासन।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन॥ ९॥
कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत।
हांथ पांउं अंग बालत, कही न जाए सिफत॥ १०॥
ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल॥ ११॥
पांऊ झांझर घूंघर बोलहीं, कांबी कड़ली बाजत।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत॥ १२॥
हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत।
और भूषन सबों अंगों, सोभित सब सूरत॥ १३॥
जिन विध पांऊ चलावहीं, सोई भूखन बोलत।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई न चलत॥ १४॥

Scanned by CamScanner

जो बोलावत घूंघरी, तो नाहीं झांझरी बान।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान॥ १५॥
प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान॥ १६॥
कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग।
एक रस सब गावत, नवरंग बाई के रंग॥ १७॥
हाथ धरत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत।
निरत करें कई विधसों, कई गुन कला ठेकत॥ १८॥
कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल।
इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूर जमाल॥ १९
कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत।
कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत॥ २०॥
नामें जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नये नये दिल धर॥ २१॥
मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र।
तानबाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर॥ २२॥
कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाई सेन।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन॥ २३॥
झरमरबाई बजावत, माहें झरमरी अमृती।
कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती॥ २४॥
खड़िया रूहें निरत में, इत उछरंग होत।
तरफ चारों जवेरन में, निरत देखे अधिक जोत॥ २५॥

Scanned by CamScanner

निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल॥ २६॥
ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और।
बानी बाजे निरत आवाजे, होत निरत कई ठौर॥ २७॥
साम सामी पसु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए॥ २८॥
यों सब ठौर जंग अरस मैं, कहूं केती विध किन।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन॥ २९॥
ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन।
तो देखो चित्रामन धामकी, करत निरत सबन॥ ३०॥
एह खेल एक पोहोर लग, होत हमेसा इत।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत॥ ३१॥
मेहेबूब को रिझावने, अनेक कला साधत।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत॥ ३२॥
थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत।
इन समें पसु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केल करत॥ ३३
बोहोत बातें बीच अरस के, किन विध कहूं इन मुख।
जो बैठी इन मेले मिने, सोई जाने ए सुख॥ ३४॥
ऐसी चारों तरफों कै बैठकें, अन्दर या गृदवाए।
ए सुख अखंड अरस के, क्यों कर कहे जाए॥ ३५॥

Scanned by CamScanner

निरत शुक्ल पक्ष

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी, अमने जोयानी खांत।
साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेष देखी एक भांत॥ १॥
तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूड़ी थाए नार।
तमे वचन गाओ प्रेमनां, पासे सुर पुरूं रसाल॥ २॥
सुणों सुंदर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाए।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माए॥ ३॥
जेणी सनंधे पांउ भरो, अने अंग वालो नरम।
भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचुं फरूं तेम॥ ४॥
हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाए।
वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाए॥ ५॥
कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ।
वेण वेणा रबाबसों, कांई ताल बाजे पखाज॥ ६॥
करतालमां बाजे झरमरी, श्रीमंडल हाथ।
चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ॥ ७॥
भूषण बाजे भली भांतसुं, धरती करे धमकार।
सबद उठे सोहांमणा, उछरंग वांध्यो अपार॥ ८॥
निरत करी नरम अंगसुं, कांई फेरी फर्या एक पाए।
छेक वाले छेलाईसुं, तता थेई थेई थाय॥ ९॥
एक पोहोर आनन्द भरी, कांई रंग भर रमिया एह।
साथ सकलमां वालाजीए, रमतां कीधां सनेह॥ १०॥
आनंद घणो इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए।
अवसर छे कांई अति घणों, वाला रासनी रामत मांहें ॥ ११

Scanned by CamScanner

ते सरवे चित धरी, अमसुं रमो अति रंग।
कहे इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग॥ १२॥

[रात्रि शयन आरती : आरती करूं मारा वालाजी ने – देखिए पृष्ठ ५०]

आरती

नगन जड़ित मुक्ता मन सोहें, थाल संजोयो धारी।
कोटन थाल लिए सब सखियां,जगमग जोत उजयारी॥ १॥
लिये थाल हम नवल लाड़ली, करत आरती प्रिय की।
गावें मिल मंगल सुख विलसत,करत वारने जिय की॥ २॥
लेकर दीपक ऊपर फेरें, सब लालन तन हेरें।
मानो भंवर झुंड झुक झुक के, मुख पंकज को घेरें॥ ३॥
भूखन वसन जोत उजियारी, नव मन्दिर में छायो।
निरतत बहु बाजे बाजत हैं, विध विध भाव बतायो॥ ४॥
शिव सनकादिक शेष हूँ थाके, ब्रह्मा विष्णु न पावें।
सो अखण्ड लीला निज आरती, पंचम निशदिन गावें॥ ५

परिक्रमा रात्रि

पिया प्यारी के चरित्र बखानो,चरण कमल हिरदे में आनो॥
परम धाम जाको निज धामा, करत बिहार राज सखि श्यामा॥
दरवाजे मेहेराव विराजे, चौखट हरि अनूप छवि छाजे॥ ३॥
दर्पण रंग किवाड़ सुहाये, दोऊ ओर मणि प्रकाश दिखाये॥ ४॥
चबूतरा झलकत है चार, दो ऊपर दो चौक मंझार॥ ५॥
जाम्बू अमृत अनार ए तीनों, एक अलंग भर इनको चीन्हों॥ ६॥

Scanned by CamScanner

फेर रोंश आगे फिर आई, वटपीपल के वृक्ष सुहाई ॥ ७ ॥
फूल बाग में बैठे जाई, सकल सुगन्ध वास महकाई ॥ ८ ॥
लाल चबूतरा बैठे श्री राज, दीपक सिंहासन सकल समाज ॥
ऊपर छत्र रतन नंग सोहें, सुन्दर साथ देख मन मोहे ॥ १० ॥
पशु बड़े मुजरे को आवें, शीष नवाय परम गुण गावें ॥ ११ ॥
चेहेबच्चा जल उठत तरंगा, जुगल साथ झीले बहुरंगा ॥ १२ ॥
ताड़वन दस हास में होई, जागे इलम लखे सखि सोई ॥ १३ ॥
चार खूंट चेहेबच्चा देखे, एक एक ते अधिक विशेषे ॥ १४ ॥
छै छै हजार मंदिर दोऊ हारें, ब्रह्म सृष्टि निश दिवस निहारें ॥
चार हजार वाखर विध न्यारी, कहि न सके वेदों मतिहारी ॥
एक चौक है साठि मोहोल को, मध्य चबूतरा चौसठ पहल को ॥
चौसठ थंम रतन के फिरते, सन्मुख सूर सूर से लड़ते ॥ १८ ॥
चार द्वार है चारों ओरी, बरनो कहा मोरी मति थोरी ॥ १९ ॥
लगे कठेड़ा मीना कारी, मखमल तकिया धरे बहु भारी ॥ २० ॥
बिछो है दुलीचा रंग सुरंगा, बेल फूल झलकत बहुरंगा ॥ २१ ॥
बैठे साथ तखत को घेरि, हरो चन्द्रवा ऊपर फेरि ॥ २२ ॥
सिंहासन की ज्योति सुहाई,तेज प्रकाश आकाश न माई ॥
ता ऊपर बैठे पिया प्यारी, चरण कमल पर जाऊँ बलिहारी ॥
कहाँ लग कहूँ प्रभु की छविताई, देखत कोटि चन्द्र ढक जाई ॥
पूरण ब्रह्म पूरण अविनाशी, करत बिहार, अखण्ड सुखराशि ॥
दे परिक्रमा चरणों लागे, अशुभ जाल माया के भागे ॥ २७ ॥
श्री महामति सद्गुरु दया कीन्हें,अंमर सखी चरण गहि लीन्हे ॥

Scanned by CamScanner

सन्ध्या बड़ा परिक्रमा

लीला कहूँ अपने पिया केरी, श्री धाम धनी जू से लागी मति मेरी ॥ १
जल थल इंड पवन द्रुम बेली, खग मृग ठौर ठौर भये भेली ॥ २
चेतन अंग भंग न होई, इच्छा करे फल पावे सोई ॥ ३
राते नीले पीले कारे, श्वेत फूल फूले बहु भारे ॥ ४
पत्र खिरे ना अधिका होई, ये उपमा पावे नहि कोई ॥ ५
जमुना जल दोनों ढिग राजे, लहर लहर पर उठत आवाजे ॥
केल लिवोई अनार वन सोहे, पाट घाट देखत मन मोहे ॥ ७
जाम्बू नारंगी बन्यो वट भारी, आगे तलाब परम सुखकारी ॥ ८
कंचन मणि हीरा नंग लागे, पन्ना लाल सीढ़ियन के आगे ॥ ९
घेर चहुँ दिश मढ़ी वनि आई, ताकी गुरजे लगत सुहाई ॥ १०
बहु रंग पत्र घने नंग लागे, देखत वने पर कहत न आवे ॥ ११
चह बच्चा जल ऐसे भासे, उठत किरण बरसत मोतिया से ॥ १२
ता बीच मोहल राजजी को सोहे, वरने न शेष शारदा कोहे ॥ १३
शिव सनकादि आदि नहि पावे, ब्रह्मा विष्णु नेति कर गावे ॥ १४
अविनाशी प्रभु अपरम्पारा, सोई जियावर धनी जी हमारा ॥ १५
जिन अर्धांग पिया जी की प्यारी, श्रीठकुराणी जी परम सुखकारी ॥
तिनकी सुरता सहस्त्र हम बारा, सकल भांति पिया करत विहारा ॥
करत विहार हार लटकावें, करसों कर गहि ताल मिलावें ॥ १८
गावत गीत प्रीतिसों भारी, पिया छवि निरखत प्रेमे प्यारी ॥ १९
घेरि घेरि परिक्रमा फिरि आवे, छूटि जाय और फिर जुरि आवे ॥ २०
यह सुध मोहि श्री इन्द्रावती दीन्हीं, अपनी जान जगाय पिया लीन्हीं ॥
कहत साकुण्डल युगल गति भारी, श्री धाम धनी जी की छवि पर वारी ॥

Scanned by CamScanner

संध्या बड़ा परिक्रमा

रसिया रसिक पिया प्राण हमारे,युगल सहित सखियन के प्यारे॥
करत विहार धाम वन माहीं, सघन कुंज वन गहेवर छाहीं॥२॥
जमुना जल के उठत तरंगा, चलत समीर सुगंधन सङ्गा॥३॥
दोउ पुल मोहोल दोउ वन हारे, फूल सहित फल लटकत डारें॥
अमृत वन जल पाट सुहाये, युगल साथ सिनगार कराये॥५॥
पशु पंखी मीठे स्वर गावें, तान मान सब गति उपजावें॥६॥
फेर बैठि सुखपाल सिधाये, चौक चांदनी अधिक सुहाये॥७॥
दोऊ चबूतरा जोत अभंगा, हरे वृक्ष और लाल सुरंगा॥८॥
सीढ़ियां चढ़त मन भये उछरंगा,बीस थंभ युग पांचों रंगा॥
लाल दिवाल और पड़सालें, लगी चांदनी रूहें निहालें॥
भीतर पैठि चौक जब देखें, थम्भ अठ्ठाइस बन्यो है विशेषें॥
चार चौक फिरे आई हारें, देख देख चित अटकत द्वारें॥१२॥
मन्दिर साठि चौक जब देखें, मध्य चबूतरा जुगत विशेषे॥१३
चौसठ थंभ गिरद दोउ हारे,लग्यो है कठेड़ा जड़ित किनारे॥
बिछो है दुलीचा रंग सुंरगा, तकिया पशमी धरे बहु रङ्गा॥१५॥
बैठे युगल तखत पर सोहे, सुन्दर साथ देख मन मोहे॥१६॥
दै परिक्रमा शीश नमावैं, परम सनेह अंग भरि आवें॥१७॥
गहि बहियां पिया ढिग बैठावें,अरस परस दोऊ प्रेम बढ़ावें॥
हंसि हंसि पिया जी पूछे कुशलाता,ब्रज रास और जागनी बाता॥
श्री महामति ऐसी जुगति जगाये,सखी त्रिलोक चरण लपटाए॥

(परिक्रमा : दिन वार, देखिए पृष्ठ ७-१०)

Scanned by CamScanner

मध्य रात्रि का स्वरूप (कृष्णपक्ष)

श्री राज श्री ठकुरानी जी, तीसरी भोम के नीले पीले मन्दिर से पौढ़े से उठे तखत पर विराजमान भये। पोहोर दिन पिछला बांकी रह्यो। आपन सब सखियां आए आए के कोई वट पीपल की चौकी से, कोई फूलबाग से, कोई नूरबाग से, कोई लाल चबूतरा से, कोई खड़ो कली से, कोई ताड़वन से, कोई ताड़वन के हिंडोले से, कोई बड़े वन से, कोई मधुवन से, कोई महावन से, कोई पुखराज से, कोई पुखराज की तरहटी से, कोई बंगलों से, कोई श्री जमुना जी के सातों घाटों से, कोई कुन्जवन से, कोई कुन्जवन की रेती से, कोई होज कोसर तालाब से, कोई होज कोसर के टापू से, कोई पश्चिम की चौगान से, कोई निज धाम नव भोम दसमी आकासी से, बारे हजार चालीस जुत्थ सब सखियाँ आय आय के, श्रीराज श्री ठकुराणी जी के चरणों लागी। छठ्ठी भोम के सुन्दर सुखपाल, तरह जिनकी तखतरवां की, इच्छा स्वरूपी नूर के सुंदर सुखपाल, तीसरी भोम के झरोखे में, आय मुकाविल भये, एक सुखपाल में श्री राज श्री ठकुराणी जी विराजमान भए, एक एक सुखपाल में दो दो सखियां जोड़े जोड़े अन्तरिक्ष इच्छाचारी मन वेगी नूर के सुन्दर सुखपाल श्री अक्षरातीत की आसमान में सवारी छाय रही। कोई सुखपाल श्री राज श्री ठकुराणी जी के दाहिनी तरफ। कोई सुखपाल श्री राज श्री ठकुराणी जी के

बाई तरफ। कोई आगे कोई पीछे, चारों तरफों नूर के सुन्दर सुखपाल चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों खूब खुशाली खिलौने खेल करते चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों वानर बाजे बजावते नगारे निशान लिए चले जाते हैं – कई हजारों लाखों करोड़ों जमीन के पशु पक्षी जमीन पर, आसमान के पशु पक्षी आसमान पर। कोई राज राज करते, कोई धनी धनी करते। धनी के गुण गावते, रिझावते, छड़ी फिरावते, हुकुम जमाते चले जाते हैं। श्री अक्षरातीत की तमाम सवारी आसमान में भराय रही। आप श्री राज श्री ठकुराणी जी साथ समस्त को लेके पाट के घाट पधारे। तहाँ छः घड़ी लों साथ रमे खेले बांकी दो घड़ी दिन रह्यो। एक घड़ी में झीलना किये, एक घड़ी में सिनगार किये। सुन्दर श्री ठकुराणी जी को सिनगार, सेन्दुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंङ्ग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाही की चरणिया। सुन्दर श्री राजजी को सिनगार, सेंदुरिया रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौड़ी, नीलो ने पीलो बीच के रंग को पटुका, केशरियां रंग जड़ाव की इजार, सुपेत रङ्ग जड़ाव को जामा। श्री युगल स्वरूप नख सिख लों सिनगार साजि के सायंकाल के समय सुखपाल में विराजमान भये। सुखपाल श्री निजधाम की तरफ को चलाये। वन की खूबी देखते दिखलावते, आसमान की खूबी तमासा देखते दिखलावते, सुखपाल आय आय

Scanned by CamScanner

के चांदनी चौक में उतारे, सुखपालों को आज्ञा दई, छठ्ठी भोम के देहेलान में पधारे। पशु पक्षियों को आज्ञा दई बड़े वन के बिखे पधारे, खूब खुसालियन को आज्ञा दई बंगलों के विषे पधारे। आप श्री युगल स्वरूप साथ समस्त को लेके, भोम भरे की सीढ़ियां चढ़के धाम दरवाजे में होय के, अठ्ठाइस थम्भ के चौक में होय के, रसोई की हवेली में आय विराजमान भये। तहां नाना प्रकार के मेवा मिठाई आरोग के, श्री जमुना जल चुल्लू कर पानों के बीड़ा लिए। साथ समस्त मेवा मिठाई आरोग के श्री जमुना जल चुल्लू कर पानों के बीड़ा लिए, हँसते खेलते, श्याम श्वेत के बीच में सुन्दर सिढ़िया शोभित, बहुत साथ इत आय के चढ़ उतर करत। चढ़त दादरे प्रथम भोम से दूसरी भोम, दूसरी भोम से तीसरी भोम, तीसरी भोम से चौथी भोम। तहाँ निरत की बाखर में नवरङ्ग बाई ने निरत को बागो पेहरयो, श्याम रङ्ग जड़ाव की साड़ी, आंबा रस मानिन्द कंचुकी, पांच पटे की चरणिया, सब सोलह सिनगार साजि के, अपनी जुत्थ मिलाय, बाजन्त्र मिलाय, सप्त सुरन सो नृत्य आरम्भ कियो। खड़ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद इन सप्त स्वरन सों गाये। श्री राजजी श्री ठकुरानी जी पोहोर रात लों नवरङ्ग बाई जी को नृत्य देखे। ता पीछे चढ़त दादरे पांचवी भोम, मध्य परवाली रंग मन्दिर में सुन्दर नूर की चौकी पर चारों चरण जोड़े धर के सुन्दर

Scanned by CamScanner

सुख सेज्या पर विराजमान होय पौंढ़े। आपन सब सखियां आय आय के श्री राज श्री ठकुरानी जी के चरणों लाग लाग के श्री राज श्री ठकुरानी जी को स्वरूप हृदय में लेके, सखियां सब आप अपने मन्दिरों पधारी, श्री राजजी सबों मंदिरों पधारे। होत सेज्या नित विहारे। यह दोऊ स्वरूप चित्त के विषे राखिए, इन चरणों बेर बेर लागिये।

मध्य रात्रि का स्वरूप (शुक्लपक्ष)

श्री राज श्री ठकुरानी जी, तीसरी भोम के नीले पीले मन्दिर से पौढ़े से उठे तखत पर विराजमान भये। पोहोर दिन पिछला बाकी रहयो। आपन सब सखियां आए आए के कोई बटपीपल की चौकी से, कोई फूलबाग से, कोई नूर बाग से, कोई लाल चबूतरा से, कोई खड़ोकली से, कोई ताड़वन से, कोई ताड़वन के हिंडोले से, कोई बड़ेवन से, कोई मधुवन से, कोई महावन से, कोई पुखराज से, कोई पुखराज की तरहटी से, कोई बंगलों से, कोई श्री जमुना जी के सातों घाटों से, कोई कुन्जवन से, कोई कुंजवन की रेती से, कोई होज कोसर तालाब से, कोई होज कोसर के टापू से, कोई पश्चिम की चौगान से, कोई श्री निजधाम नव भोम दशमी आकाशी से, बारे हजार चालीस जुत्थ सब सखियां आय आय के, श्री राज श्री ठकुरानी जी के चरणों लागीं। छठ्ठी भोम के सुन्दर सुखपाल, तरह जिनकी तखतरवां

की इच्छा स्वरूपी नूर के सुन्दर सुखपाल, तीसरी भोम के झरोखों में आय मुकाबिल भये। एक सुखपाल में श्री राज श्री ठकुराणीजी विराजमान भये। एक एक सुखपाल में दो दो सखियां, जोड़े जोड़े अन्तरिक्ष इच्छाचारी, मनवेगी नूर के सुन्दर सुखपाल श्री अक्षरातीत की आसमान में सवारी छाय रही। कोई सुखपाल श्री राज श्री ठकुरानी जी के दाहिनी तरफ। कोई सुखपाल श्री राज श्री ठकुराणी जी के बांई तरफ। कोई आगे कोई पीछे चारों तरफों नूर के सुन्दर सुखपाल चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों खूब खुशालियाँ खेल खिलौने करते चले जाते हैं। कै हजारों लाखों करोड़ों बानर बाजे बजावते, नगारे निशान लिये चले जाते हैं। कै हजारों लाखों करोड़ों जमीन के पशु पंखी जमीन पर, आसमान के पशु पंखी आसमान पर, कोई राज राज करते, कोई धनी धनी करते, धनी के गुण गावते, रिझावते, छड़ी फिरावते, हुकुम जमावतें चले जाते हैं। श्री अक्षरातीत की तमाम सवारी आसमान में भराय रही। आप श्री राज श्री ठकुरानी जी साथ समस्त को लेके जहाँ इच्छा हुई तहाँ पधारे। तहाँ छः घड़ी लो साथ रमें खेले बाकी दो घड़ी दिन रह्यो, एक घड़ी में झीलना किए, एक घड़ी में सिनगार किये। सुन्दर श्री ठकुरानी जी को सिनगार, सेंदुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाही की चरणियां। सुन्दर श्री राजजी को सिनगार, सेंदुरिया

रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौड़ी, नीलो न पीलो बीच के रंग को पटुका, केशरिया रंग जड़ाव की इजार, सुपेत रंग जड़ाव को जामा, श्री युगल स्वरूप साथ सब नख सिख लो सिनगार साजिके, पोहोर रात्रि लो वन में रमे खेले। रामतें करी, तहाँ नाना प्रकार के मेवा मिठाई आरोग के, श्री जमुना जल चुल्लू कर पानों के बीड़ा लिए सुन्दर सुखपाल में विराजमान भए। सुखपाल श्री निजधाम की तरफ को चलाये। वन की खूबी देखते दिखलावते, आसमान की खूबी तमाशा देखते दिखलावते, सुखपाल आय आय के पांचवी भोम के झरोखे में उतारे। सुखपालों को आज्ञा दई छट्ठी भोम के देहेलान में पधारे। पशु पक्षियों को आज्ञा दई बड़े वन के विषे पधारे। खूब खुसालियन को आज्ञा दई बंगलों विषे पधारे। आप श्री युगल स्वरूप साथ समस्त को लेके, पांचवी भोम मध्य परवाली रंग मंदिर में पधारे। तहाँ सुन्दर नूर की चौकी पर चारों चरण धर के, सुन्दर सुख सेज्या पर विराजमान होय पौढ़े। आपन सब सखियां आय आय के श्री राज श्री ठकुरानी जी के चरणों लाग लाग के, श्रीराज श्री ठकुरानी जी को स्वरूप हृदय में लेके, सखियां सब आप अपने मंदिरों पधारे। श्री राज जी सब मंदिरों में पधारे, होत सेज्या नित बिहारे, यह स्वरूप चित्त के विषे राखिये, इन चरणों बेर बेर लागिये। –प्रणाम–

Scanned by CamScanner

भोग

फरतण फेर वाजोटिया, रंग पाकी परवाली।
कांबी पड़गी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली॥ १॥
चारे गमां वाल्या चाकला, बैठां वाली पलाठी।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहुं, जे आतमाए डीठी॥ २॥
श्री ठकुराणीजी श्रीराजसों, भेलां बेसे सदाए।
आसबाई सुंदरबाई, बैठां एणी अदाए ॥ ३॥
हाथ पखाल्या पात्रमां जुजवी जुगते।
पासे साथ बैठो मली, सहु कोई एणी विगते॥ ४॥
ऊपर वन रंग छाईयो, जाणे मंडप रचियो।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग माहें मचियो॥ ५॥
थाली धात वसेकनी, जुगतें अजवाली।
लाल जड़ाव लोटे जल, लई प्रेमे पखाली॥ ६॥
वाटका फूल कचोलिया, ते तो जुगते जड़िया।
अजवाली ने पखालिया, थाली माहें मलिया॥ ७॥
वली नितारी अजवालिया, रूमाल संघाते।
प्रीसे छे सारी सूखडी, विध विध कै भांते॥ ८॥
बाई भागवंती भली पेरे, प्रीसे सुखड़ी सारी।
कहूं केटली घणी भांतनी, सरवे मूकी संभारी॥ ९॥
पकवान सरवे प्रीसी करी, साक मूक्या छे घणां।
कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां॥ १०॥

Scanned by CamScanner

साक तेॆ सूकवणी तणां, कै सेक्यां सुतलियां।
विध विध मेवा वन फल, अति उत्तम गलियां॥ ११॥

आरोग्या अति हेतसुं, राज साथ संघाते।
प्रीसंतां प्रेम जो मैं दीठो, ते न केहेवाए भांते॥ १२॥

कंचन रंग झारी भरी, जल बीच माहें लीधो।
श्री इन्द्रावतीजीने कोलियो,श्री राजे मुख माहें दीधो॥ १३

हरष थयो जे एणे समे, साथे सहु कोइए दीठो।
हंसिया रमिया साथसों, घणों लाग्यो छे मीठो॥ १४॥

आरोग्या आनंदसों, जेणे जे भाव्यां।
दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लई आव्यां॥ १५॥

ते लीधां चल्लू कराविया, बैठा वांसे तकियो देई।
थाल बाजोट उपाडिया, लोयुं मुख रूमाल लेई॥ १६॥

फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली।
ऊपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली॥ १७॥

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ॥ १८॥

आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख।
बेठा मली वातों करवा, वाणी लेवा सुख॥ १९॥

कहें इंद्रावती साथजी, वाले विलास जे कीधां।
चढी आव्या अंगे अधिका, वचे विरह जो दीधां॥ २०॥

Scanned by CamScanner

संध्या अवसर (कृष्णपक्ष)

हुओ संझा को अवसर, राजस्यामाजी बैठे सिनगार कर॥ १ ॥
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी के आगे धावें।
उछरंगतियां आवें आगे, राजस्यामाजी के पांउ लागें॥ २ ॥
पन्द्रह दिन खेले बन, पंद्रह दिन सुख भवन।
अब कहूं भवन को सुख,जो श्री धनीजी कह्यो आप मुख॥
बनथें आए सिनगार कर, संझा तले की भोम मंदिर।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी॥ ४ ॥
निरत करें नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें॥ ५ ॥
कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन।
पांऊ ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे॥ ६ ॥
जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पांऊं चलावें।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन॥ ७ ॥
जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे॥ ८ ॥
जब बोलावें सरवो अंगे, भूखन बोले सबे एक संगे।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छबि जुदी सबों की सोहावें॥
भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान।
क्यों कर कहूं ए निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत॥ १० ॥

Scanned by CamScanner

अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें।
सुंदरियां सोभा साजें,सो तो धनीजी के आगे बिराजें॥ ११ ॥
निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान।
इन लीला में आयो चित्त,छोड्यो जाए न काहूं कित॥ १२॥
छुटकायो भी न छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटे।
इत बहुत लीला कहूं केती,सोई जाने लगी जाए जेती॥ १३
थंभ दीवालों नंगो तेज जोत, जानो निरत सबों ठौर होत।
पिया पीछल मंदिर सेत दीवाल, तामें कई रंग नंग विसाल॥
दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दीवाल दिल साखी।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें स्याम सेत रंग लाल॥ १५
सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहें धनीको रंग रस॥ १६॥
पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख अग्या करके बोलावें।
इतहीं थे आग्या करी, पांउ लाग सेज्या दिल धरी॥ १७॥
दई अग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्री राज स्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे॥
ए मंदिर रंग परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत॥ १९॥
पीछल बीसक पीउ पासे रहियां,सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सब मंदिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे॥ २०॥

Scanned by CamScanner

अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चितको।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवें सारी रात॥
रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती॥ २२॥
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती।
पिया जी कहें श्री इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती॥ २३॥
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जाने धाम में पैठियां, ए तो घर ही में जाग बैठियां॥ २४॥

सन्ध्या अवसर (शुक्ल पक्ष)

हुआ संझा को अवसर, राजस्यामाजी बैठे सिनगार कर॥ १॥
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी के आगे धावें।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजी के पांउ लागे॥ २॥
पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करे।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास॥ ३॥
ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रेज।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग॥ ४॥
इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगे।
इत नित विलास विसाल, पीछे आए बैठे सुखपाल॥ ५॥
इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत।
घरों आए सुखपाल सारे,राजस्यामाजी पांचमीं भोम पधारे॥

इतहीं थें आग्या करी, पांउ लाग सेज्या दिल धरी।
दई आग्या सबों बड़ भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्री राजस्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे॥
ए मंदिर रंग परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत॥ ८॥
पीछल बीसक पीउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सब मंदिरों पधारें, होत सेज्या नित्य विहारे॥ ९॥
अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवे चाह्यो चितको।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवे सारी रात॥ १०॥
रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती॥ ११॥
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती।
पिया जी कहें श्री इन्द्रावती, तेज तारतम जोत करावती॥ १२॥
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिन सों धाम दरवाजा खोलती।
सैंया जाने धाम में पैठियां, ए तो घर ही में जाग बैठियां॥१३

पौढ़ावनी (कृष्ण-पक्ष की)

रंग परवाली पिया जी को मन्दिर,
रंग परवाली पिया जो को मन्दिर॥ टेक॥
चौथी भोम निरत की बाखर,
नवरंग बाई निरत करें अन्दर॥ १॥

झमक झमक पग धरत धरनि पर,
मन्दिर बीच उठत स्वर झांझर॥ २॥
बारह हजार सखियन में बिहरत,
पूर्णानन्द पिया सुख कंदर॥ ३॥
जुगल स्वरूप सुख सेज्या शयन करें,
मखमल तकिया धरे अति सुन्दर॥ ४॥
प्रागदास बलि जाय चरण की,
सोय रही सखियां चरण धर हिय पर॥ ५॥

पौढ़ावनी कृष्ण पक्ष की

भोम पांचवीं आये, पौढ़ो पिया भोम पांचवी आये।
देख निरत भोम चौथी, उठे दोऊ अंक लाये॥ १॥
दोऊ ओर प्यारी कंठ भुज धर, सरस अंग सुहाय।
चलत चितवत रंग भीने, मंद मंद मुसकाय॥ २॥
करत हांस बिलास बहुविध, रीझ रिझाबत ताये।
छके हिडोंले अजब खोले, परस पर लपटाये॥ ३॥
भोम परम सुरंग चेतन, जड़ित सुन्दर ताय।
मध्य सच्चिदानन्द सेज्या, वरनो कहा उपमाय॥ ४॥
नवल सुख सिनगार सजि, दोउ, प्रेम पुंज परवाहे।
जहां होत आनन्द की झकोरे, अंगों अंग सुख पाये॥ ५॥
रस रीत वास सुबास खटरूत, नित नवल सुखदाय।
श्री महामति निरखि किशोर सूरत, वारी नवरङ्ग जाय॥ ६॥

Scanned by CamScanner

पौढ़ावनी

मदन मोहन श्याम, पौढ़ो पिया, मदन मोहन श्याम।
आनन्द होय चरणार्विंद भजो, सकल पूरण काम॥ १॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि द्वारे, राज भोग विश्राम।
उमापति सुखदेव नारद, रटत निशदिन नाम॥ २॥
सकल कला प्रवीण मोहन, सङ्ग श्यामा जी श्याम।
कहत कृष्णदास गिरधर, अखंड है परमधाम॥ ३॥

पौढ़ावनी

पधारो मेरे बालाजी रङ्ग भरी रैन।
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाऊं, सब अङ्गों सुख देन॥ १॥
लटक-मटक पिया चाल चलत हैं, ठुमकि ठुमकि पग देन॥ २॥
कब की खड़ी मैं अरज करत हों, क्यों न सुनो मेरी बैन॥ ३॥
येहेल सखी अब देर न कीजे, चरण कमल चित्त देन॥ ४॥

पौढ़ावनी

राज के गुण गाऊं, मैं अपने श्याम के गुण गाऊं।
गुण गाऊं चरनन चित लाऊँ, बहुरि न भवजल आऊं॥ १॥
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाऊं, बंगलन फूल वा भराऊं॥
सेज सुरंगी पर पियाजी पौढ़ाऊं, करसों बीड़ी अरुगाऊं॥ ३

हेत करके तरवा सोहराऊं, कर सों बिजना डोलाऊं॥ ४॥

मीठी मीठी बात करत पिया हमसों,

सुन सुनके सुख पाऊं॥ ५॥

कहत 'मुकुन्द' पिया मिले हमसों,

हंसि हंसि कंठ लगाऊं॥ ६॥

पौढ़ावनी

सोय रहे श्याम सखियन सङ्ग मोहोलन॥ टेक॥

आय सखियां सब झरोखो उतरी,

छठी भोम गये सुख पालन॥ १॥

विदा किये प्रभु खूब खुशाली,

ले शिर हुकम चले सब बंगलन॥ २॥

पशु पक्षी आज्ञा सब पाये,

आये सबहि जहां बन सघनन॥ ३॥

युगल स्वरूप सुख सेज शयन कर,

नख शिख शोभा लसे अङ्ग गहनन॥ ४॥

अतिसों प्रेम प्रीतिसों प्यारी,

गहि दोऊ हांथ लगाये हिय चरनन॥ ५॥

'प्रागदास' वलि जाय चरण की,

लीला होत जहां तीन पोहोरन॥ ६॥

Scanned by CamScanner

पौढ़ावनी

पिया जी मैं पलंग बिछाऊं राज तुम पौढ़ों,
तुम पौढ़ो राज खासा ओढ़ाऊं॥ टेक॥
पचरंगी पाटी तलाई सिरहने,
गाल मसुरियां फूलडे सेज्या बिछाऊं॥ १॥
चौवा चन्दन अतर लगाऊं,
सजि सिनगार सेज्या पर आऊं॥ २॥
चापों चरण तली ले हुलसों।
मधुरे स्वर राग विहाग सुनाऊं॥ ३॥
कृष्ण जी खेल करत सखियन सों,
नैन की सेंन स्याम सेज बुलाऊं॥ ४॥
छत्रसाल नागर बलिहारी,
श्री इन्द्रावती पति सेज पधराऊं॥ ५॥

पौढ़ावनी

पौढ़ो श्री राज अवार भई है॥ टेक॥
सेज सम्हारी दोय पलंग की, आधी ऊपर रैन गई है॥ १॥
श्री जी हेत सों वचन सुनावत, धाम स्वाद में रूह रही है।
साथ श्रवण महाराज सुनत है, सुरंग सबकी रुह मगन भई है॥
अर्ज करत मुसकाय लाड़ली, पिया हेरत लखि बात लई है।
उठि पिया चाल चलत रंग भीने,सबहिं समाज को सीख दई है॥
पिया धरत पग सेज सुरंगी, सब सखियन को बात कही है।
अपने अपने मन्दिर पधारो, भोम पांचवी रतनमयी है॥ ४॥

Scanned by CamScanner

झूले श्रीराज हिंडोले पौढ़त, धन उन भाग जो सेवा में रही है।
'कृष्णदास' नित्य चरण सोहरावत, दिन दिन बाढ़त प्रीत नई है ॥

आनन्द मङ्गल

सदा आनन्द मङ्गल में रहिये, सदा आनन्द मङ्गल में रहिये। महाप्रसाद और चरणामृत, ये सुख साथ ही में पइये ॥ १ ॥ इश्क सुराही प्रेम का प्याला, अन्दर आतम छकि रहिये। तन सोवे रूह निशदिन जागे, धाम धनी के चरणों रहिये ॥ २ ॥ अष्ट पहर दिन चौसठ घड़िया, निशदिन पिउ पिउ पिउ कहिये। छत्रसाल भजो धाम धनी को, और देवन सों क्या चाहिये ॥ ३

अक्षर को खेल लख्यों जब से

अक्षर को खेल लख्यों जब से, तब से बिछड़यो परिवार हमारो। आय पड़ी छल के ग्रह में, सोई भूल गयो पुरुषोत्तम प्यारो ॥ ४ ॥ नागर नींद उड़ाए दयी, जब ढूंढ़ लियो छत्रसाल दुलारो। लघुराम सखी परनाम करें, 'परना के धनी' को परनाम हमारो ॥ ५ ॥

कातनी का दृष्टांत

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम।
कातन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम ॥ १ ॥
वचन कहे बड़े मुखथे, पर तूं तो समया न भूल।
तूं कात बारीक धनीयका, ए तातें पावेगी मूल ॥ २ ॥

अजूं तें पाओ न कातया, इत चाहिएगा सेर भर।
जब उठेगी कातन से, तब बोहोर चाहेगी अवसर॥ ३॥
ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल।
अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल॥ ४॥
जो तूं उठी काते बिना, आए इन अवसर।
कहा करेगी इन नींदको, जो ले चलसी घर॥ ५॥
अब अजु न जागे जोर कर, जो ऐसी तुझ पर भई।
धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई॥ ६॥
कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान।
दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान॥ ७॥
फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत।
तूं लेसी सोहाग धनीयको, तेरे बारीक इन सूत॥ ८॥
ए रेहेसी अधबीच कातना, दिन आए समे करे भंग।
न देखत सैयां चलियां, जो हुती तेरे संग॥ ९॥
अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ।
ए मीहीं सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ॥ १०॥
अब नींद करे जिन तूं, ए नींद देवे दुहाग।
उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पिउ सोहाग॥ ११॥
ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा होसी एह।
तूं पेहेचान पिउ अपना, वार फेर जीव देह॥ १२॥
अब ले स्याबासी सैयन की, कर तूं ऐसी भांत।
एह मिहीं सूत सोहागका, सो रात दिन ले कात॥ १३॥

Scanned by CamScanner

भाग-दो

नित्यपाठ, प्रगटन समारोह, गरबा, दानलीला, बसंत, फाग, किरंतन, दान, पंचक, आत्मिक भोग एवं अन्तर्ध्यान वाणी

श्री प्रगट वानी

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें।
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन ॥ १ ॥
अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार।
अपने धनी श्री स्यामा स्याम, अपना बासा है निज धाम ॥
सोई अखण्ड अक्षरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अक्षर।
अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास ॥ ३ ॥
ए बानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ।
ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याये धामथें वचन ॥
सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर।
तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास ॥ ५ ॥
अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन।
बिना कारन कारज नहीं होए, सो कहूं याके कारन दोए ॥ ६ ॥
ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी।
नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।
नाहीं निराकार नाहीं सुंन, ना निरगुन ना निरंजन ॥ ८ ॥

ना ईस्वर ना मूल प्रकृति, ता दिन की कहूं आपाबीती।
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत ॥ ९ ॥

नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्माण्ड उपजत खपत।
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस ॥ १० ॥

कई विध खेले यों प्रकृत, आप अपनी इछासों खेलत।
या समे श्री बैकुंठ नाथ, इछा दरसन करने साथ ॥ ११ ॥

अक्षर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास।
तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अक्षर का जेह ॥ १२ ॥

तब हम जाए पियासों कही, खेल अक्षर का देखें सही।
जब एह बात पियाने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी ॥ १३ ॥

मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर।
धनी कहें घरकी न रेहेसी सुध, भूलसी आप ना रेहेसी ए बुध ॥

तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम।
तब हम फेर धनीसों कह्या, कहा करसी हमको माया ॥१५ ॥

तब हम मिलके कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार।
खेल देखन की हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर अग्या भई ॥

ए कहे दोऊ भिंन भिंन, खेल देखन के दोऊ कारन।
उपज्यो मोह सुरत संचरी, खेल हुआ माया विस्तरी ॥ १७ ॥

इत अक्षर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
या में महाविस्नु मन मन थें त्रैगुन, ताथें थिर चर सब उतपन ॥

Scanned by CamScanner

या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार।
जो आग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर॥ १९॥
ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों उपजे हम बृजवधू जन।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी॥
जेती कोई हैं ब्रह्मसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर दृष्ट।
कंसके बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की॥
सुरत विस्नुकी चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए।
पीछे फिरे केहेके हकीकत,अब दोए भुजा की कहूं विगत॥
मूल सुरत अक्षर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस॥ २३॥
दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अक्षर जोस धनी धाम।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन॥
बाल चरित्र लीला जोबन, कई विध सनेह किए सैयन।
कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख॥ २५॥
ए कालमायामें विलास जो करे, सों पूरी नींद में सब विसरे।
पूरी नींद को जो सुपन, काल माया नाम धराया तिन॥ २६॥
तब धाम धनिऐं कियो विचार,ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार।
मूल वचन की नाहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध॥ २७॥
एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद तब दई उड़ाए।
अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन॥२८॥
तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।
तामसियां राजसियां चलीं, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं॥

Scanned by CamScanner

और कुमारिका ब्रज बधू संग जेह, सुरत सबे अक्षर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम॥

बेन सुनके चली कुमार, भवसागर यों उतरीं पार।
इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहि, अंग याके रास में नांहिं॥

या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही।
ए जो अग्यारे बरस लों लीला करी, कालमाया तितही परहरी॥

कछु नींद कछु जाग्रत भए, जोगमाया के सिनगार जो कहे।
जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास॥ ३३॥

जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले।
जोगमाया में बाढ्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस॥

फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अक्षर॥ ३५

कौन वन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध॥ ३६॥

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग।
या विध रास भयो अखंड, थिर चर जोगमाया को ब्रह्माण्ड॥

तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भईं मृतक समान।
जीव ना निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास॥ ३८॥

विरह सैयोंने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत।
तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद॥

आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार।
दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत॥ ४०॥

Scanned by CamScanner

कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनन्द भयो जोलों प्रात।
रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह ॥
पीछे जोगमाया को भयो पतन, तब नींद रही अक्षर सैयन।
ब्रज लीला सों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित ॥ ४२ ॥
अक्षर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदासिव कह्यो।
ब्रज रास दोऊ ब्रह्माण्ड, ए ब्रह्मलीला भई अखंड ॥ ४३ ॥
ब्रज रास लीला दोऊ मांहिं, दुख तामसियों देख्या नांहिं।
प्रेम पियासों न करे अंतर, तो ए दुख देखें क्यों कर ॥ ४४ ॥
कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस।
ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन ॥ ४५ ॥
कालमाया को ए जो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्माण्ड।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अक्षर की सुरत का सब ॥
याही सुरतकी सखियां भई, प्रतिबिंब वेदरूचा जो कही।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सो क्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब ॥
जो ऊधोने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन।
याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह ॥ ४८ ॥
अक्षर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो।
ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत ॥ ४९
जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों
होए। ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल ॥ ५० ॥
सारे अरथ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत।
याही इंड में श्री कृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन ब्रज मथुरा रहे ॥

Scanned by CamScanner

दिन अग्यारे ग्वाला भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे॥ ५२॥
गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो।
कालाग्रह में दरसन दिए जिन,आए छुड़ाए बंध थें तिन॥५३॥
वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतार्यो भेख किए अस्नान।
जब राजबागे को कियो सिंगार,तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार॥
आए जरासिंध मथुरा घेरी सही,तब श्री कृष्णजी को अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णु मय भए निरधार॥
तब बैकुंठमें विष्णु ना कहे, इत सोले कला संपूरन भए।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार॥५६॥
सिसुपाल की जोत बैकुंठ गई, समाई श्रीकृष्ण में तित ना रही।
आउध अपने मंगाए के लिए, कई विध जुध असुरों सो किए॥
मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोहोंचे विष्णु बैकुंठ घर।
अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह॥
उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर।
इन ब्रह्माण्ड को एह कारन, सुनियो आतम के श्रवन॥५९॥
रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत।
यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार॥
कुंवरबाई माता को नाम, उत्तम काइथ उमरकोट गाम।
आए श्री देवचंदजी नौतन पुरी, सुख सबों को देने देह धरी॥
इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग।
अंग मूल उपजी ए द्रष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कई कष्ट॥ ६२॥

Scanned by CamScanner

चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध।
कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम ॥ ६३ ॥
कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवामें ना कियो भंग।
कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन ॥ ६४ ॥
पिया किए अति प्रसंन, तीन बेर दिए दरसन।
तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दई ॥
धरयो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर।
इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी ॥ ६६ ॥
दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुंन के पार के पार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दई बड़ाई ॥ ६७ ॥
सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार।
श्री धाम धनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग ॥
श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्माण्ड।
ए सब हिरदे में चढ़ आए, ज्यों आतम अनुभव होत सदाए ॥
अब ए केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार।
अक्षरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर ॥ ७० ॥
मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार।
इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर ॥ ७१ ॥
ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होय।
सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याइयां इत, ना तो ए लीला दुनिया में कित ॥
ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनियां क्यों कर लहे।
गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर ॥

Scanned by CamScanner

कर विचार पूछे वचन, नीके अरथ लिए जो इन।
जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान ॥७४॥

अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए।
सनेहसों सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी॥

तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढना अपना साथ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम ॥७६॥

हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम।
तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पारके वचन॥

कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी।
मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर॥

तरंग बड़े मेर से होए, इत खड़ा न रेहेने पावे कोए।
लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहें देत भमरियां फेर॥ ७९॥

आड़े टेढ़े मांहें बेहेवट, विक्राल जीव मांहें विकट।
दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट॥ ८०॥

ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए।
हाथ ना सूझे सिर न पाए,इन अंधेरी से निकस्यो न जाए॥८१

चढ्यो मायाको जोर अमल, भूलियां आप मांहें घर छल।
ना सुध धनी ना मूल अकल,इन मोहजल को ऐसो बल ॥८२॥

वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हदको संसार।
त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार॥८३॥

ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोहके आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार।
तब श्री धनीजीएं कहें वचन, बेहेर दृष्ट होसी रोसन॥८४॥

Scanned by CamScanner

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेटके करसी भोर।
प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन ॥ ८५ ॥
साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी।
साथ माहें इत आरोगसी, विध विध के सुख उपजावसी ॥ ८६ ॥
अचरा पकड़ पीउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी।
ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार ॥ ८७ ॥
तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार।
तब आवसी ब्रह्मसृष्ट, जाहेर निसान देखसी द्रष्ट ॥ ८८ ॥
ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम।
जिन सेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान ॥ ८९ ॥
तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घने रंग।
सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचान के धाम धनी हुए गलित ॥
साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार।
मैं श्री सुन्दरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन विध कहूं ॥
कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम।
मों पर धनी हुए प्रसंन, सोंपे धामके मूल वचन ॥ ९२ ॥
आदके द्वार ना खुले आज दिन, ऐसा हुआ ना कोई खोले हम
बिन। सो कुंजी दई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ ॥ ९३ ॥
मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप। आतम
संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करी मोहे सुध ॥ ९४ ॥
श्री धनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।
ए पांचों मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत ॥ ९५ ॥

Scanned by CamScanner

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ परवान। याके मगज
माएने हम पास, अंदर आएके खोले प्राणनाथ॥ ९६॥
आप भी न खोले दरबार, सो मुझसे खोलाए कियो विस्तार।
मोहे दई तारतम की करनवार, सो कांहू न अटकों निरधार॥
सब संसेको कियो निरवार, कोई ससां ना रह्या वार के पार।
रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊं जगाए॥
द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब।
जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो॥ ९९॥
या भली या बुरी, जिनहूं जैसे फैल जो करी। तब आगूं आई
सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी॥ १००॥
तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग।
करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप॥ १०१॥
विस्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार।
ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख॥ १०२॥
ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनिया थी बिना अंकूर।
ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर॥ १०३॥
श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनिया सब एक।
किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो॥ १०४॥
श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस।
तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो॥ १०५॥
सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और। पियाके
विरहसों निरमल किए, पीछे अखण्ड सुख सबोंको दिए॥
ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई ना होसी कित।
ना तो कै उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड॥ १०७॥

ए तीन ब्रह्माण्ड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब।
इन तीनों में ब्रह्म लीला भई,ब्रज रास और जागनी कही ॥ १०८ ॥
ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों ब्रज को सुख लियो सैयन।
सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए॥ १०९ ॥
कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध।
जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख॥
जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर।
तब उपज्यो आनंद सबों करार,ले नजरों लीला नित विहार॥
इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
धनी महामत हंस ताली दे, साथ उठा हंसता सुख ले॥ ११२ ॥

श्री कृष्ण भक्ति (राग धन्यासरी)

पर न आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।
प्रसिद्ध प्रगट पाधरी, किवता किव करंत॥ १ ॥
कोट करो नरमेध, अश्वमेध अनंत।
अनेक धरम धरा विखे, तीरथ वास वसंत॥ २ ॥
सिद्ध करो साधना, विप्र मुख वेद वदंत।
सकल क्रियासूं धरम पालतां, दया करो जीव जंत॥ ३ ॥
व्रत करो विध विधना, सती थाओ सीलवंत।
वेख धरो साध संतना, गनानी गनान कथंत॥ ४ ॥
तपसी बहु विध देह दमो, सर्वा अंग दुख सहंत।
पर तोले न आवे एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत॥ ५ ॥
मेहेराज कहे मुख ए धंन, जो वली रुदे रमंत।
चौदे भवन ते जीतियो, धंन धंन ए कुलवंत॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

श्री मेहेर सागर – सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत॥ १॥
हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग॥ २॥
पूरी मेहेर जित हककी, तित और कहा चाहियत।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत॥ ३॥
मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम॥ ४॥।
ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर॥ ५॥
दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखर होत हक से दूर॥ ६॥
मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहिं।
आखर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहिं॥ ७॥
मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।
पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत॥ ८॥
दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत॥ ९॥
सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर॥ १०॥
इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखे दुख दूर।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर॥ ११॥

Scanned by CamScanner

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित॥ १२॥
अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक॥ १३॥
जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद॥ १४॥
मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र॥ १५॥
बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन॥ १६॥
बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम॥ १७॥
जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखर।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर॥ १८॥
ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत॥ १९॥
बीच नाबूद दुनीय के, आई मेहेर हक खिलवत।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत॥ २०॥
बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत।
ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत॥ २१॥
ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत।
जो किन कानों न सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत॥ २२॥

Scanned by CamScanner

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हकके दिल।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल॥ २३॥
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक॥ २४॥
बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।
निमख न छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब॥ २५॥
जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर॥ २६॥
बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।
अंकूर सोई हक निसबती, माहें बसत तजल्ला नूर॥ २७॥
ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।
मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम॥ २८॥
मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम॥ २९॥
काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक॥ ३०॥
मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फिरस्तन॥ ३१॥
मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान॥ ३२॥
दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत॥ ३३॥
सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत।
मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत॥ ३४॥

Scanned by CamScanner

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ॥ ३५ ॥
मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम।
मेहेरें क्यामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम ॥ ३६ ॥
मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार ॥
जो मेहेर ठाडी रहे, तो मेहेर मापी जाए।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥ ३८
मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर ॥ ३८ ॥
बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ॥ ४० ॥
जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।
अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए ॥ ४१ ॥
निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होए पेहेचान ॥ ४२ ॥
सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूं किताब ॥ ४३ ॥
ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥ ४४ ॥
महामत कहें ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर।
सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर ॥ ४५ ॥

Scanned by CamScanner

श्री मूल मिलावा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन॥ १॥
याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केल॥ २॥
सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहिं।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहिं॥ ३॥
चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत॥ ४॥
कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए॥ ५॥
चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर॥ ६॥
कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग॥ ७॥
चारों तरफों एक एक रंग के, तैसी तरफों चार।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार॥ ८॥
ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर॥ ९॥
और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज॥ १०॥

Scanned by CamScanner

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल॥ ११ ॥
चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन॥ १२
और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग।
द्वार नीलवी संग दोऊ पाच के, करें साम सामी जंग॥ १३
दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास।
दो थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास॥ १४
थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक॥ १५ ॥
हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल॥ १६ ॥
पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए॥ १७ ॥
ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के।
सो चारो तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए॥ १८ ॥
चारो तरफों चन्द्रवा, चौसठ थंभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच॥ १९ ॥
माहे बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस॥ २० ॥
इन चौक बिछाई गिलम, तिन पर सिंघासन।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन॥ २१ ॥

Scanned by CamScanner

झलकत सुंदर गिलम, अति सोभित सिंघासन।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन॥ २२॥
लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर॥ २३॥
जेता एक कठेड़ा, सबमें सुंदर तकिए।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले॥ २४॥
जिन बिध बैठियां बीच में, याही विध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए॥ २५॥
किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत॥ २६॥
पाइए इन तखत के, उतम रंग कंचन।
छे डांड़े छे पाइयों पर, अति सुंदर सिंघासन॥ २७॥
दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसों दिस देखत ए॥ २८॥
एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग॥ २९॥
तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन॥ ३०॥
चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार॥ ३१॥
तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए॥ ३२॥

Scanned by CamScanner

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन॥ ३३॥

नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैना क्योंए न होए त्रपत॥ ३४॥

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार।
बैठे सुंदर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार॥ ३५॥

जरे जिमी की रोसनी, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान॥ ३६॥

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भागे न हाम॥ ३७

ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई॥ ३८

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर।
जोतें जोत सब मिल रही, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर॥ ३९॥

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।
पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत॥ ४०॥

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए पर आतम।
सो पर आतम लेय के, बिलसिए संग खसम॥ ४१॥

महामत कहें ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन॥ ४२॥

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रुच रुच के, एही तुमारा विश्राम॥

पंच रोसनी प्रकरण

राग सिघूड़ो १ :

चतुर चौकस चेतन अति चोपसों, कूवत कर सब अंग कमर कसे। सुंदर सेज्या सनकूल तन रूह रची, मासूक दिल मोमिन मोहोल माहें बसे ॥ १ ॥ मन तन जोबन चढ़ता नौतन, आया अमरद आसिक इस्क गंज ले। अधुर अमृत मुख दंत रसना रस, नित नए सुंदर सब देखे चढ़ते ॥ २ ॥ निलवट बंके नैन नासिका श्रवण, कौल फैल हाल नित नवले देखाए। रूह भी रंग रस चंचल चपल गत, मोहन मोही मोहनी मह हो जाए ॥ ३ ॥ भाखती महामती अर्स रूहें उमती, पूरन कर प्रीत प्रेमें पोहोंचाई। अर्स वाहेदत खिलवत खसम की, हुज्जत निसबत लिए इत आई ॥ ४ ॥

राग सिघूड़ो (२)

नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर। नूर श्रवण गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर ॥ १ ॥ नूर मुख चौक मांडनी अतिनूर में, नूर वस्तर नूर भूखन जहूर। नूर जोवन रोसन नूर नौतन, नूर सब अंगों उद्योत नूर पूर ॥ २ ॥ नूर चरन कमल नूर हस्तक, नूर सोभा सबे नूर सिनगार। नूर सिर पाग नूर कलंगी दुगदुगी, नूर हिए हार नूर गंज अंबार ॥ ३ ॥ नूर हक सहूर मजकूर नूर महामत, नूर ऊग्या बका नूरका सूर। सब नूर रूहें नूर हादी नूर में, नूर नूर में खैंच लई हकें हजूर ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

राग सिघूड़ो (३)

हुब मेहेबूब की आसिक प्यास ले, चाहे साफ सराब सुराई सका। पीवते पीवते पिउके प्याले सों, हुई हाल में लाल पी मस्त बका॥ १ ॥ दिल परस सरस भयो अरस इलाही, दोऊ चुभ रहे दिल सों दिल मिल। न्यारी न होए प्यारी आपमारी, चल विचल न होए वाहेदत असल॥ २ ॥ लगी सो लगी आतम अंदर लगी, यों अंतर आतम जगी जुदी न होए। सरभर भई पर आतम यों कर, यों तेहेदिली मिली छोड़ सके न कोए॥ ३ ॥ महामत दम कदम न छूटे इन खसम के, हुआ मोहोल मासूक का मेरे दिल माहीं। एक अव्वल बीच आई सो एक हुई, आखर एक का एक मोहोल बीच और नाहीं॥ ४ ॥

राग सिघूड़ो (४)

नूर नगन चेतन भूखन रचे, अंग संग देखे सब चढ़ते रोसन। यों खैंच खड़ी करी इलम खसम के, लई जोस फरामोस से होस वतन॥ १ ॥ सब अंग आसिक के इस्क सों रस बसे, बढ़त बढ़त बीच आए बका। यों आई उमत इस्क भरी अर्स में, पीवे साफ सुराही सांई हाथ सका॥ २ ॥ हकें अब लिए फेर अंधेर से इन बेर, रूहें मोमिन पोहोंचियां अरस माहें तन। बृज रास जागनी तीनों सुख देयके, मोमिन तन किए धंन धंन॥ ३ ॥ भनत महामती हक दिल मारफत की, पोहोंचाई इन न्यामतें उमत खिलवत। क्यों कहूं सिफत बरकत वाहेदत की, लज्जत आई इमामत कयामत॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

राग सिघूड़ा (५)

मिली मासूक के मोहोल में माननी, आसिक अंग न माहें अंग। जानूं जामनी बीच जुदी हुती हक जात सों, पेहेचान हुई प्रात हुए पिउ संग॥ १॥ मन सुकन तन भए सब एकै, एकै जात सिफात सब बात। एकै अंग संग रंग सब एकै, सब एक मता अरस बका बिसात॥ २॥ नाहीं जुदा कांहीं जांहीं अरस मांहीं, मिले रूह भेले दिल एक हुए। तो कलूब किबला भया मकबूल अल्लाह कह्या, अव्वल आखर मिले एक हुए न जुए॥ ३॥ हक अरस परस सरस सब एक रस, वाहेदत खिलवत निसबत न्यामत। महामत अलमस्त होए आवें उमत लिए, पीवत आवत हक हाथ सरबत॥ ४॥

दया का प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।।
सोहागनियों पिया दया गुण कैसे कहूं ॥ टेक।। १॥
अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर॥ २॥
दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट।
दया सबों अंगों पूरन, सब हुहो दया को ठाट॥ ३॥
अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए॥ ४॥
पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार॥ ५॥

Scanned by CamScanner

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत।
अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत॥ ६॥
सब्द कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल।
सत असत काहू ना सुध, दोऊ रहे हिल मिल॥ ७॥
अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत।
गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्दोत॥ ८॥
असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास।
सनंध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास॥ ९॥
संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर।
निज बुध उठ बैठी हुई, गयो सो उलटो फेर॥ १०॥
अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों दृष्ट।
पेहेचान भई प्रकास थें, सुपन की जाहेर सृष्ट॥ ११॥
खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल॥ १२॥
आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन।
सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन॥ १३॥
विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार।
करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार॥ १४॥
आए रेहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड॥ १५॥
हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर॥ १६॥

Scanned by CamScanner

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों॥ १७॥
लेस है कालमाया को, बढ्यो साथ में विकार।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार॥ १८॥
विकार काढूं विधोगतें, बढ़ाए दया विस्तार।
भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल न आवे आकार॥
सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग।
मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग॥ २०॥
मोह बढ्यो लेस माया को, निद्रा मूल विकार।
सुध होए सबों अंगों, कर देऊं तैसो विचार॥ २१॥
जोलों न काढूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए।
जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए॥
आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर॥
गुन पख अंग इंद्री उलटे, करत हैं सब जोर।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर॥ २४॥
अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर।
अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर॥ २५॥
प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख॥ २६॥
चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार।
अंग में सबों आनंद, होसी हरख तुमे अपार॥ २७॥
कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने॥ २८

Scanned by CamScanner

विरह प्रकरण

(राग सिघोड़ो)

वालो व्रहरस भीनो रंग व्रहमां रमाड़तो, वासना रुदन करे जलधार। आप ओलखावी अलगो थयो अमथी, जो कोई हुती तामसियो सिरदार॥ १ ॥ कलकली कामनी वदन विलखावियो, विस्वमां वरतियो हा हा कार। उनमाद अटपटा अंगथी टालीने, माननी सहुए मनावियो हार॥ २ ॥ पतिव्रता पल अंग थाए नहीं अलगियो, न कोई जारवंतियो विना जार। पात्रियो पीउ थकी अमें जे अभागणियों, रहियो अंग दाग लगावन हार॥ ३ ॥ स्यारे करम एवा करया हता कामनी, धाम माहें धणी आगल आधार। हवे काढो मोह जल थकी बूढ़ती कर ग्रही, कहे महामति मारा भरतार॥ ४ ॥

किरंतन, विरह प्रकरण १/४

हारे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे परवतों पाड्या रे पुकार। रणवगडा माहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार॥ १ ॥ वेदना विषम रस लीधां अमें व्रहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार। सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार॥ २ ॥ दंत तरणां लेई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार। खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार॥ ३ ॥ हवे हार्‍या हार्‍या कहूं वार केटली, राखो रोतियों करो निरमल नार। कहें महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अरज रखे हांसीमां उतार॥ ४ ॥

किरंतन, विरह प्रकरण २/८

हारे वाला बंध पड्या बल हर्या तारे फंदडे, बंध विना जाए बांधियो हार। हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार॥ १ ॥ जेहेर चढ़्यो हाथ पांऊं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार। समरथ सुख थाए साथ ने ततखिण, गुणवंत गारडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार॥ २ ॥ माहें धखे दावानल दसो दिसा, हवे बलण वासनाओं थी निवार। हुकम मोहथी नजर करो निरमल, मूल मुखदाखी व्रह अंग थी विसार॥ ३ ॥ छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार। कहे महामति मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देओ ने करार॥ ४ ॥

किरंतन, विरह प्रकरण ३/१२

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विष विस्तार। जीव सिर जुलम कीधो फरी फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार॥ १ ॥ झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगनाने ठार। बाल्या वली वली ए मन ए कुबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार॥ २ ॥ गुन पख इंद्री वस करी अबलीसने, अंगना अंग थाप्यो देई धिकार। अरथ उपले एम कहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने मां दीधी फिटकार॥ ३ ॥ मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार। कलकली महामति कहे हो कंथजी, एवा स्यारे दोष अंगनाओं ना आधार॥ ४ ॥

किरंतन, विरह प्रकरण ४/१६

हारे वाला कारे आप्या दुख अमने अनघटतां, ब्राध लगाडी विध विधना विकार। विमुख कीधां रस देई व्रह अवला, साथ सनमुख माहें थया रे धिकार॥ १॥ अनेक रामत बीजी हती अति घणी, सुपने अग्राह ठेले संसार। उघड़ी आंख दिन उगते एणे छले, जागतां जनम रूडा खोया आवार॥ २॥ सनमुख तमसूं व्रहरस तम तणो, कां न कीधां जाली बाली अंगार। त्राहि त्राहि ए वातों थासे घेर साथमां, सेहेसूं केम दाग जे लाग्या आकार॥ ३॥ व्रहथी विछोडी दुख दीधां विसमां, अहिनिस निस्वासा अंग उठे कटकार। दुख भंजन सहु विध पीउ समरथ, कहे महामति सुख देंण सिणगार॥ ४॥ किरंतन, विरह प्रकरण ५/२०

हारे वाला अगिन उठे अंग ए रे अमारडे, विमुख विप्रीत कमर कसी हथियार। स्वाद चढ़्या स्वाम द्रोही संग्रामें, विकट बंका अमें कीधा आसाधार॥ १॥ कुकरम कसाब जुध कै करावियां, पलीत अबलीस अम माहें बेसार। जागतां दिन कै देखतां अमने छेतरया, खराने खराब ए खलक खुआर॥ २॥ ओलखी तमने अमें जुध कीधां तमसूं, मन चित बुध मोह ग्रही अहंकार। ए विमुख वातों मोटे मेले वंचासे, मलसे जुथ जहां बारे हजार॥ ३॥ कहे महामती हूं गांऊं मोहोरे थई, पण विमुख विधो वीती सहू माहें नरनार। धाम माहें धणी अमें ऊंचूं केम जोईसूं, पोहोंचसे पंवाडा पर आतम मोंझार॥ ४॥ किरंतन, विरह प्र. ६/२४

Scanned by CamScanner

प्रगटन समारोह

-जोगमाया- (श्री साथनो सिणगार)

नोटः- यह वाणी श्री कृष्णाष्टमी, राधाष्टमी, सद्गुरु एवं श्री महामति प्राणनाथ प्रगटन महोत्सवों पर गाई जाती है।

जोगमायानो देह धरीने, श्री स्यामाजी थयां तैयार। ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथें कीधो सिणगार॥ १ ॥ सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाए। हूं रे अबूझ कांई घणुं नव लहूं, एनो निरमाण केम करी थाए॥ २ ॥ कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माए झलकार। प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सरवे नार॥ ३

एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कै ने सूरज ढंपाए। केम करी सोभा वरणवुं रे सखियो, मारो सबद न पोहोंचे त्यांहें॥ ४॥

वली गुण जो जो तमे नखतणां, हुं तेहनो ते कहुं विचार। सूरज दृष्टे तापज थाए, आंणे अंग उपजे करार॥ ५॥

साथतणी रे साडियों ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार। अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार॥ ६॥

तेवा सरूप ने तेवा भूषन, तेज तणां अंबार। ए अजवालुं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सुं करे संसार॥ ७॥

मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार। ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार॥ ८

Scanned by CamScanner

मन उमंग वालाजीसुं रमवा, आयत अति घणी थाए।
आनंद मांहें अति उजाए, धरणी ना लागे पाए॥ ९॥
भूषण स्वर सोहामणां, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल॥

साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास॥

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माए।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हुं नमी नमी लागुं पाए॥

श्री कृष्णजी के जन्म की बधाई (राग-धनाश्री)

आज वधाई बृज घर घर, प्रगट्या श्री नंदकुमार॥ सजनी० ॥

दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार॥
सजनी० ॥ आज वधाई बृज घर घर॥१॥
एक बीजीने छांटे नांचे, उमंग अंग ना माए।
अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह उछव
थाए॥ २॥ लईने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार।
गाए ते गीत सोहामणां, साजे छे सकल सिणगार॥ ३॥

अबीर गुलाल उछालती आवे, छाया न सूझे सूर।
चाल चरण छवे नहीं भोमें, जाणे उमड्यो सागर पूर॥ ४॥

जुथ जुजवे जुवंतियों, उछरंगतियो अपार।
उछव करती आवियो, बाबा नंदतणें दरबार॥ ५॥

धसमसीयों मंदिरमां पेसे, माननी सरवे धाए।
नंदने वधावो दई वल्या, मांडवे मंगल गाए॥ ६॥

Scanned by CamScanner

ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलिया ते मांगण हार।
निरत नटवा गंधर्व, राग संगीत थेई थेई कार॥ ७॥
नाद दुन्द पड़छंदा परवतें, वरत्यो जय जय कार।
नंद गोप सहु गेहला हरखे, खोलावे भंडार॥ ८॥
गाए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्यां, गोप सकल दातार।
केहेने धन केहेने भूखन, नवनिध दे दे कार॥ ९॥
ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामति तणों आधार॥ १०॥

नोटः *१. गरभा "पुरुसोत्तम प्रगट्या रे पस्चिम देसमां" देखना है पृष्ठ 129. २. देखना है "गरभा" पृष्ठ 134.*

बधाई

आवीं श्रीकृष्ण वधामणी,रंग राती रे।
सामी मली बृजनार, स्याम गुण गाती रे॥ १॥ घर घर तोरन बांधीआ, रंग राती रे। सब मिल मंगल गाए, स्याम गुण गाती रे॥ २॥
घर घर ओच्छव अति घणां, रंग राती रे।
मोतीड़े थाल भराए, स्याम गुण गाती रे॥ ३॥
दूध दधिना छांटणां, रंग राती रे।
रंग अबीर गुलाल उड़ाये, स्याम गुण गाती रे॥ ४॥
बाबा नन्दजी ने आनन्द अति घणों, रंग राती रे।
जसोदाजी राख्या कान्ह,स्याम गुण गाती रे॥ ५॥
नर सैयां चोए सांमी, मलियो रंग राती रे।
सखियों उछरंग मनुहार,स्याम गुण गाती रे॥ ६॥

Scanned by CamScanner

पारणु

सोनाना मोर झूले नन्द किशोर, प्याराने पारणे
सोनाना मोर। हीरा रतन बहु जड़िया पारणीए,
जामें लगी काजू मोतीड़ानी कोर॥ प्याराने० ॥
खांते झुलावे, प्यारी कान्ह कुंवर ने रे।
हाथे ग्रहीं रूड़ी, हीरलानी दोर॥ प्याराने० २॥
कोईक कान्हनें नैना, साजे काजलियां।
कोईक बनावे कस्तूरी कोर॥ प्याराने० ३॥
वाह वाजू बंध वेरखा विराजे।
पाये सुरवाल सोनेरीनी कोर॥ प्याराने० ४॥
प्रेम सखी कहे मुख रसिक बालमनुं रे,
गोपी निरखे जेम चन्द्र चकोर॥ प्याराने० ५॥

श्री जियावर की बधाई

प्रगटे धनी श्री धाम केसो घर, प्रगटे धनी श्री धाम।
धनबाई कुंख ते सुभग सोहाए, सब विध पूरन काम॥ १
तुमही कृपाल कृपा कर पूरन, बसत हो नवतन धाम।
अपनो मूल सनमंध जानके, आए सुन्दरवर स्याम॥ २॥
पूरन मनोरथ सबन के कीन्हें, निरखत भानी हाम।
जै जैकार कहत सब कोई, मङ्गल गावत है भाम॥ ३॥
मुक्ति दान सबही को दीन्हों, राखी ना काहूँ हाम।
आशानन्द चन्द्र पीउ उदयो, धन्य धन्य महामति नाम॥ ४॥

Scanned by CamScanner

श्री देवचन्द्र जी की बधाई

आज आनन्द मारे अति घणो रे। प्रगटया श्री प्राण आधार।
मूल सनमंध हित कारणे रे, कांई आपणने आधार॥ १॥
सजनी आज आनन्द मारे अति घणो रे ....

घेर घेर हरष वधामणां रे, बाजंत्र बाजे अपार।
आसो सुद चतुर्दसी रे, जामनी जाम त्रण गुरुवार॥ २॥

गाम उमरकोट अति भलुं रे, उत्तम कायस्थ सुभसार।
सम्वत सोलह अड़तीसो, मतु मेहता घेर अवतार॥ ३॥

माता कुंवरवाई कुंखथी रे, तेना भाग्य तणो भंडार।
धन्य धन्य भाग्य ये लोकनां रे, येनी सोभा अनंत अपार॥ ४

सुभ घड़ी सुभ वारने रे, सुभ मंगल सुभ सार।
सुभ नक्षत्र स्वांति नुं रे, जन्मोत्री लखी रे आचार॥ ५॥

चन्दन दूधे ऊंबर धोइयां रे, तोरण बाध्यां रे द्वार।
मातुनी उमंग वधामणां रे, सजिया सकल सिनगार॥ ६॥

आपणे कारण देह धरी रे, आव्या ते बीजी वार।
त्रण लीला चौथी घर तणी रे, तेनों आंही थासे विस्तार॥

हंसी रमीने घेर चालसु रे, मायामां न आबुं वीजीवार।
घेर जई बातों करसुं रे, धणी धाम तणे दरवार॥ ८॥

ये लीला अखण्ड थई रे, धन्य धन्य लोक नरनार।
मुक्ति दीधी सचराचर ने रे, आसानन्द तणों भरतार॥ ९॥

Scanned by CamScanner

बधाई

मत्तू मेहता देख हो देवचन्द।
अद्भुत रूप अनूप सोभा, तेरे आए आनंद कंद॥ १ ॥ टेक
पूरन ब्रह्म अखण्ड विराजे, याको कोई न जाने भेद।
ताथें याही जुग में प्रगटे, लीला गावें वेद॥ २ ॥
याही जुग को उधारन आए, पायो परम निज पार।
मुगत दई सचराचर, ल्याये तारतम सार॥ ३ ॥
धन अवतार कुंवरबाई तेरो, निरखे स्याम सरीर।
तेरे वधाई आनन्द मंगल, निध आई चल तीर॥ ४ ॥
ता दिन थें वे लोक सबन में, वरत्यो जै जै कार।
महा मोह उच्छव उमरकोट, सुख सम्पत हरष अपार॥ ५ ॥
महामत प्राण जीवन आयो, पायो अति उछरंग।
एह लीला एह धनी हमारे, आसानन्द वारी अंगों अंग॥ ६ ॥

बधाई

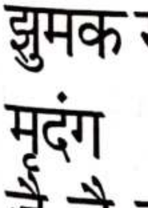
सखी तुम गाओ मंगल चार, श्री कुंअरबाई कूंख थें
प्रगटे, श्री स्यामजी लियो अवतार॥ १ ॥ टेक॥
गृह गृह तें सब चली हें भामनी, मंगल गावत नार।
झुमक सों मिल गावत आवत, साजे सकल सिनगार॥ २ ॥
मृदंग मंजीरा ढोल दमामा, बाजत बाजे अपार।
जै जै कार कहत सब कोई, बंदीजन भाट पुकार॥ ३ ॥
चिरंजीबे तेरो बालक माई, सब कहत पुकार पुकार
याही समान बड़ो नहिं कोई, त्रैलोकी में निरधार॥ ४ ॥

कारज कारण हमारे आपहीं, आए बदल आकार।
मन वांछित फल दिए सबन कों, श्री देवचन्द जी दातार॥ ५॥
तबके बृज में अबके आहीं, आए धनी करतार। आसानंद
मोहे अबके आस धनी की, जो बतनियों के आधार॥ ६॥

बधाई–राग धन्यासीरी

नन्द जू मेरे मन आनन्द भयो, मैं गोवरधन से आयो हो।
तुमरे पुत्र भयों मैं सुनकें, अति आतुर हो धायो हो॥ १॥
बन्दी जन और भिक्षुक सुन सुन, देस देसतें आयो हो।
ऐकें पेहेले आसा ल्याई, घने दिनन की चाह हो॥ २॥
तिन पेहेरे कंचन मनिमुक्ता, नाना बसन अनूपम हो।
मोहे मिले मारग में जाते, मानू काहूँ के भूप हो॥ ३॥
तुम हो परम उदार नन्द जू, जिन जो मांगो सो दीन्हों हो।
और न कोई ऐसो त्रिभुवन में,तुम सिर साकों कीनो हो॥ ४
दीजें मोहे कृपा कर सोई, जो हूँ मांगन आयो हो।
जसोमति सुत अपने पायन चल,खेलन आयो आंगन हो॥ ५
जब तुम मदन मोहन कर टेरो, यह सुनके घर जांऊ हो।
नन्द राय सुन विनती मेरी, सुयस वसे यह गांऊ हो॥ ६॥
कोट देउ तो परो रहोंगो, बिन देखें नहीं जांउ हो।
हों तो तिहारे घर को ठाढ़ी, सूरदास मेरो नाऊ हो॥ ७॥

Scanned by CamScanner

बधाई

-हेरी रे-

हेरी रे हेरी भैया हो हेरी॥ टेक॥

सकल काम पूरन भऐ, हो नैनन देखे आज।
नन्दरानी ढोटा भयो हो, आयो बृज में राज॥ १॥
नन्द कहे उपनन्द को, मेरे मन अति चाह।
उठ के दाऊ नाचहीं, आज भलो हैं दाव॥ २॥
नाचन को बावा उठे, संग सखा लिऐ ग्वाल।
लटकन थोंदा हालहीं, देख हंसी ब्रजबाल॥ ३॥
एक ओर भऐ ग्वालिया, एक ओर भऐ पोन।
पेहेरायो ब्रज मण्डलें, या ब्रज की महतोन॥ ४॥
जिन जो जाच्यो तैसो दियो, जाकी जैसी लाग।
कांहू दै पिछोरिया, काहूं कों दई पाग॥ ५॥
नन्दगोप को ऐह दियो, कीजे ब्रज में बास।
जसोमति जी को लाड़िलों, निमख न छोड़े पास॥ ६॥

राधा जी के जन्म की बधाई

प्रकट भई सोभा त्रभुवन की, वृषभान गोप के आई हो।
जाको ध्यान धरत सुर मुनिजन, निगम चतुरमुख गाई हो॥
नवल किसोर सरूप की सोभा, किन मुख बरनी न जाई हो।
प्रगटे पुरषोत्तम श्री स्यामा, दोऊ विध रूप बनाई हो॥ २॥
उलटे दान देत विप्रन को, यश जो रह्यो जग छाई हो।
कहें कान्हर ता दिन ते बृज जन, उलट अंग न माई हो॥ ३

Scanned by CamScanner

जन्म बधाई

सकल भुवन की सुन्दरता, वृषभान गोप के आई हो।
अमृत रूप देखि ब्रज वनिता, रीझे लेत बलाई हो॥ १॥
नाहीं सुची रूची नाहीं कमला, उर आनन्द न समाई हो।
ताथें प्रकट भऐ हैं दोऊ, धन पिता धन माई हो॥ २॥
जुग जुग राज करो तुम दोऊ, इत तुम उत ब्रजराई हो।
इत तुम मदन मोहन प्यारी स्यामा, सूरदास बलिजाई हो॥ ३

कीर्तन बधाई

आज रावर में जै जैकार, प्रगट भई ब्रषभान गोप के,
श्री स्यामाजी लियो अवतार, आज राबर में जै जैकार॥ १
ग्रह ग्रह तें सब चलीं हैं वेग दें, गावत मंगलचार।
प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की, रूप रसिक सुखकार॥ २॥
नाचत गावत करत कतोंहल, भीर भई अति द्वार।
परमानन्द ब्रषभान किसोरी, जोड़ी नन्द कुमार॥ ३॥

श्री जी के जन्म के कीर्तन

देखो अद्‌भुत अविगत की गत, कौन रूप धर आयो हो।
श्री धनबाई सुभग कूंख थें, प्रगट होए सुहायो हो॥ १॥
सिव विरंच रमापति नारद, अगम अपार कर गायो हो।
सो धनबाई कौन प्रीत सों, पलना मांझ झुलायो हो॥ २॥

Scanned by CamScanner

निराकार आकार निरंजन, निरगुन कौन लखायो हो।
सों धनबाई कौन सनमन्ध कर, सुतकर के हुलरायो हों ॥ ३
आद सिव ईस्वर रूप तें, अनन्त अपार बतायो हो।
ताको मुख चूमत केसोराए, हंस कर कंठ लगायो हो ॥ ४ ॥
अक्षर ब्रह्म पूरन पुरसोत्तम, भेद न जाको पायो हो।
सोई सरूप पुनीत धनबाई, अपनो सुतकर चाह्यो हो ॥ ५ ॥
मूल सरूप अनूप केवल निज, अक्षरातीत कहायो हो।
सो नौतनपुरी की वधू ने, चुटकी दे दे नचायो हो ॥ ६ ॥
धाम स्याम स्यामावर सुन्दर, सच्चिदानन्द सखी भायो हो।
कहे 'नवरङ्ग' निजराए केसो घर, कौन प्रेम बधायो हो ॥ ७

गरभा

पुरुसोत्तम प्रगटया रे पस्चिम देसमां,
नवां नगरमां प्रगटया नन्दकुमार जो।
करुणा तो कीधी रे केसवराय नें,
जेनो सङ्कर सेष न पामें पार जो ॥ १ ॥
सांभल ने सजनी रे जुगती जन्मनी,
ब्रह्म सरीखों भारी कोई अवतार जो।
देव मलीने वृष्टि कीधी फूलनी,
मुखडुं जोतां आनन्दियो नरनार जो ॥ २ ॥
पहोर दिवस चढ़ता रे पीउजी प्रगटथया,
संवत सोला पचोतेरनी साल जो।

भादरवो महीनों रे कृष्ण पक्षमां,
चतुरदसी ने जोग हतो रविवार जो ॥ ३ ॥
पत्रिका लाव्या रे जोशी जन्मनी,
ब्रह्म सरीखो भारी कोई अवतार जो।
कारज तो करसे रे झाझा जीवना,
लाल सखी कहे ब्रह्मसृष्टिना प्रतपाल जो ॥ ४ ॥

गरभा

सकल कला मुख ता थेइया, देखो राधा प्यारी ता थेइया॥
बृन्दावन में रास रच्यो प्यारे, ताथेई ताथेई ता थेइया॥
रुम झुम रुम झुम झनना झनना, घुंघरी बजे हर के पैयां॥ १
ठुमक ठुमक पग धरत धरन पर, फिर फिर लेती फिरकैयां,
धुम कट धुम कट धुन मृदंगे, झम झम बाजे झांझरिया॥
रुम झुम रुम झुम नैन सेंन कर, मोह लई बृज नागरिया॥ २॥
सरद मास दिन पुनम कथा, सोल कला सखी अजब खिला।
नन्दलाल ब्रषभान नन्दिनी, और सखी सब साथ मिला॥
बृन्दावन की कुंज गलिन में, रची कृष्ण ने रास लीला।
बारह हजार सहस्त्र बृजनारी, कुंज विहारी सोले कला॥ ४
एक सखी करताल बजावें, कोई मुहचंग बजावती।
मृदंग नाद धुमकार करत, कोई सारंगी स्वर पुरावती॥ ५॥
निरत करत सिनगार सजत, अब नैन में काजल लगावती।
निरत करत सखी हाव भाव सों, कोई हांस हांस पर दे तारी॥

Scanned by CamScanner

दो दो मिलकर रमत फूंदड़ी, रास रंग सो मतवारी।
बोहोत भेष प्रभू लियो सखी री, ऐक बीच ऐक बनवारी॥
षट मास की निसा भई, सखी रास रमी सब सुख पाई।
सकल मनोरथ पूरन भए, सब आप आपनें घर आई॥ ८॥
सुर नर मुन जन पार न पावें, कैसें बरनो हो भाई।
स्वातीदास प्रभू चरन कमल पर, बार बार के बलि जाई॥

गरभा

बस गई राधा प्यारी मेरे मन। वस गई राधा प्यारी॥ टेक॥
गोरे गोरे अंग पर सालूरा विराजें, फिरती जरद किनारी॥ १
नरम नाक पर निरमल मोती, अजब करें नथ वारी॥ २॥
नई भांत की अंगिया सोहें, ऊपर हार हजारी हो॥ ३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नांगर, राधा मोहन प्यारी हो॥ ४॥

गरभा

मन मोह्यो ते मुरली वाले हो। मन मोह्यो ते मुरली वाले॥ टेक॥
मैं जमुना जल भरन जात ती, जादू सों पढ़ डारे हो॥ १॥
मोर मुकुट कट काछनी कांछे, कानन कुण्डल भारे हो॥ २॥
रूप अनूप स्यामरी सूरत, नख सिख अङ्ग समारे हो॥ ३॥
भौह कमान तान मोरी आलीं, नैनां बान मोहे मारे हो॥ ४॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा, बिसरत नहीं विसारे हो॥ ५॥
कल न परे छिन हू मेरी आली, बिन देखें नन्द दुलारे हो॥ ६॥
कान्ह मोहन चरनन की दासी, मनमोहन प्रान पियारे हो॥ ७॥

Scanned by CamScanner

वृंदावन वासी रे परणें आवियां

वृंदावन वासी रे परणें आवियां।
प्रगट पधारयां परसोतंम भगवान जो ॥
झरनां ने कांठें रे वालों उतरां।
जेहेर हतां ते कीथो अंमृत पांन जो ॥ १ ॥
सोभा सी कहूं सागर साथ नी।
जेणें कीधा अरपण तन मंन धंन जो ॥
त्रसनां तो त्रूटी रे झूंठी जगत नीं।
सुपनें सुखमां भूलो ब्रंह्म वतन जो ॥ २ ॥
सलिता आवी रे ललिता कांठ डे।
जोवंती जोवा मोहन जी नों मुख जो ॥
पलंगे बेठारे पीउ किरंतन करे।
सरण जनने सेहेजें आपे सुख जो ॥ ३ ॥
त्रगुणांदिक थीं वालो वेगला।
अविनासी नों अक्षर पार वतन जो ॥
सतगुरु सेवा थीं सुखडू सेजमां।
लाल सखी कहें कांई वाले वसावूं वन जो ॥ ४ ॥

तुम देखो सखी निहार

तुम देखो सखी निहार, बेंठक अपनी कों।
जिम दाडिंम कली विचार, बेंठक अपनी कों ॥ टेक ॥ १ ॥
मूल मिलावा चोंसठ मंदिर, सनमुख चारों द्वार रे।
थंभन की इक हार छोड़ कें, आगे कों पग धार ॥ बें. ॥ २ ॥

देख चबूतरे गिलम विछी हैं, कठेड़ा जड़ित किनार रे।
चोंसठ थंभ चंद्रवा ऊपर, झालर मोती लार॥ बें.॥ ३॥
मध सिंघासन राज श्यामा जी, बेंठ करें सिनगार रे।
हिरदें सखियां चरन पकड़ के, बेठी हरख अपार॥ बें.॥ ४॥
बांहें गहें गल डार के बेंठी, साडिंन की झकोर रे।
सीस फूलन के ऊपर सोहे, हिरदें सोहें हार॥ बें.॥ ५॥
येकें तकियन दाव के बेंठी, येक न येक आधार रे।
सिंघासन लो भर कें बेंठी, साड़ी हैं सुखकार॥ बें.॥ ६॥
येक तन येक दिल येक बोली सब, मांग्या खेल कुफार रे।
पिआ कहत मत जाओ खेल में, हू हो सवी खुआर॥ बें.॥७॥
में आंहों उत सतगुर वन कें, तुम नहीं लखों लगार रे।
इलम कहोंगा घर की बातें, चीन्हों सो सिरदार॥ बें.॥ ८॥
श्री जी आये भेख बदल कें, सबदंन करत पुकार रे।
वेद कतेब कहे ब्रह्म आंहें, ब्रह्म श्रृष्ट मंझार॥ बें.॥ ९॥
सब साहेदींयें अपने काजें, परखो निज भरतार रे।
इत हो प्रेम पिया सों करिए, रहें ना कछु खुंमार॥ बें.॥ १०॥
वचन पिआ के हों हिरदें में, चलिए अछिर पार रे,
अंदर खिलवत मूल मिलावा,देखो नेंन उधाड़॥ बें.॥ ११॥
इत हो हमकों खेल दिखाया, विलंम भै नहीं बार रे।
सुपने जांनों कै जुग बीते, अब मन मानी हार॥ बें.॥ १२॥
श्री महामत के उत चरनों बेंठी, तिन कों चरनं आधार रें।
कृष्ण दास पिया सेज बिछा कें, अरस दिली बेंठार॥ बें.॥

Scanned by CamScanner

वृंदावन वासी रे परणें आवियां

वृंदावन वासी रे परणें आवियां।
प्रगट पधारयां परसोतंम भगवान जो॥
झरनां ने कांठें रे वालों उतरां।
जेहेर हतां ते कीथो अंमृत पांन जो॥ १॥
सोभा सी कहूं सागर साथ नी।
जेणें कीधा अरपण तन मंन धंन जो॥
त्रसनां तो त्रूटी रे झूंठी जगत नीं।
सुपनें सुखमां भूलो ब्रंह्म वतन जो॥ २॥
सलिता आवी रे ललिता कांठ डे।
जोवंती जोवा मोहन जी नों मुख जो॥
पलंगे बेठारे पीउ किरंतन करे।
सरण जनने सेहेजें आपे सुख जो॥ ३॥
त्रगुणांदिक थीं वालो वेगला।
अविनासी नों अक्षर पार वतन जो॥
सतगुरु सेवा थीं सुखडू सेजमां।
लाल सखी कहें कांई वाले वसावूं वन जो॥ ४॥

तुम देखो सखी निहार

तुम देखो सखी निहार, बेंठक अपनी कों।
जिम दाडिंम कली विचार, बेंठक अपनी कों॥ टेक॥ १॥
मूल मिलावा चोंसठ मंदिर, सनमुख चारों द्वार रे।
थंभन की इक हार छोड़ कें, आगे कों पग धार॥ बें.॥ २॥

देख चबूतरे गिलम विछी हैं, कठेड़ा जड़ित किनार रे।
चोंसठ थंभ चंद्रवा ऊपर, झालर मोती लार॥ बें.॥ ३॥

मध सिंघासन राज श्यामा जी, बेंठ करें सिनगार रे।
हिरदें सखियां चरन पकड़ के, बेठी हरख अपार॥ बें.॥ ४॥

बांहें गहें गल डार के बेंठी, साडिंन की झकोर रे।
सीस फूलन के ऊपर सोहे, हिरदें सोहें हार॥ बें.॥ ५॥

येकें तकियन दाव के बेंठी, येक न येक आधार रे।
सिंघासन लो भर कें बेंठी, साड़ी हैं सुखकार॥ बें.॥ ६॥

येक तन येक दिल येक बोली सब, मांग्या खेल कुफार रे।
पिआ कहत मत जाओ खेल में, हू हो सवी खुआर॥ बें.॥७॥

में आंहों उत सतगुर वन कें, तुम नहीं लखों लगार रे।
इलम कहोंगा घर की बातें, चीन्हों सो सिरदार॥ बें.॥ ८॥

श्री जी आये भेख बदल कें, सबदंन करत पुकार रे।
वेद कतेब कहे ब्रह्म आंहें, ब्रह्म श्रृष्ट मंझार॥ बें.॥ ९॥

सब साहेदींयें अपने काजें, परखो निज भरतार रे।
इत हो प्रेम पिया सों करिए, रहें ना कछु खुंमार॥ बें.॥ १०॥

वचन पिआ के हों हिरदें में, चलिए अछिर पार रे,
अंदर खिलवत मूल मिलावा,देखो नेंन उधाड़॥ बें.॥ ११॥

इत हो हमकों खेल दिखाया, विलंम भै नहीं बार रे।
सुपने जांनों कै जुग बीते, अब मन मानी हार॥ बें.॥ १२॥

श्री महामत के उत चरनों बेंठी, तिन कों चरनं आधार रें।
कृष्ण दास पिया सेज बिछा कें, अरस दिली बेंठार॥ बें.॥

Scanned by CamScanner

चलो चलिए सखियो आज

चलो चलिए सखियो आज, मोहन बेंन बाजी।
वो तो हमें बुलावन काज, नौतन धुन गाजी ॥ टेक॥
जो जैसें तैसें हो निकसीं, तामसियां वे नार रे।
कछुइक ढील राजसिन कीनीं, वे भी उतरी पार ॥ नौतन ...
ग्वालन आन स्वांतसीयन की, करन सिनगार जो लागी रे।
जान देओ दोषी हो हमको, मन मोहन हितकारी। नौतन ...
प्रान गये आगे पिऊ पासें, अब का पापी रोको रे।
या लेवो देह गेह सब तनकी, अब का हमकों टोको ॥ मो.॥
तामसी राजसी स्वांतसी सुरतां, जोग माया मिल भेंटी रे।
नवल सिनगार सजे अरजुन सिंघ, त्रगुन ताप तेई मेंटी। नौ.

दानलीला

ठाढ़ी रहे ना अहीर की, तू देजा मेरो दान॥ टेक॥
कैसो दान कहावत ढोंटा, कोंने तुम्हारें लीन्हों।
सदां ये मारग आवत जावत, कबहूँ न काहू दीन्हों॥ १॥
दान हमारो हमहीं लेहें, लिये बिना नही जेहों।
सबरे ग्वालन दधी खबाऊं, सब दिन बैठी रेहो॥ २॥
कैइयो बेर गई तुम लें लें, चोरी हमारो दान।
अबके लेहों बेर-बेर के, मोहे नन्द की आन॥ ३॥
बात कहो अपने लायक की, जामें कछू बनि आवे।
सुन पाहें कहूँ कंसराये जो, तो सब घर पकड़ मंगावे॥ ४॥

Scanned by CamScanner

जाके गर्व फिरत गर्रानी, ता घर जाए पुकारो।
हम दधी लेहें माखन खेहें, तब मारग पग धारो॥ ५॥
हमरे तो तुमहीं मनमोहन, गांव तुम्हारे बसिये।
कहे सुने को बिलग न मानो, ना ते माफक हंसिये॥ ६॥
नातो रसो बसो हियरा में, हम तुमसे नहीं न्यारे।
बचन तुम्हारे ऐसे लागे, प्रानन हूं ते प्यारे॥ ७॥
दूध दधी चाहो सो लीजे, तुमरे काजें ल्याई।
प्रगटे पूरन भाग हमारे, दरस तुम्हारे पाए॥ ८॥
बढ़ी प्रीत रस रीत परस पर, दोऊ ओर सुख छायो।
'छत्रसाल' को दियो कृपा कर, भक्त पदारथ पाए॥ ९॥

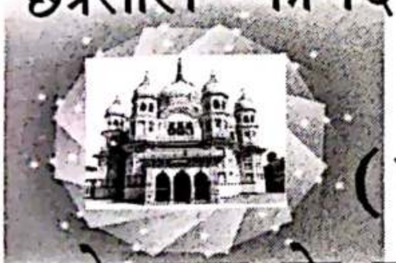

रेखता
(हमारे प्राण के प्यारे)

हमारे प्राण के प्यारे। पुरी परना बसाया है॥ टेक॥
कृपा छत्रसाल पर करके। तिमर दिल का मिटाया है॥
सबन के पार जो न्यारा। सोई सत् चित लखाया है॥ १॥
जगी आतम साकुंडल की। परम सुख सिंधु पाया है॥
पुनः कर जोर कर विनती। कर नीचा सीस नाया है॥ २॥
यही हरदम कहे मुख से। धनी अपना मैं पाया है॥
यह ऐसे सूरवीरों ने। परम सतका निभाया है॥ ३॥
नहीं जो आज तक किनको। सोई सत्गुरु बताया है॥
गुरु सीतल कृपा कीन्हीं। सदा गोमन जो भाया है॥ ४॥

Scanned by CamScanner

वसंत

मन के मोहन ललना। व्रह वसंत सरस रुत आई।
गृह गृह ते उमगी बृज वनिता। माननी मंगल गाए॥ १॥
दहुँ दिस वन रतनाले सोहें। चहूँ दिस टेसू फूले॥
मोरे आम सकल द्रुम वेली। मधुकुर प्रेमल फूले॥ २॥
ससीए समीप तजि गयो सिंधू। रवि उत्तर दिस आयो।
उमगे प्रेम कोकिला बोलें। वृहनी वृहा जगायो॥ ३॥
चोबा चंदन अतर अरगजा। छिरकत भर पिचकारी।
उड़त गुलाल अरुन भए अंबर। निस वासर उजियारी॥ ४
या विध होरी खेलिए सजनी। बृंदावन विपिन विहारी।
प्रथम वसंत पंचमी पूजा। सूरदास वलिहारी॥ ५॥

वसंत

आज वसन्त मनाओ सजनी। पिया पर डारों गुलाल।
पिचकारी भर प्रीत रीत सों। डारत हैं नंद लाल॥ १॥
अतर अबीर अरगजा केसर। चोबा चंदन घोर।
डारत पिऊ पर हंसत बदन मन। निरतत बृज किसोर॥ २॥
वीन मृदंग सितार जो बाजें। और बाजे करताल।
जलतरंग जल अंदर बाजे। बेन बांसुरी लाल॥ ३॥
धनी धाम के खेलत होरी। धन धन राधे रंग॥
धन धन गोप ग्वाल बृजवासी। खेलत प्रभु के संग॥ ४॥
रंग लाल और रंग रंगीलो। छेल छबीलो संग।
चरन सरन सरना नंद सोभित। सुन सुन तान तरंग॥ ५॥

Scanned by CamScanner

वसन्त

सांची कहो मन मोहन मोसें। तो खेलू मैं होरी।
आज की रैन कहां रहे मोहन। कहां तुम बहियां जोरी॥ १॥

मुख पर पीक, पीठ पर कंकन। गले हार वन दोरी॥
मोह भोरावत प्रीतम प्यारे। कहा जानो मोहि भोरी॥ २॥

मुख कछू और जिय कछू और। चाल चलन कछू और॥
सूर के प्रभु ऐसी न कीजे। आन मिलो कर जोरी॥ ३॥

फाग

परमा प्रथम **धमार**

परमा प्रथम कुंवर दोऊ, वेहेरत गोपिन संग। ताल मुरज ढफ बाजत,अरु आनक मुख चंग॥ १॥ ढोल भेर ढोलक छव, बीन मृदंग उपंग। रुंज मुसफ ढफ दुंम दुंमी, झालर तरुन तरंग॥ २॥

विविध पखावज आवज, और झांझन के जोरा।
बिच बिच गौमुख सुनियत, बिच मुरली की घोरा॥ ३॥

ग्वाल परस पर राजत। मन मय जेरी हांथ।
बूका कनक पिचक कर। भर भर छिरकत गात॥ ४॥

तब मन हरष सकल त्रिया। लागी करन श्रृंगार।
कर कंकन कंचन के, और मोतिन के हार॥ ५॥

नील वसन तन सारी। लेहेंगा लाल सुरंग।
कंचुकी ललित भुजन पर। गूडर मनो हो अनंग॥ ६॥

सोधे सरस सीस दे। बेनीकरन समारी।
मानो कनक खंभ लग। झूलत पंनग नारी॥ ७॥

बदन मांग महादुत। राजत कुंज सुढारी।
मानो सषन सहस फन। डारो अछत डारी॥ ८॥
सीसफूल रूच तिलक, भ्रकुटी बीच वंदन रोप्यो।
मानो सरासर साध, वान ले मनमथ कोप्यो॥ ९॥
नेन कुरंग श्रवन जुग। तरवन चक्र विराजे।
मानो ससिक अवन पर। देखियत अत रस छाजे॥ १०॥
और चौकी जो जड़ाव की। मुगत मांल छवि पावे।
मन मथ बन्यो हिडोरना। विध कर ग्रेह झुलावे॥ ११॥
नख सिख तें वन चलीं। गईं सब सीय दुवार।
हमरो फगुवा दीजिए, श्री मोहन नंदकुमार॥ १२॥
काहे मोहन राय दुर रहे। काहे ओलक लेओ।
कुमद विंद ज्यों राजित। निकस दिखाई देओ॥ १३॥
फगुआ को मिस झूठो। पिय दरसन की आस।
तुमरे दरस विन मोहन। लोचन मरत पिआस॥ १४॥
तब मन हरष जसोदा रानी। सबको आसन दीनों।
कूकम घोर सरस कर। सब मुख माडंन कीनो॥ १५॥
वरन वरन पट दए। गोदन भर दई है मिठाई।
या विध ते नंद घरुनी। तरुनी बृज की पेहेराई॥ १६॥
गान करत मन हरत। मुदित सब देत असीस।
तुमरो कुंवर जसोदा रानी। जिए जुग कोट वरीस॥ १७॥
जिन देखे नैन सिरात। अघात न पिआ की पियास।
तिनकी चरन कमल रज। पावे राघो दास॥ १८॥

Scanned by CamScanner

धमार

गोकुल सकल ग्वालनी। घर घर खेले फाग॥
तामें श्री स्यामा जी लाड़ली। जाको परम सुहाग॥ १॥
झुंडन मिल गावत चली। झुंमक नंद के द्वार।
आज परम मिल खेलिए। हम तुम नंद कुमार॥ २॥
रसिक कुंवर सुंदर वर, स्यामा जी जीवन प्रान।
मोहन दरस देखाइयो। दुर हो तो नंद की आन॥ ३॥
प्रगट प्रीत गोकुल मै। अब कहा करोरे दुराव।
हम ना दरस बिन जीव हीं। कोई कछू करो रे चवाव॥ ४॥
जसोदा को सुत चित चुभ रह्यो। सो तुमरी मुसक्यान।
अमने आनंद रुच उपजी। जिय में परे है वान॥ ५॥
दुरत कान्ह भले पाए। श्री स्यामाजी भरे अकवार।
कनक कुड़ी केसर भरी। ले दोरी बृज नार॥६॥
भरोरे भरो सखी स्याम को। प्रीत पिछोरी पाग।
देह ग्रेह सुध विसरी। नंद नंदन अनुराग॥ ७॥
चोवा चंदन कुम कुम। घोरो मेद जवाद।
हंस हंस पिया पर डारती। और नाना फुल बाद॥ ८॥
छूटे केस कंचुकी बंध। टूटी मोतिन की माल।
कर कर ताल बजावती। गावती परम रसाल॥ ९॥
गगन गुलाल उछालती। सुर नर कौतुक भूल।
जै जै सब्द सब उचरें। आनंद वरषें फूल॥ १०॥
लाल गुपाल कृपा बिन। ए सुख लहे ना कोए।
हरी वृषभान किसोरी। कथा बिन मगन ना होए॥ ११॥

Scanned by CamScanner

धमार

कुंवर लड़ेती

कुंवर लड़ेती रंग भरी। सखिए संग मिल खेलें फाग।
फूल सबन के मन भए। बाढ़ो हो सखी अति अनुराग॥ १
प्यारी नख सिख तें बनिक बनी। भूषन वसन अमोल अपार।
सबे साज लिए खेलकी। चोवा चंदन और घनसार॥ २॥
अबीर विविध रंग फेंट कें। कुसम रंगसों कलस सुवास।
मृग मद साष मले मले। कुंज प्राग मद मीठी हांस॥ ३॥
प्यारी नवला कर लिए नवलासी। और गावें होरन के गीत॥
विच-विच प्यारी स्वर मिले। सुन मोहे मन मोहन मीत॥
एक सखी पियालाल कों। बागो हो त्रिय कों पेहेराए॥
बाह पकर घर ले आए। परसाए प्यारी के पांए॥ ५॥
प्यारी सिर पगिया फवी। बांधी हो कटि कांछ बनाए॥
भूषन सब पिया के फबें। मदन कोट छब गै है लजाए॥ ६
नंद लाल गौर पिया सामरो। दोऊ डगर चले गेहे वन की ओर॥
उमगी इच्छा चित चाहसों। चोंप खेल बाढ़यो दोऊ ओर॥
ढफ दुंदुभी बाजे बाजहीं। विच विच नुपुर कंकन घोर॥
अवीर गुलाल उड़ावहीं। निशा छिन में कीनों भोर॥ ८॥
भुजवल वाथ लिऐ दिऐं। फगुआ पोखे पिय के पान॥
बृज भूषण हित लाड़लो। सदा बसो मेरे उर आन॥ ९॥

भीने रंग प्रेम सुगंध सों हो, खेलत फाग जागनी जिआवर। गावत गान प्रेम, दौड़ फिरस्ते गये हें जहां तहां, ल्याहे हें सखियां जगाए॥ १॥ तारतम की करी रोसनाई, दियो हैं तिमर भगाये। गुन और तत्व लोक अलोकी,सबही परे बिकुलाए॥

धमार

धन धन बृज की बृज बधू, धन यह गोकल गाम। राज रस झूमकरा॥ धन धन जसो मत उरधरे। धन नंद जी को नाम॥
लाल रस झूमकरा॥ १॥
धन धन मथुरा नागरी। उग्रसेन को राज॥
जा करन जग उतरे। करे असुरन को काज॥ ला.॥ २॥
ऊमक झूमक जे करें। ब्रह्म श्रष्ट सिरताज॥
वेद ना जानत बापरे। जिने जगत क़ी लाज॥ ला.॥ ३॥
बृज वीथिन की गलन में। हर आए सुख केल॥
सुरनर मुन झांपत रहे। श्री बृन्दावन की केल॥ ला. ४॥
झूमक हर झगरो मचो, रंग भर स्यामा स्याम।
सखीया साकुंडल मांग ही, फगुवा में निज धाम॥ लाल ॥

धमार

तुम लंगर कन्हैया हो, तुमसे कोन खेलें॥ टेक॥ १॥
ग्रह ग्रह थें सब निकसी, नव सत साज सिनगार॥
सब सखियन में राधिका, उड़गन में चंदा होई॥ २॥
चोवा चन्दन गारि के॥ ले दौरी बृज नार॥
केसर छिरकत प्रेम सो, कंचन पिचकारी हो॥ ३॥
काहू सखी पटका गह्यो, काहू आजे नैन॥
वृष भान सुता मुरली लै। फगुआ ले छोड़ों हो॥ ४॥
तुम लंगर कन्हैया हो, तुमसे कोन खेले....

मोहन खेलत होरी, मोहन खेलत होरी॥ टेक १॥
बृंदावन बंसीवट कुंजन, तरे ठाडे वनमाली।
उते सखिन को मंडल जोरे, श्री बृषभान दुलारी॥ २॥

नारदी

मोहन बांसुरी बजाई, मधुरी धुन तानन छाई॥
लिख पतियाँ बृज जीवन पठई, ऊधो बांच सुनाई॥ १॥
पाती सुन के छतियां दरकी, मुख पियरी पर आई।
जबसे भनक परी मुरली की, तबते कछुनां सुहाई॥ २॥
अलस्याये उठी ठहराय गिरी,मानो विष काले ने खाई॥ ३॥

नारदी

बन बीच बिहारी जिन रार करो। छोड़ो छेल गैल जिन रोको,
वहियां न पकरो, टूटे हार चुरी दरकें, काहू और की दृष्ट परे॥
सास की त्रास सांस नहीं आवे, बृज की रीत जरे।
लागे कलंक विलोकत हीं, कहो कैसे के अंक भरे॥ २॥
लालचंद चातुर होए प्यारो, आतुर होए नियरे।
चाहो प्रीत निवाहो लला, मोहे जान दे आज घरे॥ ३॥

नारदी (१-२५)

१. अहे नन्द लाल सखी, नित ढीठ ढिठोई करे॥ १॥ टेक॥
हों सकुचत जिय लाज धरत अति, चंचल नाहिं ढरे।
जानत है कुल के सिगरे, फिर देखत आन अरे॥ २॥

२. अनी एहो पलक नहीं लागे, मन मोहन रूप लख्यो सजनी
री, चाह चकोर जोर नैनन की, डोर लगी बिन तागे...
ज्यों मंत्र कटोरी इते उते थें, ठेहेरात गुनी गुन आगें॥ १॥

३. पिया आओ मेरे धाम, हों बलिहारी जेहों॥ पिया...टेक॥
पलकन पंथ बहोरी नैन करों पावडे॥
दासी हो पग धोऊँ, पिया आओ मेरे धाम॥ हों.....

Scanned by CamScanner

४. एरी पेंडे ही परो, जो नंद नंदन मेरे पेड़े ही परो॥
हो जमुना जल भरन जातती, मारग रोक रह्यो॥ १॥
५. बन बीच विहारी, जिन रार करो॥ टेक॥
छोड़ो छैल गेल जिन रोको, बहिया न पकरो॥
टूटे हार चुरी दरके, काहू और की दृष्ट परे॥ १॥
६. दुरायो नेह नयो पिया, कैसे के दुरे॥ १॥
ऐसे ढीठ डरत नहीं बलमा। जात बिराने घरे।
हूहे जो बदनाम सरे में, जो कोई बांह धरे॥ २॥
७. कहियो दिल खोल पिया, तुम जात कहां कों॥ १॥
बिसर गई वह दिन की बतियां। अवध वदी निस वाको।
कैसे तजी रस केल रंगीली। राखे रहो जिय हेत तहां को॥ २
८. ऐरी मोहनी, मोपर डार दई॥
मैं अचानक भेट जात मग, वातन में भोरई॥ १॥
९. ऐसो मान ना कीजे हो राधे॥ टेक॥ जिनसों रोस करत कहा सजनी॥ तिन मुख देखत जीजे॥ जानती हो रस को चसको॥ फेर या हट में कहा लीजे॥ हो राधे॥ १॥
१०. लंगर कांन देखो मेरी गली आवे॥ टेक॥ १॥
मुरली अधुर धरी नंद नंदन, तेरी नाम ले ले गावे॥
नैनन की कोरें चित चोरें। चंचल मनुआ रिझावे॥ २॥
११. बालम कौन त्रिया संग॥ रतियां जागे॥ टेक॥ अट पटे पेंच उनीदे से नैना॥ भोर भए उठ भागे॥ १॥
भावे छैल उने बतियां। जिनकी छतियां तुम लागे॥
पलकन पीक, लीक अधुरन की। अधुर दसन तन वारे॥

१२. इठलात अहीर की जोवन मद माती॥ टेक॥
१३. तेरो अलवेलो मोती॥ मुख माहे दुरे॥ टेक॥
रेनके उनीदे आए केसे के छूटन पाए।
१४. अरी ऐ री आए मोरे सैयां। प्रेम पूरे नेह जागे आए॥ टेक॥
१५. नैना नींद भरे, सोहे लाल तिहारे ॥ टेक॥
अनुरागे जागे काके संग, कोने ढीट करे।
रैन गमाए प्रात उठ आए, मोह पिया न दुरे॥ सोहे॥
१६. आली कोनी बन वंशी बजाई ॥ टेक॥ १॥
उलटो नीर वहत जमुना को॥ जब मुरली धुन वाई॥ थकत भए मृग राए रैन के। भानु उदे चढ़ी आए॥ आली....॥
१७. डोलंन वादुरकी॥ हिए मांझ खुभी खुरसी॥ टेक॥
केसर खोर आड़ एपन की॥ सेंदुर की सुरकी॥
सोने की गेंद विराजत आसन। भोग सुता गुरकी॥ टेक २
१८. तू वेंदी भाल न देरी। तेरो ऊसई है जग बेरी॥ टेक॥ १॥
घर घर घेर होत या बृज में, जहाँ-तहाँ सुनियत हैरी॥....
१९. आयो आयो सखी आयो, पायो मन भावना॥ टेक॥...१
देखो री सखी मोरे भागन की गत॥ लागो रंग वर साउना॥
उड़त गुलाल अरुन छायो॥ मानो झर लायो सावना॥ आयो...२
२०. पिया सेज चलो जू॥ अखियां अलस्यानी॥ टेक॥...१
जागत है मोरो जेठ जेठानी॥ सास ननद देवरानी॥
होले पाँव धरो पलका पर॥ लाज हिए उर आनी॥ २॥
२१. जब देखे वारे नाहु॥ लेत उसासें हो प्यारी॥ टेक॥ १..
गोने की चाह अटा चढ़ ठाढ़ी॥ पेहेरे कुसम रंग सारी॥
ठाड़ी नार वियोग भरी॥ मानो प्रेम जुआ संग हारी॥ २॥ जब...

Scanned by CamScanner

२२. ऐ री सज के डगरी॥ रंगीली खेलन होरी॥ टेक॥
सज सिनगार मांग मोतिन भर॥ साज चली सुघरी॥
वरनी भोंह ऐंच तन मारी॥ नेक नहीं कसकी॥ २॥ रंगीली...

२३. ऐसी बाल नवेली॥ पिया को सकुचे॥ टेक॥ १...
चुनरी लपेट रहीं मुख ऊपर॥ सखियाँ रही हंसके॥
डोले सीस हले नक बेसर॥ होले होले ससके॥ २॥

२४. सुघर सयानी हो, तुम काहे को होती अजांनी॥ टेक॥
हेरी, होंतो अलेखन की गति जानो,तो हमैं लेखो पिय की।
मानों बात हमारी अपनी,पांय लागत हों तेरी॥ सुघर.. २

२५. कैसे हो मतवारे अचरा न गहो॥ टेक॥ चुन चुन कलीयन,
सेज बिछाई, दीपक के उजियारे। जोलो सेज समारों
मैं बालम, तोलो धीर धरो॥ कैसे...१॥ लाल पलंग
पर जरद विछोंना, रेसम बन्द लगे। जब लग छोरो
रेजा की तनीं, छतियां पर केल करो रे॥ कैसे...२

हिंडोरा

हिंडोरा फूलंन को फूलन की डोरी, फूले नंद लाल फूली नवल किसोरी॥ १॥ फूलन के खंभ और पटली फूलन की, डांड़ी फूलन की जड़ाव जड़ी हैं॥ २॥ फूली फूली जुवती, देतीं हैं झोंके। फूलो है मंदन तन, डारत तोरें॥ ३॥ फूलो है सघन घन, फूलो है बृन्दावन। फूली फूली जमुना वेहती अलोले॥ ४॥ गोविन्द के प्रभु आज फूले फूले झूले नंद लला वृषभान किसोरी॥ ५॥

Scanned by CamScanner

हिंडोरा

फूलन को हिंडोरा बनो, फूल रही जमुना। फूलन के कुंजन में फूले खग म्रगनां ॥ १ ॥ फूलन के खंभ दोऊ। फूलन की डांडी चार,फूलन की चौकी बनी,नंग जग मगनां ॥ २ ॥ चहूँ ओर सखी फूली फूले फूले गांवना, नंद दास प्रभू फूले, फूले भऐ मगना ॥

किरंतन

खिन एक लेहु लटक भंजाए ॥ टेक॥
जनमतही तेरो अंग झूठो, देखतहीं मिट जाए॥ १ ॥
रे जीव निमख के नाटक में, तूं रह्यो क्यों बिलमाए।
देखतहीं चली जात बाजी, भूलत क्यों प्रभु पाए॥ २ ॥
आपको पृथीपति कहावे, ऐसे केते गए बजाए।
अमरपुर सिरदार कहिए, काल न छोड़त ताए॥ ३ ॥
जीव रे चतुरमुखको छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए॥ ४ ॥
पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्रानपति लौ लाए॥ ५ ॥
देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रुदे रमें तासों, उपजत जाकी इछाए॥ ६ ॥

राग परज (वाणी)

वारी रे वारी मेरे प्यारे, वारी रे वारी॥ टेक॥
टूक टूक कर डारों या तन, ऊपर कुंज बिहारी॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

सुंदर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।
इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी॥ २॥
इन जेहेर जिमीसे कोई न निकस्या,अमल चढ़्यो अति भारी।
मुझ देखते सैयल मेरी, कैयों जीत के बाजी हारी॥ ३॥
कारी कुमत कूब कुचल, ऐसी कठिन कठोर हूं नारी।
आतम मेरी निरमल करके, सेहेजें पार उतारी॥ ४॥
सुंदर सरूप सुभग अति उत्तम, मुझ पर कृपा तुमारी।
कोट बेर ललिता कुरबानी, मेरे धनीजी कायम सुखकारी॥

गरभा (गागर उतारो रे)

गागर उतारो रे वनवारी। कांई मुझे लगे छे भारी रे॥ टेक॥
गोरे वदन तन साड़ी सोहे। चितवन की छवि न्यारी रे॥ १॥
चितवत तै मेरों मन मोहयो। अबै हो दिनन की बारी रे॥ २॥
गोरस तेरो मन हर लीनो। तैं जोवन मतवारी रे॥ ३॥
ज्ञान दास हँसि कर गहि प्यारी। पीजे हो कृष्ण मुरारी रे॥ ४॥

किरंतन

आतम पिया प्यारे सों बाँधो ॥ टेक॥
ज्यों मलयागर परसत जड़तर, पावत सरस सुगंधों॥ १॥
आतम मन तन वचन चरण चित्त राखो। प्रेम कथा जीव नाधो, हुओ ग्यान सांचे सतगुर को, सत्त भार हिए कांधे॥ २॥
आ कमल पत्र सम रहत पाए निध, चित राखो नहीं धंधे॥
पंचम सब सुभ काजं सरो निज, राज दई लिख संधें॥ ३॥

Scanned by CamScanner

दान

चलो वसिए सखी मेरी निज परना ॥ टेक॥
निज परना में धाम बनो है,
होत भजन और कटत निसां ॥ चलो ॥ १ ॥
जी साहेब जी को बन्यो है बंगला,निकट बहे अमृत झिरना।
पाँच सरूप परना में आए, जागो रुहो छोड़ो सुपना ॥ २ ॥
जी साहेब जी की बानी आई, देख सबद वंदगी करना।
श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन, निज नवरंग लियो सरना ॥ ३

दान

बृंदावन मोहन दधि लूटी ॥ टेक ॥
मैं दधि बेंचन जात बृंदावन, भर भटके मटकी फूटी ॥ १ ॥
कहां तेरो हार कहाँ नक वेसर, कहाँ मुतियन की लर टूटी।
गोकुल चीर मथुरा नक वेसर,रास मण्डल में लर टूटी ॥ २ ॥
वरजो जसोदा अपने कन्हैया, झगड़त झगड़त कस टूटी।
मेरी री कन्हैया वारो भोरो, तुम ग्वालिन सब हो झूंठी ॥ ३ ॥
श्री सुंदर श्री इन्द्रावती जीवन,निज नवरंग के संग छूटी ॥ ४

पंचक

कलंगी के परन देख, हीरा तरंग देख, पाग पचरंग देख, कैसे छवि छाजे हैं। झब्बा की वेली देख, मोती माल सेली देख, मूरति अलबेली देख, तखत पर विराजे हैं। सीस ऊपर छत्र देख,जड़े नग पत्र देख,हीरा नग पन्ना देख, उम्मति

Scanned by CamScanner

पर विराजे हैं। कहत है मस्तान जिसे लागी इस्क तान, रूह देखिए दीदार श्री प्राणनाथ परना में विराजे हैं॥ १ ॥ जरी वाफ छते देख, डांडे कलस केते देख, अनंत अनमते देख, आए तुम काजे हैं। हाकिम से हजूरी देख, खात खांड पूरी देख, सूरति वह नूरी देख सोभा सुख साजे हैं। चँवर के ढुरैया देख, इल्म के पढ़ैया देख, भोग के छकैया देख, मोटे भले ताजे हैं॥ २ ॥ झांझर चित्र बानी देख, पलंग ताख पानी देख, आगे रेहल बानी देख, चारों दरवाजे हैं, गिलम और गलीचा देख, सुंदर दुलीचा देख, बैठे अरस बीच देख, साहेवी समाजे हैं॥ चौडे चौक मंझा देख, गिरद गुंमट पंजा देख, नूर पूर गंजा देख, मंडल नभ राजे हैं॥ ३ ॥ हुई साम आरती देख, वाती घृत बरत देख, सरूप पर उतरत देख, बाजत कै बाजे हैं। नोहवत तहँ झरत देख, एक एक अड़त देख, मायने से लड़त देख, गलगुन्ज गाजे हैं। कितने अकेले देख, नारी नर भेले देख, सागर बन मेले देख, उत्तम उपराजे है॥ ४॥ यह बुन्देलखण्ड देख, भजन को घमण्ड देख, और यह ब्रह्माण्ड देख, कहाए अबाजे हैं। गली में हलवाई देख, साथी गुरभाई देख, आनन्द अधिकाई देख, गालिव गुराजे हैं। परना परम धाम देख, इस्क आराम देख, करिके प्रणाम देख, सकल दुख भाजे हैं। कहत हैं मस्तान जिसे लागी इस्क तान, रूह देखिए दीदार श्री प्राणनाथ जी परना में विराजे हैं॥ ५ ॥

Scanned by CamScanner

आत्मिक भोग

अक्षरातीत प्राणपति प्यारे, निष्कलंक गुरु आए जू।
उठि आतम आतुर है लीन्हों, करि प्रणाम सिरनाये जू॥ १ ॥
सत की चौकी आनंद विछौना, चिदघन तापर सुहाए जू।
प्रेम नीर प्रतीत थाल में, प्रभु के चरण पखारे जू॥ २ ॥
धूप दीप नैवेद्य आरती, तन दिल जीव सुवारे जू।
पांच तत्व से करि परिक्रमा, मुक्ता मोह वधाए जू॥ ३ ॥
वेद विचारि के चँवर ढोरि के, सब्द के पुष्प चढ़ाये जू।
सुरति सुभग सुहागिनी होइ के, व्यंजन विविध बनाए जू॥
भाव के भात स्नेह के फुलका, दया दाल ले आए जू।
सील के साक सन्तोष अथाने, बरा विवेक बनाए जू॥ ५ ॥
ज्ञान की कढ़ी हया की हर्दी, हर्ष की हींग लगाए जू।
नेह को लोन धर्म की धनिया, मिर्चा मर्म मिलाए जू॥ ६ ॥
जिकर फुलौरी ता बिच सोहे, पापर फिकर सरसाए जू।
लालच दूध लोभ की मिश्री, ममता सीरा कराए जू॥ ७ ॥
दृढ़ धीरज पकवान मिठाई, मन के थाल सजाए जू।
होके दीन अधीन आतमा, अति रुचि सो अरुगाए जू॥ ८ ॥
बुद्धि के नीर भक्ति की बीड़ी, ले अनुराग पकाए जू।
विरहा कर-कर अर्ज सुनायो, सुमिरन बिजना डुलाए जू॥ ९
दास गोपाल आस कर साची, उर अन्तर पधराए जू।

Scanned by CamScanner

अन्तर्ध्यान वाणी (राग श्री)

सैयां हम धाम चले ॥ टेक॥

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन॥ १ ॥
सुध मुहूरत ले कूच किया, साइत देखी अति सारी।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी ॥ २
कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए।
पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रह्यो न जाए॥ ३ ॥
हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार॥ ४ ॥
नेक बसे हम ब्रज में, नेक बसे रास माहें।
आगे तो धाम आइया, तब तो आंखें खुल जाए॥ ५ ॥
साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक।
तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक॥ ६ ॥
पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम।
तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम॥ ७ ॥
जो न आओ सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन।
हम तो चले धाम को, तुम रहियो माहें करन॥ ८ ॥
हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड।
विरह उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड॥ ९ ॥
मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम॥ १० ॥

Scanned by CamScanner

कई किताबें करी साथ कारने, सो भी गाईं जगावन।
ए सुनके जो न दौड़िया, जिमी ताबा होसी तिन॥ ११॥

कई लोभें लिए लज्या लिए, कई लिए अहंकार।
यों छलें पीछे कई पटके, जो केहेते हम सिरदार॥ १२॥

विखे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर।
जो एक साइत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े माहें करन अंधेर॥

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग।
हम पीछे फेर न देखहीं, पिउसों करें रस रंग॥ १४॥

साथ होवे जो धामको, सो भूले नहीं अवसर।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर॥ १५॥

महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन।
परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन॥ १६॥

रागश्री

अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार।
एक खिनकी बिलम न कीजिए, जाए घरों करें करार॥ १॥

साथ देखो ए अवसर, वासना करो पेहेचान।
आए पोहोंचे बृज में, याद करो निसान॥ २॥

धनिएं देखाया नजरों, सुरतां दैयां फिराए।
अब पैठे हम रास में, उछरंग हिरदें चढ़ आए॥ ३॥

जाग्रत बुध हिरदें आई, अब रहे ना सकें एक खिन।
सुरत टूटी नासूत से, पोहोंची सुरत वतन॥ ४॥

चिन्हार भई सब साथ में, आई धामकी खुसबोए।
प्रेम उपज्या मूल का, सुपन रेहेना क्यों होए॥ ५॥

Scanned by CamScanner

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए।
जागे पीछे झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए॥ ६॥
देख तैयारी साथ की, ओ समया रह्या न हाथ।
अवसर नया उदे हुआ, उमंगियो सब साथ॥ ७॥
क्यों रहें सुरतें पकड़ी, एक दूजे के आगे होए।
दौड़ा दौड़ ऐसी हुई, पीछे रहे न कोए॥ ८॥
कई हुती देस परदेस में, ए बातें सुनियां तिन।
तिनकी सुरतें इत बांधियां, तित रहे ना सकें एक खिन॥ ९
परदेसें साथ पसर्‍यो हुतो, तित सबे पड्‍यो सोर।
यों ठौर ठौर रंग फैलिया, हुआ महंमदी दौर॥ १०॥
पीछला साथ आए मिलसी, पर अगले करें उतावल।
केताक साथ विचार नीका, सो जानें चलें सब मिल॥ ११
इन बिध सोर हुआ साथ में, ठौर ठौर पड़ी पुकार।
एक आए एक आवत हैं, एक होत हैं तैयार॥ १२॥
ऐसा समया इत हुआ, आए पोहोंचे इन मजल।
कोई कोई लाभ जो लेवहीं, जिन जाग देखाया चल॥ १३॥
सुध बुध आई साथ में, सुरता फिरी सबन।
कोई आगे पीछे अव्वल, सबे हुए चेतन॥ १४॥
कोई कोई पीछे रेहे गई, तिनकी सुरत रही हम माहें।
ढील करी ज्यों स्वांतसियों, आए अंग पोहोंचे नाहें॥ १५॥
कहें महामत परीछा तिनकी, जो पेहेलें हुए निरमल।
छूटे विकार सब अंग के, आए पोहोंचे इस्क अव्वल॥ १६॥

Scanned by CamScanner

राग श्री

अब हम चले धाम को, साथ अपना ले।
लिख्या कौल फुरमान में, आए पोहोंच्या ए॥ १॥
सखी हम तो हमारे घर चले, तुम हूजो हुसियार।
सुरता आगे चल गई, हम पीठ दई संसार॥ २॥
हममें पीछे कोई ना रहे, और रहो सो रहो।
गुन अवगुन सबके माफ किए,जिन जो भावे सो कहो॥ ३॥
अब हम रह्यो न जावहीं, मूल मिलावे बिन।
हिरदें चढ़ चढ़ आवहीं, संसार लगत अगिन॥ ४॥
सोई बस्तर सोई भूषन, सोई सेज्या सिनगार।
सोई मेवा मिठाइयां, अलेखें अपार॥ ५॥
सोई धनी सोई वतन, सोई मेरो सुंदरसाथ।
सोई विलास अब देखिए, दोरी खैंची उनके हाथ॥ ६॥
सोई चौक गलियां मंदिर, सोई थंभ दिवालें द्वार।
सोई कमाड़ सोई सीढ़ियां, झलकारों झलकार॥ ७॥
सोई मोहोल सोई मालिए, सोई छज्जे रोसन।
सोई मिलावे साथ के, सोई बोलें मीठे वचन॥ ८॥
सोई झरोखे धाम के, जित झांकत हम तुम।
सो क्यों ना देखो नजरों, बुलाइयां खसम॥ ९॥
सोई खेलना सोई हंसना, सोई रस रंग के मिलाप।
जो होवे इन साथ का, सो याद करो अपना आप॥ १०॥

Scanned by CamScanner

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम।
हंसना खेलना बोलना, संग स्यामाजी स्याम॥ ११ ॥
सोई बातें प्रेम की, सोई सुख सनेह।
सुख अखंड को भूलके, क्यों रहे झूठी देह॥ १२ ॥
सोई सेज्या सोई मंदिर, सोई पिउजी को विलास।
सोई मुख के मरकलड़े, छूटी अंग की आस॥ १३ ॥
सोई रसीले रंग भरे, निरखें नेत्र चढ़ाए।
सुंदर मुख सनकूल की, भर भर अमृत पिलाए॥ १४ ॥
सोई कटाछे स्यामकी, सींचत सुरत चलाए।
बंके नैन मरोर के, दृष्टें दृष्ट मिलाए॥ १५ ॥
कहा कहूं सुख साथ को, देखें भृकुटी भौंह चढ़ाए।
सुखकारी सीतल सदा, सुख कहा केहेसी जुबांए॥ १६ ॥
सुच्छम सरूप ने सुंदरता, उनमद सारे अंग।
बराबर एकै भांत के, और कई विध के रस रंग॥ १७ ॥
एक दूजे के चित्त पर, चाल चले माहों माहें।
पात्र प्रेम प्रीत के, हांस विनोद बिना कछू नांहें॥ १८ ॥
बोए नेक आवे इन घर की, तो अंग निकसे आहे।
सो तबहीं ततखिन में, पिउजी पें पोहोंचाए॥ १९ ॥
याद करो जो मांगिया, धनिएं खेल देखाया कर हेत।
महामत कहें मेहेबूब के, सुख में हो सावचेत॥ २० ॥

Scanned by CamScanner

मेरे मीठे बोले साथ जी (राग श्री)

मेरे मीठे बोले साथ जी, हुआ तुमारा काम। प्रेमै में मगन होइयो,
खुल्या दरवाजा धाम॥ सखी री धाम जईए॥ १ ॥ टेक॥
दौड़ सको सो दौड़ियो, आए पोहोंच्या अवसर।
फुरमानमें फुरमाइया, आया सो आखर॥ २ ॥
बरनन करते जिनको, धनी केहेते सोई धाम।
सेवा सुरत संभारियो, करना एही काम॥ ३ ॥
बन विसेखे देखिए, माहें खेलन के कई ठाम।
पसु पंखी खेलें बोलें सुन्दर, सो मैं केते लेऊं नाम॥ ४ ॥
स्याम स्यामाजी सुन्दर, देखो करके उलास।
मनके मनोरथ पूरने, तुम रंग भर कीजो विलास॥ ५ ॥
इस्क आयो पिउ को, प्रेम सनेही सुध।
विविध विलास जो देखिए, आई जागनी बुध॥ ६ ॥
आनंद वतनी आइयो, लीजो उमंग कर।
हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर॥ ७ ॥
सुख अखंड जो धाम को, सो तो अपनों अलेखें।
निपट आयो निकट, जो आंखां खोलके देखे॥ ८ ॥
अंग अनुभवी असल के, सुखकारी सनेह।
अरस परस सबमें भया, कछु प्रेमें पलटी देह॥ ९ ॥
मंगल गाइए दुलहे के, आयो समें स्यामा वर स्याम।
नैनों भर भर निरखिए, विलसिए रंग रस काम॥ १० ॥
धामके मोहोलों सामग्री, माहें सुखकारी कई बिध।
अंदर आंखें खोलिए, आई है निज निध॥ ११ ॥

Scanned by CamScanner

विलास विसेखें उपज्या, अंदर कियो विचार।
अनुभव अंगे आइया, याद आए आधार॥ १२॥

दरदी विरहा के भीगल, जानों दूरथें आए विदेसी।
घर उठ बैठे पल में, रामत देखाई ऐसी॥ १३॥

उठके नहाइए जमुनाजी, कीजे सकल सिनगार।
साथ सनमंधी मिलके, खेलिए संग भरतार॥ १४॥

महामत कहे मलपतियां, आओ निज वतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन॥ १५॥

कारी कामरी रे (रागश्री)

कारी कामरी रे, मोकों प्यारी लागी तूं।
सब सिनगार को सोभा देवे, मेरा दिल बांध्या तुझसों॥ १॥

तूं नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे॥ २॥

कामरी पेहेरी बृजवधू, और सुंदरवर स्याम।
भी पेहेरी महंमद ने, और पेहेरी इमाम॥ ३॥

मोल नहीं इन कामरी को, याको ले न सके कोए।
मोमन कहे सो लेवहीं, जो रूह अर्स की होए॥ ४॥

गोवरधन को ढांपिया, एक बूंद न हुआ दखल।
आग लोहा पानी प्रले के, सोस लिया सब जल॥ ५॥

अहीर किए धंन धंन, और आरब कुरेस।
मारू भी धंन धंन हुए, है सोई हमारा भेस॥ ६॥

Scanned by CamScanner

रूहअल्ला पेहेरी अंदर, हुई नहीं जाहेर।
दुनियां हिरदे अंधली, सो देखे नजर बाहेर॥ ७॥
पट पेहेर खाए चीकना, हेंम जवेर सिनगार।
हक लज्जत आई मोमिनों, तिन दुनी करी मुरदार॥ ८॥
सोहाग दिया साहेब ने, कामरी सोहागिन।
आगूं बोले बुजरग, सराही साधू जन॥ ९॥
हमारे ताले मिने, लिखे अल्ला कलाम।
महामत कहे सब दुनी को, प्यारी होसी तमाम॥ १०॥

शब्द अन्तर्ध्यान के (श्रीजी साहेबजी)

मारो राज रसिक चितवत नहियाँ॥ टेक॥ सखीरी कैसे के मोहे रेन कटे, दिन जात रहो मुहियां चुहियां॥ १॥ सखीरी कहा कहों पिछले सुख की, कहो जात कछू मोपे नहियां। सखीरी जो घरमें तो संग रहों, वन वींथन में जहियां तहियां॥ २॥ सखीरी कुंज कछारन बागन में, गहि संग फिरों वहियां गहियां। सखीरी कैसे के मोहे नीको लगे, कबहूँ जो न्यारी रही नहिया॥ ३॥ सखीरी क्रीट साकुंडल माल लसे, सब साथ बसें हियड़े महियाँ। सखीरी खेंच साकुंडल फेंट गही, हठ छोड़ हसे वतियां कहियां॥ ४॥ सखीरी या छव को सुख अंत न गयो, जो रहो जिनको तिनहूँ महियाँ॥ ५॥

शब्द

धनी रंग लागा सोई लागा ॥ टेक॥
और रंग मेरे मनहीं न भावे, लागा धनी रंग प्यारा।
ऐसे धनी का रंग प्यारा, जैसे मोतिन विच धागा॥

Scanned by CamScanner

हंसा की चाल हंसा पहिचानें, मरम न जाने कागा।
जो निजनाम की छाप पड़त है, सोवत से उठ जागा॥
जो निजनाम की छाप न जानै, चेतत नहीं अभागा।
छत्रसाल भजो नाम धनी को, धनी के चरन चित लागा।

शब्द

जिन पिया हे प्याला प्रेम का॥ टेक॥

काहे की कूड़ी काहे का सोटा, काहे का छन्ना नेम का।
तन की कूड़ी मन का सोटा, उत्तम छन्ना नेम का।
निशदिन पियत रहत मतवाला, तिमिर उड़ गया नैन का।
दया दुलीचा दिया बैठका, अलख पक्ष गुरू ज्ञान का॥
छत्रसाल भजो नाम धनी का, घर पाया सुख चैन का।

शब्द

यह तिथ तीज भए पीऊ न्यारे री॥ टेक॥

संवत सत्रह से इक्यावन, सावन बिछुरे प्यारे री।
शुक्रवार पद को हद छोड़ी, बेहद पार सिधारे री॥ १॥
अब जंजाल जगत जालिम में, नहीं देखों दृग तारे री।
अर्जुन सिंघ ध्रक प्रानन को, विछुरन सुनत हमारे री॥ २॥

शब्द

यह तिथ तीज भये पिऊ न्यारे री॥ टेक॥

शुक्रवार वद कों हद छोड़ी, वान विरह के मारे री।
सावन मास निरास कियों सजनी, जामें बिछुरे प्यारे री॥ १॥
संवत सत्रह से इक्यावन, दोषी ने दुख में डारे री।
अर्जुन सिंघ अनाथ नाथ को, कब देखो दृग तारे री॥ २॥

Scanned by CamScanner

श्री बाई जू राज धामगमन पर

क्यों दियो रे बिछोहा दुलहा, छूटी हक खिलवत।
हम अरवाहें जो अरस की, फेर कब देखें हक सूरत॥ १॥
बेसक इलम दिया अपना, आप आए के इत।
ना रह्या धोखा जरा हमको, देखाए दई निसबत॥ २॥
खेल देखाए उरझाए हमको, सो फेर दिया छुड़ाए।
ना तो ऐसा फरेब, कबूं किन छोड्या न जाए॥ ३॥
हम वास्ते रसूल भेजिया, और भेज्या अपना फुरमान।
सो इत काहूं न खोलिया, मिली चौदे तबक की जहान॥ ४॥
सो कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, दई महंमद हकी सूरत।
कह्या आखर आवसी अरस रूहें, खोलो तिन बीच मारफत॥
खिलवत संदेसे दिए रूह अल्ला, जो मेहेर कर केहेलाए।
किन खोले न द्वार अरस के, मोको सब विध दई समझाए॥ ६॥
मुझे संदेसे खिलवत के, सब रूहअल्ला दई सिखाए।
बेसक इलम अरस का, मोहे सब विध दई बताए॥ ७॥
छूटी रूहों को अरस की, मूल मेले की लज्जत।
इस्क न आवे क्यों हमको, जाकी नूर जमाल सों निसबत॥ ८
फेर दई हकें मेहेर कर, मूल मेले की लज्जत।
क्यों न जागें रूहें ए सुनके, जाकी इन हकसों निसबत॥ ९॥
बेसक इलम रूहों पाइया, अजूं नजर क्यों ना खोलत।
क्यों न आवे हमको इस्क, जाकी अरस अजीम निसबत॥ १०॥
पेहेचान हुई सब विध की, पाई हक मारफत।
क्यों न आवे इस्क हमको, जाकी नूरजमाल सों निसबत॥ ११

Scanned by CamScanner

हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत।
ए क्या हकको खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत॥ १२॥
जो सुख अरस अजीम के, सो देखाए दुनी में इत।
भेज्या इलम बका अपना, वह कहां गई निसबत॥ १३॥
बेसुध चौदे तबकों, तामें हमको बेसक किए इत।
सुख अरसों के सब दिए, कर ऐसी हक निसबत॥ १४॥
हम पर अरस में हंसने, माया देखाई तीन बखत।
इस्क हमारा देखने, वह कहां गई निसबत॥ १५॥
चौदे तबक आड़े देयके, सो नजीक छिपे क्यों कित।
निपट सेहेरग से नजीक, वह कहां गई निसबत॥ १६॥
किन तरफ हमारे तुमहो, किन तरफ तुमारे हम।
बीच भयो क्यों ब्रह्मांड, क्यों हम पकड़ बैठे कदम॥ १७॥
पेहेले क्यों फरामोसी देयके, रूहें डारी माहें छल।
पीछे ताला कुंजी दोऊ दिए, दई खोलने की कल॥ १८॥
किन विध दई तुम बेसकी, सक रही न किन सब्द।
दुनियां चौदे तबक में, सुध परी न बांधी हद॥ १९॥
हमको सक ना हदमें, ना कुछ बेहद सक।
सक रही न पार बेहद की, दिया बेसक इलम हक॥ २०॥
ए विध रूहें देखी जिनों, सो केहेनी में आवत नाहें।
कछु वास्ते हम रूहनके, हुकम कहावत जुबांए॥ २१॥
ए हक की मैं हुकम ले, कै विध बका द्वार खोलत।
याद देने अरस अजीम में, होत सब वास्ते उमत॥ २२॥
हमतो इत आए नहीं, अरस एक दम छोड़या न जाए।
जागे पीछे दुलहा, हम देख्या खेल बनाए॥ २३॥

Scanned by CamScanner

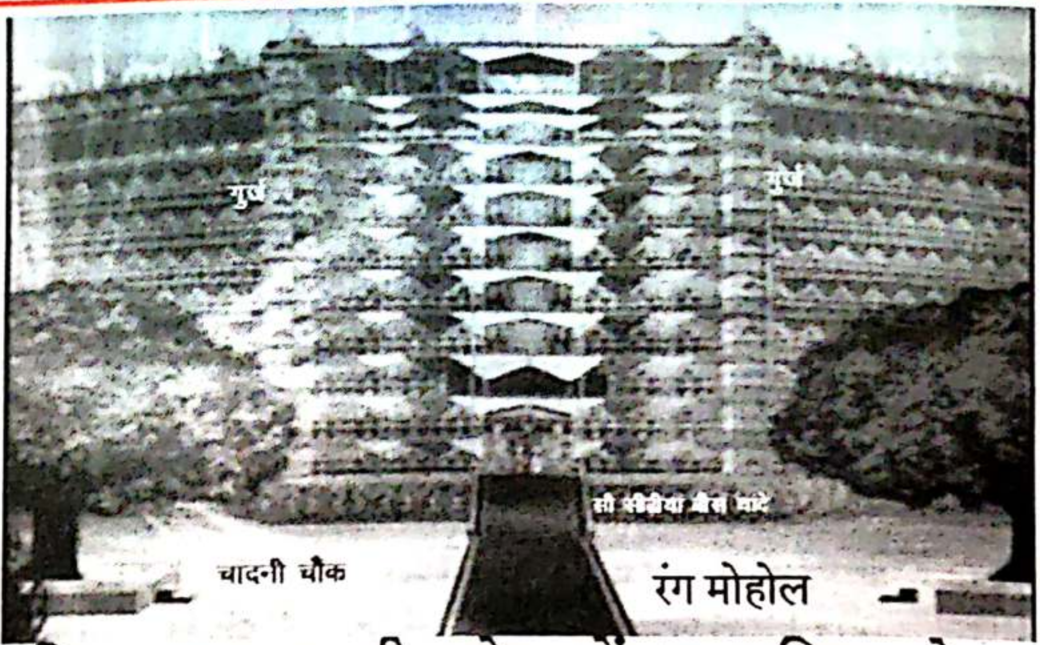

अरस निसबत हक की, खेल में आए बिना लेत सुख।
हिकमत देखन हक हुकम की, कही न जाए या मुख ॥ २४ ॥

हुकमें मांग्या हुकम पें, सो हुकमैं देवनहार।
सो हुकम फैल्या सबमें हकका, सो हकै खबरदार ॥ २५ ॥

बिना हुकम हक के जरा नहीं, कहे सुने देखे हुकम।
किल्ली इलम हुकमें सब दई, किया तेहेकीक हुकमें खसम ॥

सुख खिलवत इन मुख क्यों कहूं, कह्या न जाए जुबांए।
ए बातें आसिक मासूक की, रूहें जानें अरस दिल माहें ॥ २७

जो सुख खोलूं अरस के, माहें मिलावे इत।
निकस जाए मेरी उमर, केहे न सको खिनकी सिफत ॥ २८ ॥

हम रूहों को चेतन किए, खोली रूह अल्ला हकीकत।
ए खिलवत के सुख कहां गए, हम कब पावसी ए न्यामत ॥

हक खिलवत सुख मोमनों, लिखी फुरमान में मारफत।
कहां गए हमारे ए सुख, हम कब पावें ए बरकत ॥ ३० ॥

रूहें लगाइयां अपने सरूप में, और भी अपनी सिफत।
दिल अरस मोमन लीजियो, कहें रूह मता हुकमें महामत ॥

Scanned by CamScanner

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इसकें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए॥ १ ॥
हक सूरत बस्तर भूखन, बीच बका अर्स के।
तिनको निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए॥ २ ॥
जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले।
अर्स चीज कही सो मेहेर से,पर बल इन अंग अकल के ॥
जो वचन जुबा केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोंचत।
पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत ॥ ४ ॥
किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका ॥ ५ ॥
जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जानें एह सनंध ॥ ६ ॥
सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना।
कोई बल करो हक हुकमें, पर अर्सें क्यों पोहोंचे सुपना ॥ ७ ॥
नींद उड़े रेहे ना सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक॥ ८ ॥
पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस ॥ ९ ॥
हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए॥ १० ॥

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत॥ ११॥
ए हक बातन की बारीकियां, सो हक के दिए आवत।
ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत॥ १२॥
अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए।
ए जाने अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए॥ १३॥
ए जो अर्स बारीकियां, अर्स सहूरें रूह जानत।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत॥ १४॥
जिन जो देख्या जागते, सो देखे माहें सुपन।
कानों सुन्या सो भी देखत, याके साथ तो हक इजन॥ १५॥
रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे।
रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए॥ १६॥
आतम तो फरामोस में, भई आड़ी नींद हुकम।
सो फेर खड़ी तब होवहीं,रूह दिल याद आवे खसम॥ १७॥
सो साख मोमिन एही देवहीं, यों बूझमें भी आवत।
अनभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत॥ १८॥
मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनभव पर हुकम।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें,कछू ना बिना हुकम खसम॥ १९
रूह तेती जागी जानियो, जेता दिलमें चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग॥ २०॥
ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सो क्यों ना करे उपाए।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए॥ २१॥

Scanned by CamScanner

इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक॥ २२॥
मोहे दिलमें हुकमें यों कह्या, जो दिल में आवे हक मुख।
ते खड़ा होए मुख रूह का, हकसों होए सनमुख॥ २३॥
अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल।
जो अंग आया हक का दिलमें, उठे रूह अंग उसी मिसाल॥
जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन॥ २५॥
जो हक निलाट आवे दिलमें, और दिलमें आवे श्रवन।
दोऊ अंग खड़े होए रूह के, जो होवें रूह मोमिन॥ २६॥
भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस॥ २७॥
ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होएं बेसक॥ २८॥
पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए।
ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हकें बांधी दिल ल्याए॥ २९॥
अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे माहें सुमार॥ ३०॥
हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिलमें रहे दायम।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम॥ ३१॥
जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहें होस॥

Scanned by CamScanner

कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस।
ए दिल में जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस ॥ ३३ ॥
बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ।
हक के अंग हिरदे आए,तब रूह खड़ी हुई हक साथ ॥ ३४ ॥
पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक।
हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख न होए रूह चूक ॥ ३५ ॥
नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम।
सोई नख अंगुरियां पांउं रूह के, खड़े होत माहें दम ॥ ३६ ॥
जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक अंग सब हिरदे आए,तब रूह जागे अंग परवान ॥ ३७ ॥
मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध।
हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध ॥ ३८ ॥
क्यों कहूँ जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन।
निपट सोभित मिहीं बेलियां,झांई उठत अति रोसन ॥ ३९ ॥
एक सेत रंग जामा कह्या, माहें जवेर जुगत कई रंग।
इन ज़ुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग ॥ ४० ॥
बीच पटुका कस्या कमरे, रंग कई बिध छेड़े किनार।
बेली नकस फूल केते कहूं,अवकास भर्‍यो झलकार ॥ ४१ ॥
एक झलकार मुख केहेत हों, माहें कई सलूकी सुखदाए।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए ॥ ४२ ॥
जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत ॥ ४३ ॥

Scanned by CamScanner

बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान॥ ४४॥
कटाव कोतकी कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के।
रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए॥ ४५॥
बाहें चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत।
निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित॥ ४६॥
आए बस्तर हिरदे हकके, रूह अपने पेहेने बनाए।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए॥ ४७॥
पांच नंग माहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर॥ ४८॥
ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए॥ ४९॥
सात नंग माहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग।
चढ़ती जोत आकास में, करत माहों माहें जंग॥ ५०॥
जो रस कलंगी दुगदुगी, सोई पाग को रस।
अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अरस॥ ५१॥
ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान॥ ५२॥
दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े कंचन बीच लाल।
साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल॥ ५३॥
हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल॥ ५४॥

Scanned by CamScanner

मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल।
ए रूह द्रष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल॥ ५५॥
कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा रेज॥ ५६॥
हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग।
कई लेहेरें माहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग॥ ५७॥
एक एक नंग में कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार।
तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार॥ ५८॥
जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार॥ ५९॥
ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखों अर्स सहूर।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखों रूह की आंखों जहूर॥ ६०॥
भूखन हक श्रवन के, और हक कंठ कई हार।
सोई कंठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार॥ ६१॥
सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर॥ ६२॥
बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जेवर कंचन।
नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन॥ ६३॥
मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत।
अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत॥ ६४॥
हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक।
आतम उठ खड़ी तब होवही, पेहेले जीव होए भूक भूक॥

Scanned by CamScanner

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार॥ ६६ ॥
चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठें हजार।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार॥ ६७ ॥
बस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर॥ ६८ ॥
सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान॥ ६९ ॥
जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल॥ ७० ॥
बस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए॥ ७१ ॥
जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान॥ ७२ ॥
हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल माहें।
तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्यांहे॥ ७३ ॥
जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम॥ ७४ ॥
महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उदम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए॥ ७५ ॥

Scanned by CamScanner

।। विलाप करे हे राग श्री रामग्री ।।

ओहि ओहि करती फिरों, ओर करों हाए हाए ।
पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए ।। १ ।।
फिट फिट रे तूं भूंडा सबद, क्यों आई मुख बान ।
वाए ना लगी तिन तरफ की, निकस ना गए क्यों प्रान ।। २ ।।
तूं रे जुबां ऐसी क्यों वली, कहेते एह वचन ।
खेंच न काढ़ी तोको मूल थें, जहां थें तूं उतपन ।। ३ ।।
पिउजी रे सिधावते, वाचा क्यों रे रही तूं अंग ।
उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन घाए मुख भंग ।। ४ ।।
तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पिउ के वचन ।
ए रे लवा तुझे सुनते, लगी ना कानों अगन ।। ५ ।।
चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगन ना आई ।
सुनते अगन झाला मिने, दोड के क्यों न झंपाई ।। ६ ।।
नीच नेंन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोहू ।
पिउ लोकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवे सोउ ।। ७ ।।
रोवे लोहू आंखों आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे ।
देखत ही पिउ चलना, निकस न पड़े तारे ।। ८ ।।
क्यों ना आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल ।
पिउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल ।। ९ ।।
गुन अंग इंद्रियों की, पिउ बांधते गोली प्रेम काम ।
पेहेचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम ।। १० ।।

Scanned by CamScanner

गुन अंग इंद्रीआं आकार, आग परो तुम पर ।
प्रेम न उपज्या तुमको, चलते धामधनी घर ।। ११ ।।
एती जोगबाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या ।
अब जलो रे उड़ो खाखड़े, इन समें गल पिघल न गया ।। १२ ।।
अंग तोहे व्रह अगन की, न लगी कलेजे झाल ।
ए व्रहा ले अंग खड़ा रह्या, फिट फिट करम चंडाल ।। १३ ।।
हाथ पांव सब अंग के, सब उजड़ न गए संधान ।
अंग रोम रोम जुदे न हुए, अस्त होते तेज भान ।। १४ ।।
ए रे निमूना भान का, मेरे पिउजी को दिआ न जाए ।
ए जोत धनीरे इन भांत की, कोट बह्मांड में न समाए ।। १५ ।।
ए जोत पकरी ना रहे, चली इंड फोड निराकार ।
सदासिव महाविस्नु निरंजन, सब प्रक्रत को किओ निरवार ।। १६ ।।
सबदातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसन ।
अष्यर प्रकास जो करके, जाए पोहोंची धाम के वन ।। १७ ।।
सब ग्रदवाए वन दिखाए के, किए धाम मंदर प्रकास ।
ब्रह्मानंद ब्रह्मसिस्ट में, प्रगट कियो विलास ।। १८ ।।
हारे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पिउजी की ब्रहिन ।
पीछे तो जाहिर होएसी, देसी अखंड सुख सबन ।। १९ ।।
ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां क्यों रही खाल ।
रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल ।। २० ।।

Scanned by CamScanner

हडी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़ के अंग अंधेर ।
धनी का बिछोडा क्यों सह्या, लोहू ना सूका तिन बेर ।। २१ ।।
अंग मेरे रे आकार के, सातों धात क्यों ना गई सूक ।
अहरन घन के बीच में, क्यों ना हुई भूक भूक ।। २२ ।।
नेंन नासका मुख श्रवन, भूंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही ।
तोड़ इनों को जुदे जुदे, तें क्यों उजड़ ना गई ।। २३ ।।
ए रे पिउजी सिधावते, क्यों ना लगे कलेजे घाए ।
काल मेरा कहां चल गया, क्यों ना काढी खेंच अरवाए ।। २४ ।।
नेहेचल निध रे बिछड़ते, कहां गई वह बुध ।
धिक धिक रे चंडालनी, ऐसी क्यों हुई असुध ।। २५ ।।
ग्यान मेरा तिन समें, क्यों ना किया वतन उजास ।
तिन समें दगा दिआ मुझको, में रही तेरे विसवास ।। २६ ।।
गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुसमन ।
जिन समें हुआ बिछोडा, मेरे क्यों न हुए सजन ।। २७ ।।
साहिब मेरे चलते, मेरी सकल सेन्या अंग माहिं ।
सो काम न आए आतम के, अवसर ना ऐसो काहि ।। २८ ।।
फिट फिट रे सेन्या तुमको, क्या न हुती तुमे पेहेचान ।
जाते जीव का जीवन, तुम क्यों ले ना निकसे प्रान ।। २९ ।।
जीवन चलते जीवरा, क्यों छोडा तें संग ।
अब कहूं रे तोहे करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग ।। ३० ।।

नीच करम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई न करे ।
श्री धनी रे धाम चले पीछे, इन जिमी में देह कोन धरे ।। ३१ ।।
कोन विध कहूं रे तुझको, कुकरमी करम चंडाल ।
जो अंग न उठी अगन, तूं क्यों न झंपाया झाल ।। ३२ ।।
झांप न खाई तूं भेरव, क्यों कायर हुआ अवसर ।
तिल तिल तन न तांछया, जाते ए सुख सागर ।। ३३ ।।
गुन सागर धनी चलते, क्यों किआ ऐसा हाल ।
बजरलेपी रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूका चंडाल ।। ३४ ।।
दुस्ट अधरमी केता कहूं, हुआ बेमुख देते पीठ ।
ऐसा समे रे गमाइया, निपट निठुर जीवरा ढीठ ।। ३५ ।।
सबदातीत के पार के पार, तिन पार जोत का था तेज ।
यासूं था तेरा सनमंध, पर कछुए न राष्या हेज ।। ३६ ।।
तुझमें भी तेज हे उन जोत का, वाही कमल की बास ।
वह तेज फिरते रे तूं तेज, क्यों न पोहोंचा जोत प्रकास ।। ३७ ।।
अब कहां रे जाउं में क्या करूं, ए बानी धनी ढूंढों कित ।
पिउ पोहोंचाए में पीछे फिरी, करने विलाप रही इत ।। ३८ ।।
अब सुनेगी कहां वानी ए तू, मेरे धाम धनी के वचन ।
बरनन करते जो श्रीमुख, सो अब काहूं न पाइए ठोर किन ।। ३९ ।।
अब तारतम कोन केहेसी, कोन विचार कर देसी हेत ।
चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोउ ना देत ।। ४० ।।

Scanned by CamScanner

ब्रजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात ।
पिउ बिना विवेक कोन केहेसी, हुआ प्रतिबिंब तीसरा परभात ।। ४१ ।।
भेख बागे का बेवरा, रह्या अग्यारे दिन ।
सात गोकुल चार मथुरा, कोन केहेसी विवेक वचन ।। ४२ ।।
उतम विचार उतम बंधेज, ओर कै विध के द्रस्टांत ।
इन धनी बिना ए दया कर, कोन देसी कर खांत ।। ४३ ।।
पन बांध बरस चौदे लो, सास्त्रन को अरथ कोन लेसी ।
सो ए प्रकास इन पिउ बिना, एक साइत में समझाए कोन देसी ।। ४४ ।।
दूध पानी रे जुदा कर, कोन कर देसी रोसन ।
मोहजल गेहेरे में डूबते, कोन काढे या धनी बिन ।। ४५ ।।
अठोतर सो पख का, कोन काढ देसी सार ।
सुख अष्यर अष्यरातीत के, कोन देसी बिना आधार ।। ४६ ।।
नरसैयां कबीर जाटीए के, ओर कै साधू सास्त्र वचन ।
काढ दे सार कोन इनको, करके एह मथन ।। ४७ ।।
महाप्रले लों जो कोई, सास्त्र पढकर करे अभ्यास ।
बहु विध लहे विवेकसों, कर मन द्रढ विसवास ।। ४८ ।।
तो भी न आवे रे विवेक, ना कछुए ए मुख बान ।
सो संग धनी के एक खिन में, कर देवें सब पेहेचान ।। ४९ ।।
अब अबूझ टाल सुबुध देए के, कोन करसी चतुर विचिष्यन ।
नेहेचल निध धनी धाम की, सोए न पाइए काहू चौदे भवन ।। ५० ।।

Scanned by CamScanner

दूजा कोन देसी लर के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान ।
साथ धाम का जान के, कोन केहेसी हेत चित आन ।। ५१ ।।
नींद उड़ाए जगाए के, कोन देसी घर आप पेहेचान ।
खेल दिखाए आप देह धर, कोन काढ़सी होए गलतान ।। ५२ ।।
त्रलोकी त्रगुन माया मिने, हम बेठे थे रचके घर ।
सो नेहेचल धाम में बेठाए के, याको कोन दिखावे खेल कर ।। ५३ ।।
अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचन तारतम ।
या सुने बिना हम क्यों गलसी, बिना बानी इन खसम ।। ५४ ।।
ओर घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम ।
तीन दिवाल आड़ी हुई, सो उड़े ना बिना खसम ।। ५५ ।।
पांच पचीस जो उलटे, होए बेठे दुसमन ।
नेहेचल घर पार में बेठाए के, कोन कर देवे सीधे सजन ।। ५६ ।।
वेरी मार के कोन जिवावहीं, उलटे भान के करे सनमुख ।
या दुख में इन धनी बिना, कोन देवे सांचे सुख ।। ५७ ।।
बीच पट आतम परआतमा, कोन उड़ाए करे संग ।
इन दुलहे बिना दुलहिनसूं, क्यों होसी रस रंग ।। ५८ ।।
मोहजल पूर अंधेर में, जित काहू ना किसी की गम ।
तहां थें काढ़ देवे सुख नेहेचल, ऐसा कोन बिना खसम ।। ५९ ।।
इन भवसागर के जीवों में, वासना ढूंढ़ काढे छुड़ाए फंद ।
आतम अपनी पेहेचान के, कोन पावे आनंद ।। ६० ।।
अब कोन रे करसी ऐसा बरनन, नेहेचल ब्रज रास धाम ।
ए कोन सुख सैयों को देए के, कोन मिलावे स्यामाजी स्याम ।। ६१ ।।

Scanned by CamScanner

आतम को रे जगाए के, कोन खोले आतम के श्रवन ।
अंतर पट उड़ाए के, कोन केहेसी मूल वचन ।। ६२ ।।
फोड़ ब्रह्मांड आड़े आवरन, ताए पोहोंचावे अष्यर पार ।
सुख अखंड अष्यरातीत को, कोन देवे बिना इन भरतार ।। ६३ ।।
उपर बाड़े वाट धाम की, कोन बतावे ओर ।
इन भेदी बिना भोम क्यों छूटहीं, क्यों पोहोंचिए अखंड ठोर ।। ६४ ।।
साथ अजान अबूझ को, कोन लेसी सुधार ।
वासना सगाई पेहेचान के, कोन खोल देवे नेहेचल द्वार ।। ६५ ।।
सत सागर सुतेज में, बतावत नेहेचल धन ।
सो पूर लेहेरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन ।। ६६ ।।
ए धन मेरे धनीअ का, आया था मुझ कारन ।
सो धन खोया में नींद में, धनी देत कर कर जतन ।। ६७ ।।
ए धन मेरे धनी का जाते, तूं देख के केसे रही ।
फिट फिट भूंडी पापनी, तें ए पुकार क्यों सही ।। ६८ ।।
फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ ।
कर दई धनी धाम पेहेचान, तो तूं क्यों न चली पिउ साथ ।। ६९ ।।
संग पिउ के न चली, क्यों रही पिउसों बिछुर ।
अजहूं न आह तेरी उड़ी, याद कर अवसर ।। ७० ।।
त्राह त्राह करूँ रे सजनी, पिउजी दियो मोहे छेह ।
जल बल ब्रहा झाल में, भसम न हुए जीव देह ।। ७१ ।।

Scanned by CamScanner

कै विध कह्या मोहे पिउजी, में कछू न किओ सनेह ।
पर अब तो बेठी धन खोए के, हाथ आया था जेह ।। ७२ ।।
धनिऐं तो केहे केहे दिखाया, कर कर मुझसों एकांत ।
पर में चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बेठी में स्वांत ।। ७३ ।।
अब सबदातीत निध धाम की, ए कोन केहेस मुख बान ।
श्री धाम के सुख की रे वीतक, कोन केहेसी वरतमान ।। ७४ ।।
उठते बेठते खेलन की, सुध कोन कहे एह सुकन ।
बन जाए न्हाए के, कोन केहेसी श्रंगार बरनन ।। ७५ ।।
वस्तर भूखन की विगत, पिउ बिना कोन लेवे ।
ए सुख अनुभव अपना, सनमंध करके कोन देवे ।। ७६ ।।
कै सुख अनुभव बन के, कै सुख सातों त्रट रे ।
सुख ताल मंदिरो मोहोलन के, कोन देसी उड़ाए अतंर पट ।।७७।।
तीसरी भोम मोहोल श्रंगार, ओर बेठके आरोग पोढ़न ।
सुखपाल बेठ बन सिधावते, कोन केहेसी पीछला पहर दिन ।।७८।।
सुख चोथी भोम निरत के, सुख पांचमी भोम पोढ़न ।
ए अनुभव सुख कोन केहेसी, कै विध विलास रेन ।। ७९ ।।
कै विध सुख तारतम के, ओर जो कहे वचन सुख मूल ।
या विध हमें कोन कहे बरनन, सनमंध होए सनकूल ।। ८० ।।
देत बिछोहा धनीधाम के, तुम क्यों न कियो एह विचार ।
हुती आसामुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार ।। ८१ ।।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १७५ ।।

Scanned by CamScanner

अब कहूं रे इस्क की बात

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद॥
ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।
ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अति रंग॥
एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक।
अब कथनी कथूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक॥
वोए वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन॥
इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन।
इस्क धनिएं बताया, इस्क बिना पिउ न पाया॥
इस्क है तित सदा अखंड, नाहीं दुनियां बीच ब्रह्मांड।
और इस्क का नहीं निमूना, दूजा उपजे न होवे जूना॥
इस्क है हमारी निसानी, बिना इस्क दुलहा मैं रानी।
इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी॥
वृथा गए एते दिन, ज़ो गए इस्क बिन।
मैं हुती पिया के चरन, मैं रेहे ना सकी सरन॥
क्यों रह्या जीव बिना जीवन, क्यों न आया हो मरन।
अंग क्यों न लागी अगिन, याद आया न मूल वतन॥
इस्क जाने सृष्ट ब्रह्म, जाके नजीक न काहूं भरम।
जब इस्क रह्या भराई, तब धाम हिरदे चढ़ आई॥
कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए॥

Scanned by CamScanner

प्रार्थना श्री गुम्मट जी मंदिर

हो, श्री प्राणनाथ जी सुमरिए।
सिंहासन के ऊपर राजे, जुगल दोऊ सरूप विराजे॥
चरण एक चौकी पर साजे, सी कहूँ शोभा॥ हो....
चोवा चन्दन कुमकुम केसर, प्रेम भरी अरपन करिए।
अबीर गुलाल पुष्प माल बहुविध,
फूल बधावी मंदिर भरिए॥ हो श्री प्राणनाथ जी ....
बिनती हमारी धनी पूरन करजो, कष्ट निवारन दुख हरजो॥
साथ ऊपर सहाय करजो,है चरन की आस॥ हो..

प्रार्थना श्री बंगला जी मंदिर

श्री प्राणनाथ जी प्रभु हमारे, मुझको तेरा आधार।
सब जग के करता धरता हो, सबके पालनहार॥ श्री....
जल थल में सब तेरी है कुदरत, कर रही चमकार।
ऋषि मुनि गावें ध्यान लगावें, कोई न पावे पार॥ श्री....
वेद पुरान कुरान किताबें, खोज थके संसार।
किनहूँ ने तेरा पार न पाया, आखिर हो गये हार॥ श्री....
ब्रह्मा विष्णु महेश न पावे, अखण्ड तेरा दरबार।
गाये गये और गाते हैं महिमा, ब्रह्ममुनि सिरदार॥ श्री....
धाम दर्शाओ साथ को सहजे, भव से लीजे तार।
निशदिन आशा एही है मन में, कीजे बेड़ा पार॥ श्री....
केवल चरणों में लीजो स्वामी, मेरे हो प्राण आधार।
'दीन' जानि प्रभु पार उतारो, दुरमति दीजे टार॥ श्री....

Scanned by CamScanner

प्रार्थना श्री सद्गुरु मंदिर

कृष्ण प्यारे से विनती हमारी, दर्शन दे देना॥ हो......
आया हूँ मैं किस कारन से, कारन बतलाना।
मैं भूला हूँ जग में आकर, मुझको चेताना॥ हो कृष्ण.....
पन्थ आपका भूल गया हूँ, मारग बतलाना।
प्रेम रूप का देकर दर्शन, चरणों में ले जाना॥
हो श्याम चरणों में विनती हमारी, दर्शन दे देना, हो श्यामा...

प्रार्थना श्री महारानी जू मंदिर

महारानी रानी, अब तो लगा दो नैया पार।
श्री राधे रानी, अब तो लगा दो नैया पार॥ टेक॥
माँगत भीख कृपा की केवल, खड़ी हूँ तुम्हारे द्वार॥ महारानी..॥
रसतन हँस मुख सुनो विनती, अपने ही दरबार॥ म.॥..
कैंहों नाहीं श्री महारानी जू किसी से, दर्शन दैयो एक बार॥..
बार बार मैं विनती करत हों, चरणों में लइयो एक बार॥
महारानी रानी, अब तो लगा दो नैया पार॥

Scanned by CamScanner